नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
बिगुल बजा आजादी का
पिकनिक का मौसम
अगस्त '९४
पांच रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

डायमण्ड कॉमिक्स में

डायनामाइट
ज्वालामुखी
और
की अपार सफलता के बाद
डायनामाइट सीरीज का आगामी अंक
डायनामाइट
ज्वालामुखी
विस्फोट
डायनामाइट सीरीज
एक्शन कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स
फन कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स
थ्रिल कॉमिक्स
डायमंड कॉमिक्स
डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
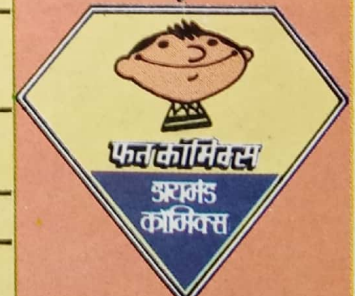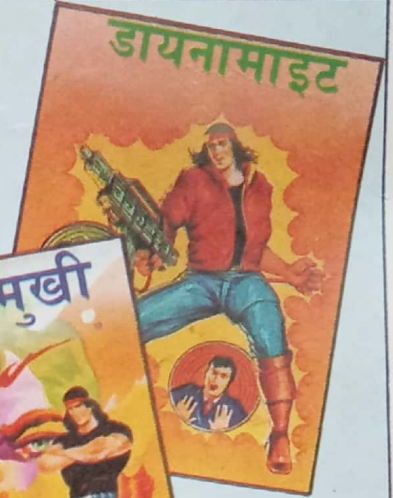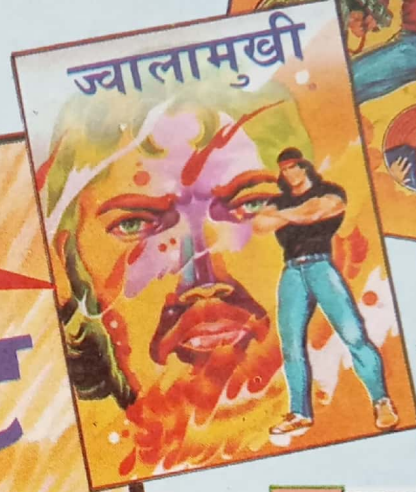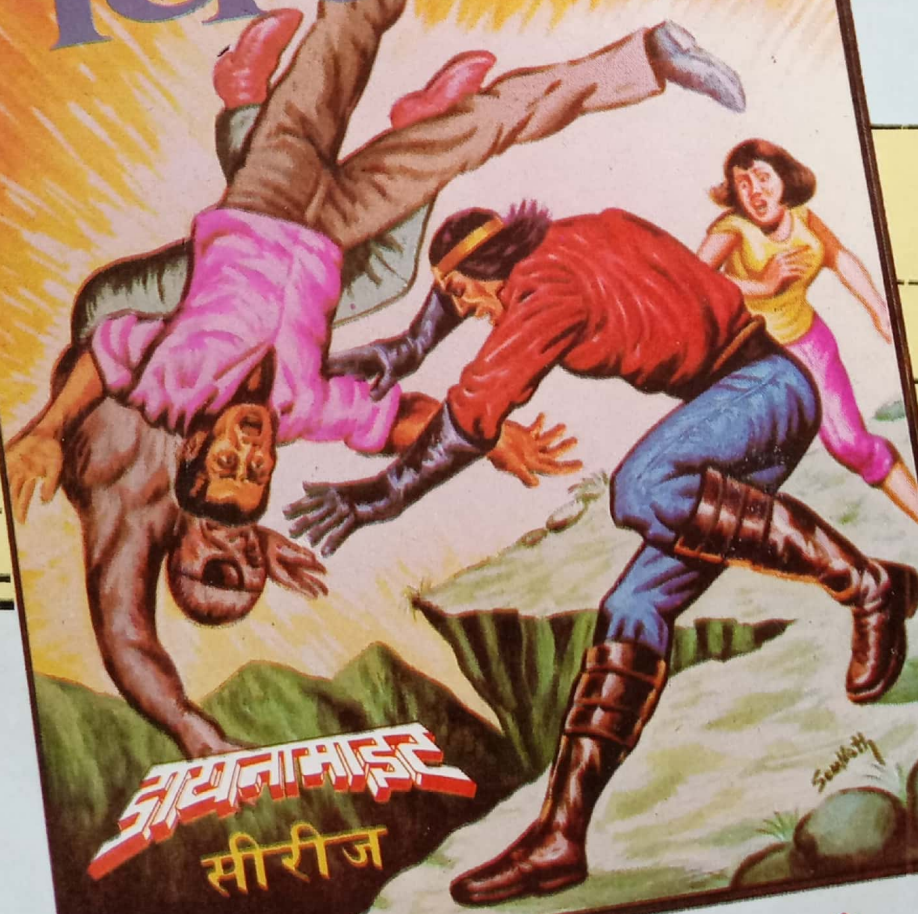
पत्र-मिला

☐ जून अंक बहुत अच्छा लगा। घनश्यामदास बिरला जी के चित्र के क्या कहने ! —**गौतमकुमार सिंह, सिवान**

☐ जून अंक मिला तो मन प्रसन्न हो गया। 'हार में जीत', 'गौरैया का उपहार', 'वीरो भगत', 'बोले नागराज', 'चाल-बेचाल' और 'पधारो प्रभु' कहानियां मजेदार लगीं। 'पूज्य काकोजी : मधुर यादें' लेख बहुत अच्छा लगा। 'दो देवियां' और 'किसका फोन' चित्र कथाएं रोचक लगीं।

—**अरिहंत, मद्रास**

☐ जून अंक में उद्योग जगत के पितामह श्री घनश्यामदास बिरला का चित्र देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। 'आओ बात करें' हमेशा कुछ न कुछ नई सीख देता है।

—**राकेश प्रियदर्शी, माधोपुर (बि.)**

☐ 'पिलानी में एक दिन' के चित्र बहुत अच्छे लगे। घनश्यामदास बिरला जी का चित्र भी खूब आकर्षक था।

—**संदीप बंसल, जालंधर**

☐ इस अंक में 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' और 'चटपट' मजेदार लगे। नंदन से मनोरंजन भी होता है, ज्ञान भी बढ़ता है। यानी कि आम के आम गुठलियों के दाम।

—**संतोषकुमार अग्रवाल, जयपुर**

☐ पहली बार 'नंदन' देखी तो लगा इतने सालों में बच्चों की इतनी अच्छी पत्रिका पहली बार देखी।

—**जगन्नाथम, हैदराबाद**

☐ जिस तरह जीवित रहने के लिए भोजन जरूरी है, उसी तरह हमारे लिए 'नंदन' जरूरी है। यह पत्रिका हमें प्राचीन गाथाओं की याद दिलाती हैं। —**आनंदकुमार, खगौल**

☐ 'नंदन' का जून अंक अपने आप में विशेष था। बिरला जी को आपने सच्ची श्रद्धांजलि दी। इस बार मुझे पत्रिका की चार प्रतियां खरीदकर अपने मित्रों को देनी पड़ीं। सचमुच 'नंदन' करता है कमाल, हर बच्चा हो जाता है खुशहाल।

—**अनूपसिंह, मांदी (हरि.)**

☐ यह पत्रिका हमारे मन से अंधकार हटाकर ज्ञान का उजाला ही उजाला भर देती है। —**दीपक हिंदुजा, दिल्ली**

☐ जून अंक की सभी रचनाएं बहुत मजेदार लगीं। 'अजब-अनोखी दुनिया' वैज्ञानिक विषयों की अच्छी जानकारी देता है। —**प्रीतेश मेहता, खंडवा**

☐ भारत के गौरव : श्री घनश्यामदास बिरला की एलबम अच्छी थी। विश्व की महान कृतियां में 'लासारो' श्रेष्ठ थी। 'इधर-उधर', 'पोटली में गहने' व 'बड़ा भाई' कहानियां मन को लुभाने वाली थीं।

—**गिरीशकुमार सिंहल, बयाना (राज.)**

☐ मैंने कई बच्चों से 'नंदन' पत्रिका के बारे में पूछताछ की। पता चला कि जो बच्चे एक बार इसे पढ़ लेते हैं, वे अगली पत्रिका आने की राह जोहते हैं।

—**वामदेव उपाध्याय, घांचा (उ.प्र.)**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : विमला राठौर, अजमेर; सबा नबी, पटना; गोविंदा गर्ग, नोहर।

घर बैठे नंदन मंगाइए

देश में

वार्षिक—५० रुपए ; दो वर्ष का—९५ रुपए

विदेश में

भूटान, नेपाल, : वार्षिक
वायु सेवा से—२४० रुपए / ५ पौंड या ९.५० डालर
अन्य सभी देशों के लिए : वार्षिक
वायु सेवा से—३७५ रुपए / ८ पौंड या १५ डालर

शुल्क भेजने का पता— प्रसार व्यवस्थापक, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आगामी अंक : सितम्बर

नया-नवेला, एक अकेला, सारे घर का बना चहेता

- भगवान श्रीकृष्ण की झांकियां। जन्माष्टमी पर विशेष-नंदन एलबम में।
- **जरा-सी आपसी तकरार बन गई मातृभूमि के विनाश का कारण। श्यामनारायण पांडे के महाकाव्य 'हल्दी घाटी' की संक्षिप्त कथा—अनूठे अंदाज में पढ़िए 'विश्व की महान कृतियां' में।**
- चित्र-कथाएं, तेनालीराम, चीटू-नीटू, नंदन बाल समाचार तथा सभी स्थायी स्तम्भ।

आओ बात करें

लंदन के इंडिया हाउस का एक कमरा। रात का समय। देर तक वीर सावरकर एक युवक से बातें करते रहे। युवक कह रहा था— "मैं अपने देश की आजादी के लिए सब कुछ निछावर करने का संकल्प लेकर ही आपके पास आया हूं।"

"कहना आसान है, कुछ भी करना कठिन होता है। तुम्हें परीक्षा देनी होगी।"— सावरकर बोले।

युवक ने पूरे उत्साह से कहा— "मैं अभी, इसी समय परीक्षा देने को तैयार हूं।"

सावरकर ने युवक से कहा कि अपने दोनों हाथ मेज पर रखे। उन्होंने एक सूआ उठाया। खट् से उसकी हथेली के आर-पार कर दिया। खून बह निकला पर युवक ने उफ् तक न की।

सावरकर ने उसे छाती से लगा लिया। बोले—"धींगरा, भारत मां का कष्ट दूर करने के लिए तुम्हारे जैसे बेटों की जरूरत है।"

अमृतसर के जाने-माने डाक्टर का बेटा था मदनलाल धींगरा। बचपन से ही उसकी चाह थी कि वह इंजीनियर बने। युवा होने पर लम्बी यात्रा करके मदनलाल इंग्लैंड जा पहुंचे। वहां उन्होंने इंजीनियरिंग पढ़ने को विश्वविद्यालय में दाखिला ले लिया। मदनलाल धींगरा बढ़िया कपड़े पहनते और लंदन की सड़कों पर घूमा करते।

मदनलाल ने सावरकर के भाषण सुने। वह उनके प्रशंसक और भक्त बन गए। एक जुलाई १९०९ को नेशनल इंडियन एसोसिएशन की सभा हो रही थी। संस्था के सचिव ने अंग्रेजों के प्रति राजद्रोह करने वालों की निंदा की। तभी मदनलाल धींगरा उठे। कर्जन वायली के निकट गए। झटाझट तीन गोलियां दाग दीं। सभा में हाहाकार मच गया। अंग्रेज हक्के-बक्के रह गए। उन्हीं के घर में घुसकर भारतीय युवक की यह अनोखी दिलेरी थी।

मदनलाल को गिरफ़्तार कर लिया गया। चारों ओर से गालियों की बौछार होने लगी। यहां तक कि उनके पिता ने सरकार को तार भेज कर कहा— "मदनलाल को मैं अपना पुत्र नहीं मानता।"

इंग्लैंड में 'जी हुजूर' भारतीयों ने मदनलाल के इस काम की निंदा करने को सभा की। सभा में प्रस्ताव पास किया जा रहा था, तभी सावरकर खड़े हो गए। बोले— "मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।"

पामर नामक एक अंग्रेज ने सावरकर को एक मुक्का मारा। बोला— "ले, अंग्रेजों के विरोध का मजा चख।"

सावरकर के एक साथी ने वहीं उस अंग्रेज पर बेंत का वार किया। बोला— "ले तू, भारतीय मार का मजा चख।"

सभा में हड़कम्प मच गया। मदनलाल की निंदा का प्रस्ताव पास नहीं हो सका। बाद में मदनलाल को फांसी दी गई। फांसी से पहले उन्होंने कहा— "भारत में इस समय केवल एक ही शिक्षा की आवश्यकता है— मरना सीखना। उसको सिखाने के लिए स्वयं मरना जरूरी है।"

सन् सत्तावन की क्रांति सफल नहीं हो सकी थी। लेकिन आजादी की जंग छिड़ जाती है तो रुकती नहीं। न जाने कितनों ने लाठियां-गोलियां खाईं। हंसते-हंसते कितने ही फांसी पर झूल गए। आओ, सुनहरे अक्षरों में हम उनके नाम लिखें, जिन्होंने अपना सब कुछ लुटा दिया ताकि हम आजाद होकर जी सकें।

आजादी की लड़ाई सबने पढ़ी है। इस अंक में उससे जुड़े ऐसे कुछ पृष्ठ दे रहे हैं, जिनके बारे में कम चर्चा हुई है।

—तुम्हारे भइया

अगस्त '९४
वर्ष : ३० अंक : १०

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : राजेन्द्रकुमार वधवा

एलबम : एम. एस. अग्रवाल

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार

मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील

वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेन्द्रकुमार; चित्रकार : नारायण

लौट आया मोती

—हरफूल सुईवाल

करणा किसान करणपुर गांव का रहने वाला था। मतलबी आदमी था। वह अपना मतलब साधकर रुपए जोड़ना जानता था, दूसरों पर खर्च करना नहीं।

एक दिन शाम को करणा खेत से लौट रहा था। तब उसने दूर से देख लिया– उसकी पत्नी रोटी के टुकड़े तोड़-तोड़कर कुत्ते को खिला रही है।

भला करणा को यह बात कहां बरदास्त होती! घर पहुंचते ही उसने डांट-फटकार कर कुत्ते को भगाया। नाराज होकर पत्नी से बोला—"इस कुत्ते को खिलाकर पूरी दो रोटियों का सत्यानाश कर डाला तुमने। इससे तो कहीं अच्छा होता कि तुम ये रोटियां घर में बंधी बकरी को खिलातीं। वह दूध तो अधिक देती।"

वह करणा के कठोर और निर्दयी स्वभाव को जानती थी। इसलिए उसकी बात पर बिना नाराज हुए बोली— "देखो तो बेचारा मोती भूखा था, फिर भी खुली पड़ी रसोई में अंदर नहीं गया। बाहर ही बैठ गया। गांव में यही तो एक ऐसा कुत्ता है जिसे सभी प्यार से मोती कहकर बुलाते हैं।"

गुस्सा दबाते हुए वह बोला—"बस...बस... ठीक है। मैं तो पहले ही समझ गया था कि तुम ऐसा ही कहोगी। आगे के लिए ध्यान रखना कि यह कुत्ता घर में घुसने ही न पाए। क्या पता कभी मौका पाकर बकरी के नन्हे बच्चे को ही उठा ले गया तो! बस, हाथ मलकर रह जाओगी।" करणा ने पत्नी को झूठा डर दिखाया ताकि वह मोती को घर में न आने दे।

तभी करणा ने एक मजबूत लाठी अपनी खाट के पास रख ली। सोचा कि ज्यों ही मोती घर में घुसेगा तो वह उसको जान से ही मार डालेगा। गांव में कोई कुछ पूछेगा तो झूठ कह देगा कि मोती को मारता नहीं तो क्या करता? वह तो बकरी के नन्हे बच्चे को ही खाना चाहता था।

अब तो करणा मोती की टोह में रहने लगा, पर वह

था कि उसके पास तक नहीं फटकता था।

एक दिन, करणा शाम को घर लौटा, तो उसने देखा कि सामने बड़े आराम से मोती बैठा है। उसने अच्छा मौका समझकर, धीरे-धीरे चलकर लाठी उठाने की सोची। पर इस बीच मोती को उसके आने की भनक लग गई। करणा उस पर वार करता इससे पहले ही वह दीवार फांदकर घर से बाहर निकल गया। करणा हाथ मलता रह गया।

उसकी पत्नी ने हंसकर कहा—"देखो...मोती कितना समझदार है जो आपकी आहट पाते ही घर से निकल गया। आखिर वह जानता है कि आप उसे प्यार नहीं करते।"

कुछ ही दिन बाद करणा को अपनी ससुराल शादी में जाना था। सुबह करणा ने पत्नी को यह कहकर पहले भेज दिया कि वह दोपहर बाद तक आएगा। तब तक खेत में पड़ा बाकी काम भी निपटा देगा।

जब पत्नी अपने मायके चली, तो मोती उसे बीच रास्ते में मिल गया। वह भी उसके साथ चलने लगा। दोनों गांव से बाहर दूर तक आ गए, तो करणा की पत्नी ने कहा—"मोती, अब तू लौट जा। मैं तो अपने मायके जा रही हूं। कल वापस आऊंगी। तब तुझे भरपेट रोटी खिलाऊंगी।" कहकर उसने मोती की पीठ

प्यार से थपथपाई। वह भी जवाब में अपनी पूंछ हिलाने लगा फिर वापस गांव की ओर दौड़ पड़ा।

दरअसल पीछे से करणा ने खेत में काम का तो बहाना बनाया था। उसने सोचा था कि वह घर में अकेला तो होगा ही। मोती को रोटी का लालच देकर घर में बुला लेगा। यदि एक बार वह घर में घुस आया, तो फिर उसके हाथों से बचकर वापस नहीं जा पाएगा।

दोपहर हो चली, पर मोती ने उसके घर में पांव तक नहीं रखा। कई बार उसने मोती को अपने घर के बाहर घूमते हुए जरूर देखा। रोटी का लालच दे-देकर उसे बुलाने की करणा ने बहुत कोशिश की लेकिन वह उसके पास तक नहीं आया। आखिर करणा थक गया। मन मारकर उसे बुरा-भला कहता हुआ घर में आकर बैठ गया। थोड़ी ही देर बाद अपनी ससुराल की ओर चल पड़ा।

दूसरे दिन करणा अपनी पत्नी के साथ वापस लौटकर आया, तो हक्का-बक्का रह गया। घर में सब कुछ बिखरा पड़ा था। अंदर कमरे में पहुंचा तो उसका मन हुआ कि वह दहाड़ मारकर रो उठे। रात को घर में चोर घुसकर संदूकों का ताला तोड़कर कीमती सामान और गिरवी के पड़े गहने ले गए। करणा रोते हुए बोला—"हाय...मैं तो लुट गया। अब उन लोगों को क्या जवाब दूंगा जिनके गहने मेरे यहां गिरवी रखे थे।" —कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा।

उसका रोना सुनकर, गांव के लोग इकट्ठे हो गए। मोती भी वहां आ पहुंचा और जोर-जोर से भौंकने लगा। सभी ने देखा कि मोती करणा की पत्नी के कपड़े पकड़कर अपनी ओर खींच रहा है।

मोती की यह हरकत देख करणा बोल उठा—"कमबख्त, आज तक मेरे घर की रोटी खा-खाकर तू इतना मोटा हो गया। अब तू मेरे हाथों से नहीं बच पाएगा।" कहकर उसकी ओर लपका तो मोती दूर चला गया।

करणा के बैठते ही मोती फिर उसकी पत्नी के कपड़े अपने मुंह में दबाकर अपनी ओर खींचने लगा। तब गांव के मुखिया ने कहा—"लगता है मोती को चोर के बारे में कुछ पता है। तभी तो वह बार-बार ऐसी हरकत कर रहा है।"

अब मोती आगे और उसके पीछे करणा की पत्नी गांव के लोगों के साथ चल पड़ी। गांव के बाहर तालाब के किनारे पहुंचकर मोती रुक गया और छपाक से तालाब में कूद पड़ा।

मुखिया के कहने पर गांव के दो तैराक पानी में उतरे और डुबकी लगा कर पानी में कुछ खोजने लगे। कुछ ही देर में उन्होंने तालाब से दो गठरियां निकाल लीं। गठरियां खोली गईं तो उनमें करणा के सारे गहने बंधे मिल गए।

करणा एक-एककर अपने गहने संभाल रहा था। दूर बैठा मोती अपनी पूंछ हिला-हिलाकर खुशी जता रहा था। उन सबको यह कैसे बताता कि आधी रात को ज्यों ही उसने करणा के घर से दो लोगों को गठरियां बांधकर बाहर आते देखा, तो वह उनके पीछे चल दिया। उसने उनसे बहुत छीना झपटी की। जब चोर तालाब के पास पहुंचे, तो चोरों ने मौका पाकर गठरियां तालाब में फेंक दीं और अपने प्राण बचाकर भाग गए।

करणा को बहुत पछतावा हुआ। वह बिना कारण मोती के पीछे पड़ा हुआ था। उसने मोती को खूब प्यार किया। सभी गांव वाले मोती की तारीफ कर रहे थे। ●

पूत-सपूत

— सविता हांडा

एक गांव के पनघट पर एक बार तीन स्त्रियां पानी भरने आईं । वहीं एक बूढ़ा यात्री बैठा हुआ सत्तू खा रहा था । तीनों औरतें जमीन पर घड़े रखकर बैठ गईं ।

एक स्त्री ने दूसरी से कहा— "बहन, मेरा लड़का तोताराम जब से शास्त्री होकर आया है, तब से उसने धूम मचा दी है । सारे गांव में उसी की वाह-वाही हो रही है । वह ऐसा शकुन बताता है कि चटपट लाभ होने लगता है । परलोक की सभी बातें उसे मालूम हैं । शहर से कोई आता है तो मेरी ओर उंगली उठाकर दूसरों से कहता है— 'देखो-देखो, वही शास्त्री जी की मां है । पानी भरने जा रही है ।"

उनकी बातें सुनकर दूसरी स्त्री बोली— "अरी बहन, मेरे लाल का हाल सुनो । वैसा पहलवान दस-पांच गांवों में देखने को नहीं मिलता । अखाड़ों में वह ताल ठोककर पहलवानों से भिड़ जाता है । सच मानना, पहलवानों में उसने जितना नाम कमाया उतना क्या कोई कमाएगा ।"

दोनों की बातें सुनकर, तीसरी स्त्री चुप रही । इस पर एक ने कहा— "तू चुप क्यों है ? मालूम होता है तेरा लड़का लायक नहीं निकला ।"

तीसरी बोली— "जैसा भी है, मेरे लिए बहुत अच्छा है । उसे नाम कमाने की लालसा नहीं है । वह सीधे स्वभाव का आदमी है । दिन भर खेतों में काम करता है । शाम को आकर घर के लिए पानी भर देता है । घर के काम से उसे इतनी छुट्टी ही नहीं मिलती कि वह बाहर नाम कमाए । आज मेरे बहुत कहने पर वह मेला देखने गया है, तभी मुझे पानी भरने आना पड़ा है । मुझे आज इधर आते देखकर, देखने वाले इसी बात पर आश्चर्य कर रहे थे कि मुझे पानी भरने के लिए कैसे निकलना पड़ा है !"

तीनों की बातें समाप्त हुईं, तो वे अपने-अपने घड़ों में पानी भरकर वहां से रवाना हुईं । बूढ़ा यात्री भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा । थोड़ी दूर से तीन नवयुवक आते दिखाई पड़े । वे तीनों उन स्त्रियों के लड़के थे । मेले से घर लौट रहे थे । एक ने पहली स्त्री के पास जाकर कहा— "मां, मैं अच्छे मुहूर्त में घर की ओर जा रहा हूं । रास्ते में भरा घड़ा मिलना शुभ है ।"

यह कहकर वह जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर चला गया । दूसरे ने दूसरी स्त्री से कहा— "मां, मैं मेले के दंगल में बाजी मारकर आ रहा हूं । जल्दी पानी लेकर घर आना । मुझे भूख लगी है ।"

यह कहता हुआ वह भी आगे बढ़ गया । इसके बाद तीसरा युवक तीसरी के पास आया और उसके हाथ से पानी का घड़ा लेकर बोला— "मां, तू क्यों पानी भरने चली आई, मैं तो आ ही रहा था ।"

घड़ा लेकर वह घर की ओर चला । तब अपने-अपने बेटों की ओर इशारा करके स्त्रियों ने पीछे चलने वाले बूढ़े से पूछा— "बाबा, हमारे बेटों के बारे में तुम क्या सोच रहे हो ?"

बूढ़ा अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ बोला— "तुम लोग अपने-अपने बेटों के बारे में चाहे जो कहो, मेरी राय में इन तीनों में केवल एक ऐसा है जिसे बेटा कहा जा सकता है । वह है तीसरी स्त्री का बेटा, जिसे इस बात की चिंता है कि उसकी मा को पानी भरने क्यों जाना पड़े ।"

यह सुनकर दोनों स्त्रियों के मुंह लटक गए । तीसरी स्त्री खुश हो उठी । •
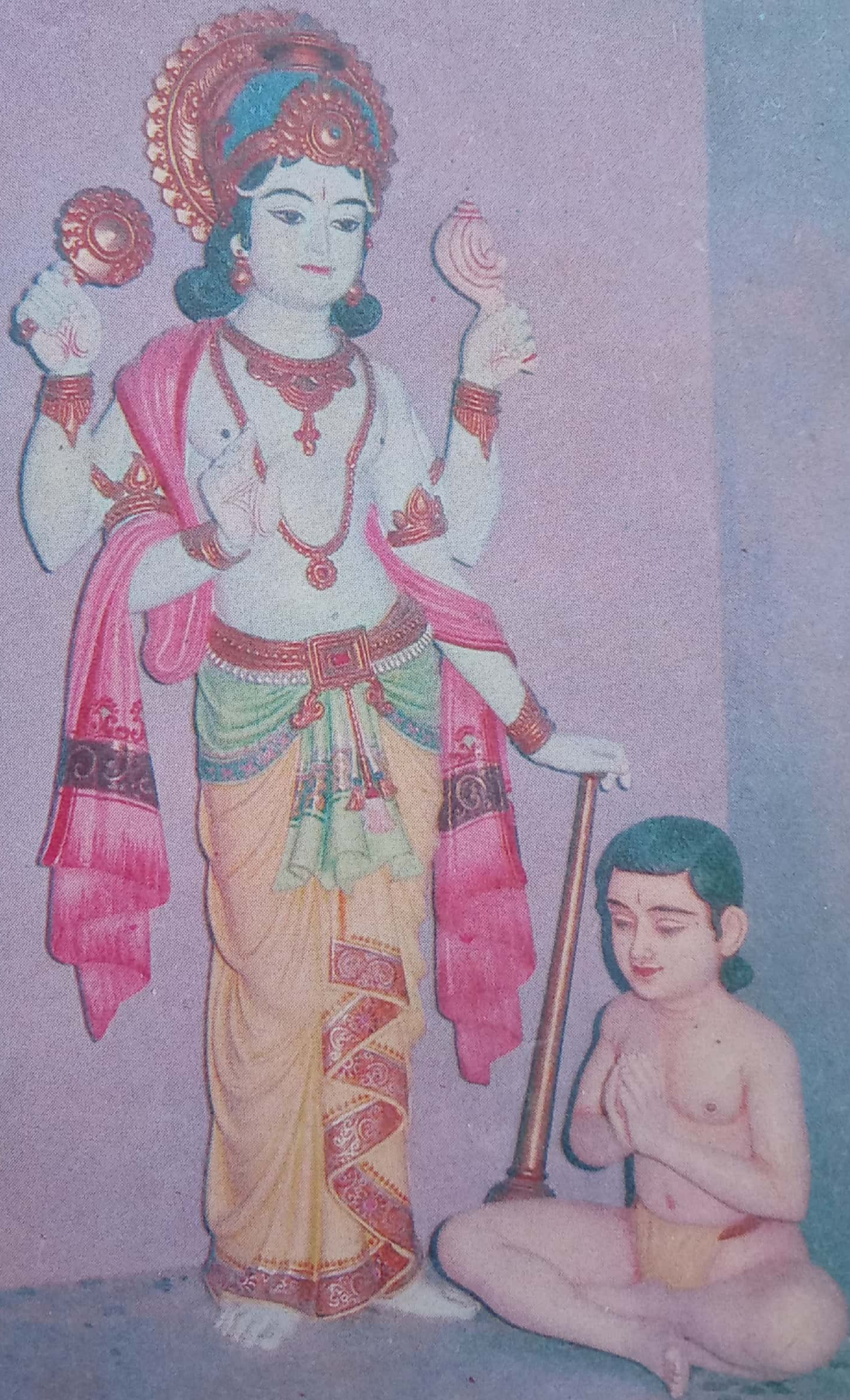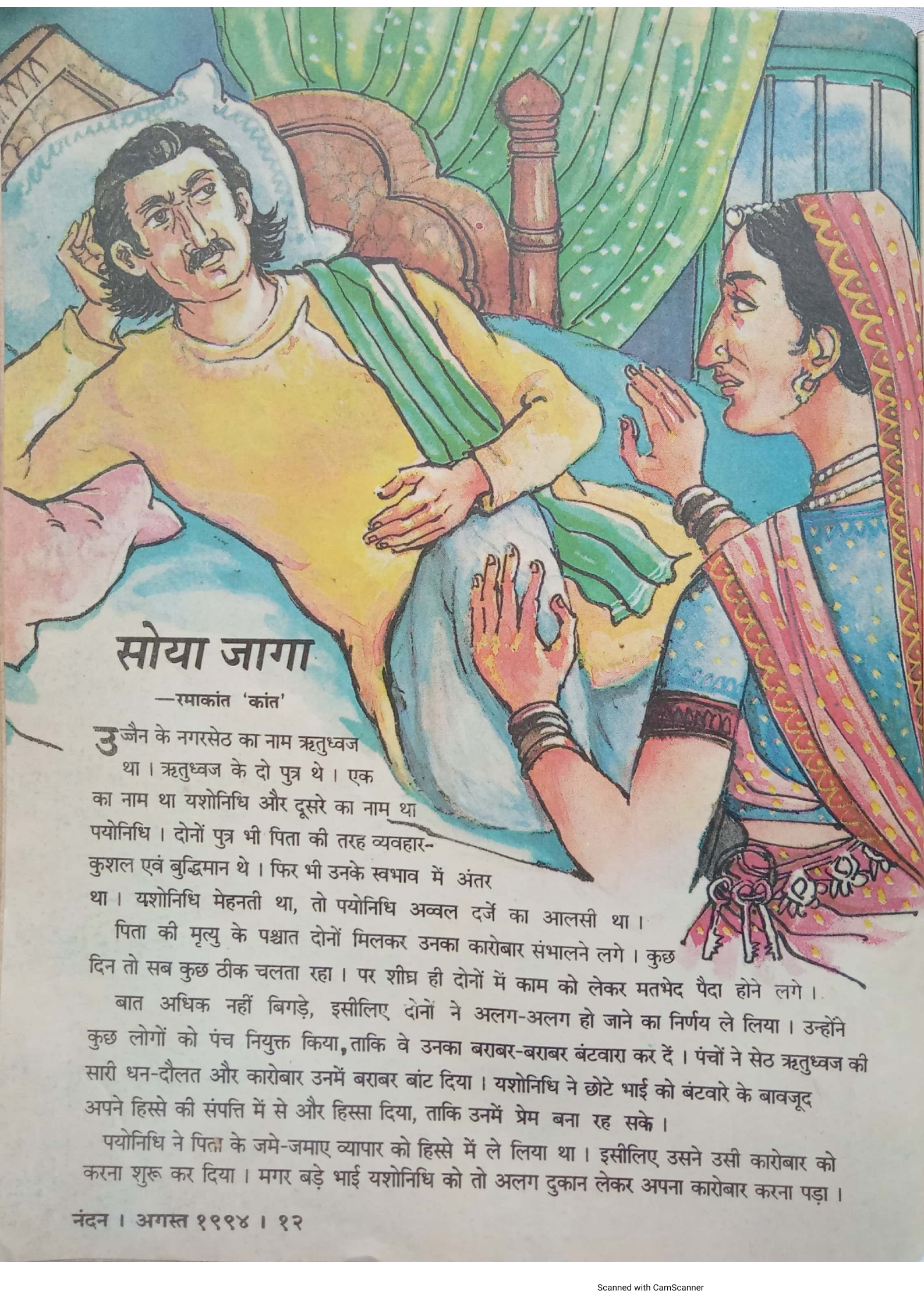
भगवान विष्णु, भक्त ध्रुव

सोया जागा

—रमाकांत 'कांत'

उज्जैन के नगरसेठ का नाम ऋतुध्वज था। ऋतुध्वज के दो पुत्र थे। एक का नाम था यशोनिधि और दूसरे का नाम था पयोनिधि। दोनों पुत्र भी पिता की तरह व्यवहार-कुशल एवं बुद्धिमान थे। फिर भी उनके स्वभाव में अंतर था। यशोनिधि मेहनती था, तो पयोनिधि अव्वल दर्जे का आलसी था।

पिता की मृत्यु के पश्चात दोनों मिलकर उनका कारोबार संभालने लगे। कुछ दिन तो सब कुछ ठीक चलता रहा। पर शीघ्र ही दोनों में काम को लेकर मतभेद पैदा होने लगे।

बात अधिक नहीं बिगड़े, इसीलिए दोनों ने अलग-अलग हो जाने का निर्णय ले लिया। उन्होंने कुछ लोगों को पंच नियुक्त किया, ताकि वे उनका बराबर-बराबर बंटवारा कर दें। पंचों ने सेठ ऋतुध्वज की सारी धन-दौलत और कारोबार उनमें बराबर बांट दिया। यशोनिधि ने छोटे भाई को बंटवारे के बावजूद अपने हिस्से की संपत्ति में से और हिस्सा दिया, ताकि उनमें प्रेम बना रह सके।

पयोनिधि ने पिता के जमे-जमाए व्यापार को हिस्से में ले लिया था। इसीलिए उसने उसी कारोबार को करना शुरू कर दिया। मगर बड़े भाई यशोनिधि को तो अलग दुकान लेकर अपना कारोबार करना पड़ा।

यशोनिधि ने जल्दी ही अपनी नई दुकान में अपना कारोबार जमा लिया। उधर पयोनिधि ने कुछ दिनों तक तो स्वयं व्यापार की देखरेख की, किंतु जल्दी ही उसके आलसी स्वभाव ने अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया। वह मुनीम और नौकरों के भरोसे रहने लगा। घर बैठे-बैठे ही वह उनको आदेश देकर काम संभालने लगा।

जब भी कोई उसे कुछ कहता, तो वह जवाब देता— ''आखिर मैं सेठ ऋतुध्वज का पुत्र हूं, कोई छोटा-मोटा व्यापारी नहीं हूं। दुकान पर मेरे स्वयं के जाकर बैठने से पिता की इज्जत पर धब्बा लगता है।''

बस, इसी बात से यशोनिधि को चिढ़ थी। एक-दो बार वह स्वयं पयोनिधि को समझाने गया। उसने समझाते हुए कहा— ''मेरे भाई, दुकान पर तुम स्वयं बैठा करो। नौकरों के भरोसे काम छोड़ना समझदारी नहीं है। वे काम तब करते हैं, जब मालिक उनके सामने होता है।''

''भाई साहब, मैं आपकी तरह नहीं हूं। आप कंजूस हैं। दुकान पर इसीलिए खुद बैठते हैं कि एक मुनीम का वेतन बचा लें। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे पिता उज्जैनी के नगरसेठ थे और मैं उनका वारिस हूं।''— पयोनिधि ने यशोनिधि को उलाहना देते हुए कहा।

''ऐसा नहीं है, पयोनिधि। पिता जी भी स्वयं दुकान पर बैठते थे। सारा कारोबार खुद संभाला करते थे।''— यशोनिधि ने समझाया।

पर उसे तो नगरसेठ बने रहने की धुन सवार थी। वह नहीं माना। वह पहले से भी अधिक आलसी होता चला गया। उसकी देखादेखी उसके बच्चे भी आलसी बनने लगे। सब घर पर पड़े रहते और धन भी बहुत अधिक खर्च करते।

परिणाम स्वरूप पयोनिधि का व्यवसाय दिन-दिन घाटे में जाने लगा। प्रारम्भ में तो उसने घाटे की परवाह नहीं की और जमापूंजी में से घर का खर्चा चलता रहा। मगर धीरे-धीरे घाटा बढ़ता चला गया। दूसरी ओर यशोनिधि का व्यवसाय लगातार फल-फूल रहा था। वह स्वयं दुकान पर बैठता था। उसके नौकर-मुनीम सब चुस्त एवं जागरूक बने रहते थे। वह हाट-बाजार में घूमता। लोग उसकी दुकान के बारे में क्या सोचते हैं, उसकी साख कितनी है, इन सब बातों का ध्यान रखता। इस तरह उसके व्यापार में सदैव लाभ ही होता जा रहा था।

एक दिन पयोनिधि की पत्नी ने कहा— ''जेठ जी का व्यवसाय रोज बढ़ रहा है, जबकि हम घाटे में जा रहे हैं। जब हम लोग अलग हुए थे, तब उन्होंने बराबर हिस्सा हो जाने के बाद भी और धन दिया था। हमारे पास उनसे ज्यादा धन था। दुकान भी हमें अच्छी जमी-जमाई मिली थी। फिर आज... ?''

''यह सब भाग्य का खेल है। हमारे भाग्य में घाटा ही लिखा हुआ है। भला, इसमें मैं क्या कर सकता हूं ?''— पयोनिधि ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा।

पत्नी ने पति को अच्छी सीख देनी चाही। पर आलसी पयोनिधि को कुछ समझ नहीं आया। दुकान पर जाकर बैठना वह नगरसेठ की प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं मानता था।

पयोनिधि का घाटा दिन दूना, रात चौगुना बढ़ता ही जा रहा था। अब वह भी इसके कारण चिंतित रहने लगा। फिर भी उसने अपनी आदतों में कोई परिवर्तन नहीं किया।

एक दिन शाम को मुनीम ने आकर कहा— ''सेठ जी, हम करीब-करीब दिवालिया हो चुके हैं। मांगने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही है जबकि तिजोरी खाली हो चुकी है।''

मुनीम तो यह कहकर अपने घर चला गया, पर

पयोनिधि चिंतित हो गया। वह यह सोचकर परेशान था कि इन परिस्थितियों में किस तरह गुजारा चल पाएगा। सोचते-सोचते पयोनिधि को गहरी नींद आ गई।

नींद में उसे सपना आया। सपने में उसने देखा कि वह बाजार में घूमने के लिए गया हुआ है। रास्ते में उसके बड़े भाई यशोनिधि की दुकान थी। दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लगी हुई थी। खुद यशोनिधि गद्दी पर बैठा हुआ सारा व्यापार संभाल रहा था। इस काम में मुनीम, नौकर सब पूरी तरह लगे हुए थे।

दुकान के बाहर एक व्यक्ति ऐसा था जिसे वह नहीं पहचान पा रहा था। वह उधर से गुजर रहे लोगों को बता रहा था कि इस दुकान में मिलने वाला सामान कितना बढ़िया और सस्ता है। उसके कहने से ग्राहक अंदर जा रहे थे और सामान खरीदकर ला रहे थे। उसे देखकर पयोनिधि आश्चर्यचकित था। उसने सोचा कि क्यों नहीं इस व्यक्ति को मैं अधिक वेतन देकर अपने यहां रख लूं।

यह सोचकर पयोनिधि उसके पास गया। उसने उसके कंधे पर प्यार से हाथ रखकर कहा— ''बड़े मेहनती हो। क्या नाम है तुम्हारा ?''

—''जी, मेरा नाम 'कर्मफल' है।''

ऐसा नाम पयोनिधि ने पहली बार सुना था। फिर भी नाम की तरफ विशेष ध्यान दिए बिना वह बोला— ''यहां से दूना वेतन मैं दूंगा। क्या तुम मेरी दुकान पर काम करना चाहोगे ?''

—''नहीं सेठ जी। मैं यशोनिधि का 'कर्मफल' हूं। साए की तरह उसके साथ रहता हूं। उसका साथ मैं छोड़ ही नहीं सकता।''

''एक बार फिर सोच लो। मैं तुम्हें तीन गुना वेतन दे दूंगा।''— पयोनिधि ने ललचाते हुए कहा।

—''मैंने कहा न सेठ जी, मैं यशोनिधि का 'कर्मफल' हूं। आप अपने वाले कर्मफल को खोजिए। वही आपकी सहायता करेगा।''

—''मगर मेरा 'कर्मफल' कहां है, भाई ?''

—''वह भी आपकी तरह कहीं आराम कर रहा होगा। जब व्यक्ति सोता है तो उसका 'कर्मफल' भी सो जाता है। वह जागकर जैसा काम करता है, वैसे ही वह भी उसकी सहायता करता है।''

''मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आया। तुम समझा कर क्यों नहीं कहते ?''— पयोनिधि ने कहा।

—''सेठ जी क्षमा करें। मेरे पास फालतू समय नहीं है। देखिए, यशोनिधि कितनी कड़ी मेहनत कर रहा है। यदि उसके अनुसार मैंने काम नहीं किया, तो दुनिया में लोग मेहनत करना छोड़ देंगे।''

अब पयोनिधि को सब समझ आ गया था। वह तेजी से चल पड़ा। सचमुच उसका कर्मफल भी आलसियों की तरह पड़ा हुआ था। पर जब वह जाग गया था, तो भला कर्मफल किस तरह सोया हुआ रह सकता था ? ●
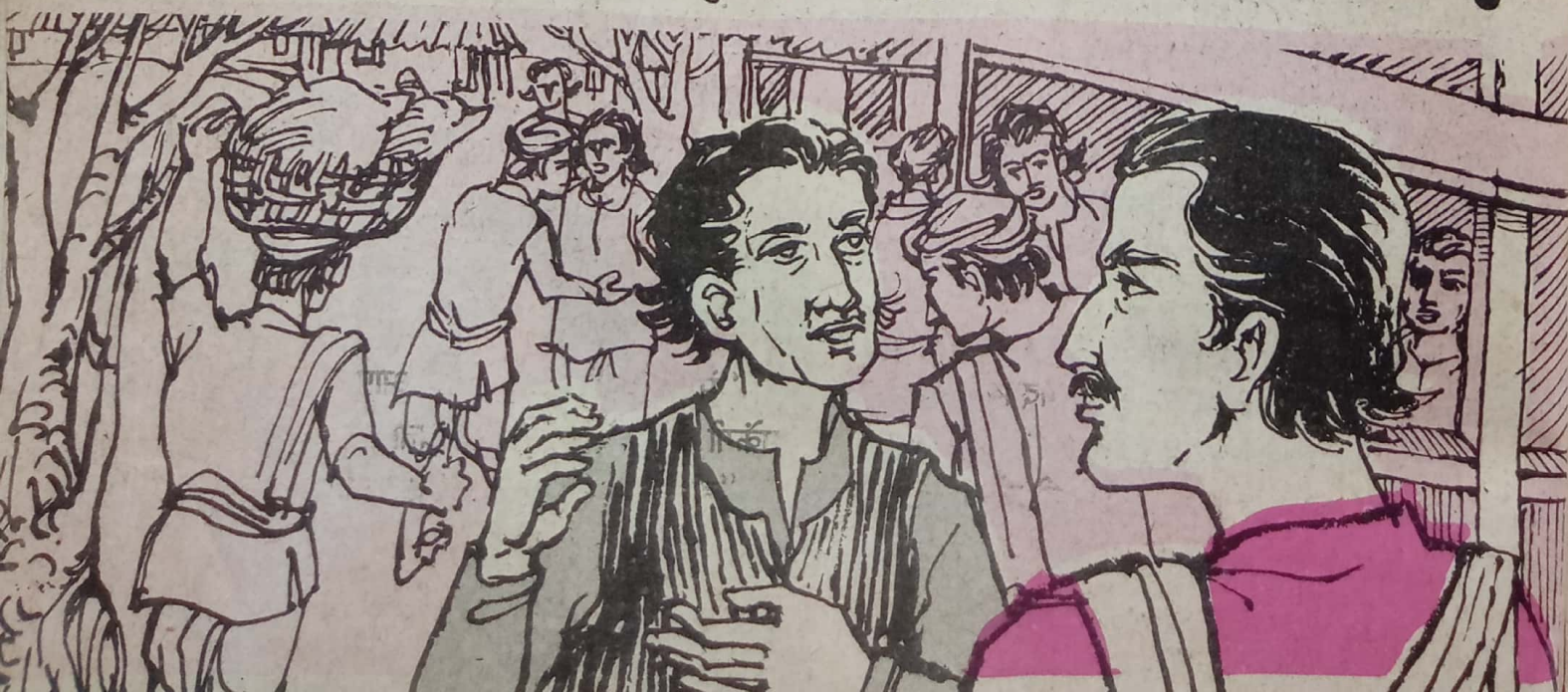
कौन बोला

—उषा सक्सेना

बेतवा नदी के किनारे बसा हुआ छोटा-सा राज्य था। वहां का राजा बड़ा ही पराक्रमी था। रानी पतिव्रता तथा धर्मपरायणा थीं। एक दिन एक पक्षी की बोली सुनकर, दोनों में बहस होने लगी। राजा का कहना था कि यह हंस की बोली है। रानी को विश्वास था कि कौए की बोली है। तर्क-वितर्क इस सीमा तक बढ़ा कि राजा ने रानी के सामने एक शर्त रखी—"प्रतिहारी बाहर जाकर देखे कौन-सा पक्षी बोल रहा है। यदि हंस होगा, तो आपको पंद्रह वर्ष के निर्वासन का दंड मिलेगा। कौआ हुआ, तो मैं पंद्रहे वर्ष के लिए निर्वासन भोगूंगा।"

रानी मन ही मन भयभीत हो उठीं। वह जानती थीं कि सरोवर के हंस इस ओर नहीं आते। शर्त के अनुसार राजा को पराजित होना पड़ेगा। उन्होंने मन ही मन कुछ निश्चय किया। प्रतिहारी से जाकर कहा—"प्रतिहारी! तुम उपवन में जाकर देखो, कौन सा पक्षी बोल रहा है। मगर महाराजा से आकर यही कहना कि सरोवर का हंस बोल रहा है।"

प्रतिहारी ने कुछ समय बाद राजा के सामने आकर रानी की बात दोहरा दी। वैसे उसने भी देखा था कि बाहर वृक्ष पर एक कौआ बैठा हुआ, अपनी बेसुरी आवाज में बोल रहा था।

रानी राजमहल छोड़कर चल दीं। चलते-चलते घनघोर जंगल में पहुंचीं। कहां राजमहल के वैभव और कहां जंगल का कंकरीला, पथरीला रास्ता। वह बहुत थक गई थीं। सहसा उन्हें एक मंदिर दिखाई दिया।

मंदिर में पहुंचकर उन्होंने देखा, देवता के आगे नैवेद्य रखा है। दीपक जल रहा है किंतु कोई भी व्यक्ति वहां नहीं है। उन्होंने मंदिर के कपाट बंद किए और सो गईं।

कुछ देर बाद, मंदिर के पुजारी जी लौटे। उन्होंने कपाट बंद देखे, तो द्वार खटखटाया।
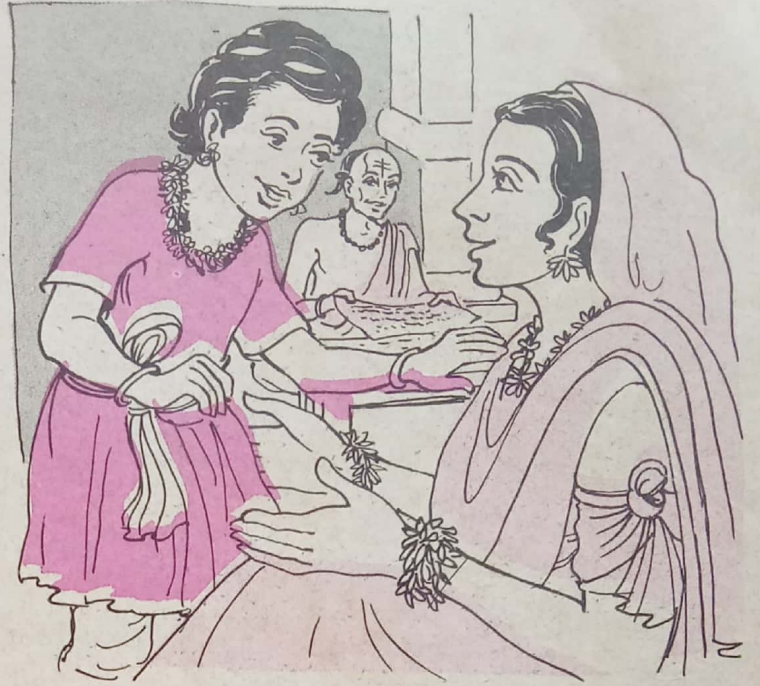
महारानी ने द्वार खोल दिए। उनकी वेशभूषा देखकर पुजारी जी समझ गए कि वह राजघराने की हैं। सारी घटना जानकर उन्होंने उन्हें अपनी कुटिया में रहने की अनुमति दे दी। महारानी दिन भर मंदिर में भगवान की सेवा करतीं। भजन-कीर्तन करतीं और रात में कुटिया में सो जातीं। समय बीतता गया। राजकुमार का जन्म हुआ। उसकी मोहक छवि देखकर पुजारी जी मुग्ध हो गए।

पुजारी जी ने उसका नाम वनकुंवर रख दिया। धीरे-धीरे राजकुमार बड़ा हो गया। वह उसे विधिवत शिक्षा देने लगे। कुछ ही वर्षों में कुंवर शस्त्र और शास्त्र विद्या में पारंगत हो गया। वीरता का गुण तो उसे विरासत में मिला था। समय बीता। राजकुमार अब किशोर हो गया था। वह निर्भीक हो, दूर-दूर तक घूमता फिरता। एक दिन कुंवर घूमते-घूमते बहुत दूर तक निकल गया। प्यास लग आई। उसने देखा, थोड़ी दूर एक कुआं है।

उसकी जगत पर चार औरतें बैठी चौपड़ खेल रही थीं।

"मैं बहुत प्यासा हूं। क्या आप मुझे पानी पिला सकेंगी?"—कुंवर ने विनम्रता से कहा।

"हां, हां, क्यों नहीं!"—उन औरतों ने उसे पास बुलाया और कुएं में धकेल दिया। कुंवर रंच मात्र भी

नहीं घबराया। सहसा उसकी दृष्टि कुएं में बने एक द्वार पर पड़ी। वह अपनी उत्सुकता न रोक सका। द्वार खोलकर अंदर चला गया। अंदर एक विशाल महल था, जिसकी सुंदरता को देखकर वह ठगा-सा रह गया। वह अंदर चलता गया। उसने देखा, झूले पर एक अत्यंत सुंदर कन्या बैठी है। उस कन्या ने कुंवर को देखा, तो आश्चर्य से भर उठी। बोली—"कौन हो तुम? यहां तक कैसे आए? क्या तुम्हें भय नहीं लगता? जानते नहीं, यह दैत्यराज का महल है। यहां से तुरंत चले जाओ।"

—"इतने सारे प्रश्न पूछने वाली आप कौन हैं? अपना परिचय तो दीजिए। रही भय की बात, तो संसार में मुझे किसी से भय नहीं लगता।"

"मैं दैत्यराज की कन्या हूं। अभी मेरे पिता आते ही होंगे। मैं तुमसे एक बार फिर कहती हूं, चले जाओ। अन्यथा तुम्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।"—लड़की ने कहा।

वनकुंवर किसी भी मूल्य पर लौटने को तैयार न था। थोड़ी देर में भयंकर गर्जना सुनाई दी। दैत्य कन्या ने राजकुमार को भुनगा बनाकर दीवार पर चिपका दिया। दैत्य ने आते ही पूछा—"बेटी, आज यहां मानुष-गंध आ रही है। क्या कोई मनुष्य यहां आया है?"

"अरे पिता जी, आपके होते हुए भला किसमें इतना साहस है जो इस ओर आ सके। आप निश्चिंत होकर भोजन कीजिए।"—दैत्य पुत्री ने कहा।

अब यह नित्य का नियम हो गया। दैत्य के जाते ही कुंवर अपने असली रूप में आ जाता और उसके आने से पहले ही दैत्य कन्या उसे भुनगा बना देती।

एक दिन वनकुंवर ने कहा—"मैं तुमसे विवाह कर, अपने बाबा और मां के पास जाना चाहता हूं। वे बहुत चिंतित होंगे।"

सौभाग्यवश उसी दिन दैत्यराज ने पुत्री से कहा—"बेटी, अब मैं तुम्हारा विवाह करना चाहता हूं, परंतु मेरी एक इच्छा है।"

—"वह क्या बाबा?"

"जो कोई मुझे मल्ल युद्ध में पराजित कर देगा, मैं उसी के साथ तेरा विवाह करूंगा।"—राक्षस बोला।

दैत्यराज के जाने पर उसकी पुत्री ने कुंवर को इस शर्त के संबंध में बताया। कुंवर फौरन मल्ल युद्ध के लिए तैयार हो गया। दैत्य और कुंवर में भयंकर युद्ध हुआ। कुंवर के सामने दैत्य की एक न चली। वह पराजित हो गया। उसने शर्त के अनुसार अपनी कन्या का विवाह कुंवर के साथ कर दिया।

अथाह धन-संपत्ति और पत्नी को लेकर कुंवर, पुजारी जी और मां के पास आया।

एक दिन कुंवर ने रानी से अपने पिता के बारे में पूछा। रानी ने सारी बातें उसे बताईं। कुंवर बोला—"इसका मतलब पिता जी को बचाने के लिए आपने यह दंड भोगा। ठीक है, मैं आज ही राजमहल जाकर पिताजी को सारी बात बताकर आऊंगा।"

लेकिन रानी ने मना कर दिया। कहा—"अब कुछ ही वर्ष बाकी हैं। अपने पिता को दुःख पहुंचाकर क्या मिलेगा?"

उधर एक दिन राजा ने फिर से वैसे ही पक्षी की आवाज सुनी। उन्होंने प्रतिहारी को बुलाकर कहा—"देखकर आओ कि बाग में कौन-सा पक्षी बोल रहा है?"

प्रतिहारी ने वापस आकर बताया, तो राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने उसे याद दिलाया कि बहुत वर्ष पहले तो उसने ऐसी आवाज को हंस की आवाज बताया था। फिर आज वह उस आवाज को कौए की आवाज क्यों कह रहा है?

प्रतिहारी को बात याद आ गई। उसने राजा को बताया कि महारानी ने उसे सच्ची बात बताने से मना किया था।

अब राजा को अपनी गलती पता चली। वह तुरंत जंगल की ओर चल दिए। रानी ने राजकुमार और पुजारी जी से राजा का परिचय कराया। पुत्र को देखकर राजा की आंखों से आंसू बहने लगे। रानी और राजकुमार की अच्छी तरह से देखभाल करने के लिए उन्होंने पुजारी जी को धन्यवाद दिया। ●

चिड़िया लगी गाने

—हर्षमोहन कृष्णात्रेय

त्रिपुरा के पहाड़ी अंचल में एक छोटा-सा गांव था । उस गांव के अधिकतर लोग झूम की खेती करते थे । इसी गांव में एक किसान था । वह अपनी पत्नी के साथ खुशी से जीवन गुजार रहा था । एक दिन उसके घर में एक सुंदर कन्या ने जन्म लिया । कन्या का नाम सिपिंतुई रखा गया । लड़की के पैदा होते ही किसान की पत्नी की मृत्यु हो गई ।

कुछ समय पश्चात किसान ने दूसरा विवाह किया । दूसरी पत्नी ने एक लड़की और एक लड़के को जन्म दिया, जिनका नाम माइरूंतुई तथा तखोराई रखा गया ।

किसान की दूसरी पत्नी का व्यवहार बड़ी लड़की सिपिंतुई के प्रति अच्छा नहीं था। सिपिंतुई सांवले रंग की सुंदर लड़की थी । वह घर के कामकाज के अलावा सिलाई-कढ़ाई में भी निपुण थी । इसके विपरीत छोटी लड़की माइरूंतुई एकदम आलसी और निकम्मी थी । हमेशा अपनी बड़ी बहन से झगड़ा करती रहती थी । स्वयं अच्छे-अच्छे वस्त्र धारण करती, लेकिन सिपिंतुई को फटे-पुराने कपड़े पहनने को देती थी ।

एक बार दोनों बहनें खेत में काम कर रही थीं । तभी पेड़ पर बैठी एक चिड़िया गाते हुए कहने लगी— "काश, ये पुराने गंदे कपड़ों वाली लड़की राजा की रानी होती ।"

छोटी बहन के कानों में जैसे ही ये शब्द पड़े, उसने तुरंत पुराने, गंदे कपड़े उतरवाकर स्वयं पहन लिए और सिपिंतुई को अपने नए वस्त्र पहनने को दे दिए । चिड़िया फिर गा उठी— "काश, ये सुंदर कपड़ों वाली लड़की राजा की रानी होती ।"

यह सुनकर माइरूंतुई ने अपने वस्त्र उससे उतरवा लिए और उसे बुरा-भला कहकर घर लौट आई ।

उन्हीं दिनों राजा ने अपने विवाह के लिए कुछ कर्मचारियों को एक सुंदर, गुणवती लड़की की तलाश के लिए आदेश दिया हुआ था । राजा के सेवक वेश बदलकर कन्या की तलाश में जगह-जगह भ्रमण कर रहे थे । एक दिन वे सिपिंतुई- माइरूंतुई के घर के पास से गुजरे । उन्हें प्यास लगी थी । उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया ।

उस समय दोनों बहनें आराम कर रही थीं । आवाज सुनकर छोटी बहन गुस्से में बड़बड़ाते हुए बाहर आई । कर्मचारियों के पानी मांगने पर वह बांस में बदबूदार,सड़ा पानी लाकर पिलाने लगी । दुर्गंध के कारण वे पानी पी नहीं पा रहे थे । इसी बीच सिपिंतुई वहां पहुंच गई । सारी स्थिति समझते ही वह मीठा, शीतल जल अच्छे बांस में भरकर ले आई और प्रेमपूर्वक उन्हें पिलाने लगी ।

सभी कर्मचारी उसके रूप-सौंदर्य के साथ-साथ मृदु व्यवहार से बहुत ही प्रभावित हुए । उन्होंने तुरंत राजा को उसके बारे में बताया और सिपिंतुई की बहुत प्रशंसा की । राजा उसे देखे बिना न रह सका । वह तुरंत एक कर्मचारी के साथ उस ओर निकल पड़ा । उस समय जंगल में दोनों बहनें पानी लेने के लिए नदी की ओर जा रही थीं । कर्मचारी ने दूर से राजा को सिपिंतुई के बारे में बता दिया । राजा धीरे-धीरे अपने घोड़े को उस ओर ले गया । राजा के घोड़े को देखते

ही छोटी बहन घबराकर दूर भाग खड़ी हुई, जबकि सिपिंतुई निर्भय खड़ी रही। राजा उसे अपने घोड़े पर बिठाकर राजमहल ले आया और शादी के उत्सव की घोषणा कर दी। दोनों का विवाह हो गया।

समय बीतता गया। सिपिंतुई ने एक सुंदर शिशु को जन्म दिया। लड़के को पाकर राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। उधर सौतेली मां कुछ और सोच रही थी। उसने योजना के मुताबिक सिपिंतुई को उसके पिता की बीमारी का संदेश भिजवाया। पिता के घर पहुंचने पर सिपिंतुई को पता चला कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। जब शोक में डूबी सिपिंतुई राजमहल लौटने लगी, तो कुटिल मां ने उसे दो दिन और रुकने को कहा। सिपिंतुई उसकी बातों में आकर रुक गई। दूसरे दिन सौतेली मां सिपिंतुई को फुसलाकर उसके केश संवारने लगी। सिपिंतुई के बालों में राजा द्वारा लगाया हुआ एक फूल था। केश संवारने के बहाने सौतेली मां ने फूल निकालकर घर के बाहर फेंक दिया।

सिपिंतुई बहुत दुखी हुई। उसने माइरूंतुई से फूल लाने का आग्रह किया, लेकिन माइरूंतुई ने लाने से इंकार कर दिया। हारकर स्वयं सिपिंतुई फूल लाने बाहर गई। जैसे ही सिपिंतुई फूल उठाने के लिए नीचे झुकी, उसकी सौतेली मां और माइरूंतुई ने मौका पाकर गरम-गरम उबलता जल सिपिंतुई पर उंड़ेल दिया। सिपिंतुई बुरी तरह झुलसकर बेहोश हो गई। उसे मरा समझकर मां और बेटी ने सिपिंतुई को बोरे में बंद कर जंगल में फेंक दिया।

माइरूंतुई सिपिंतुई के वस्त्र पहन कर घूंघट निकाल राजभवन में जाने के लिए तैयार होकर बैठ गई। राज कर्मचारी उसे ही सिपिंतुई मानकर सम्मान के साथ राजमहल लिवा लाए। राजा सिपिंतुई के बदले रूप को देख, कुछ समझ न पाया। राजा ने आशंका को दूर करने के लिए उसे रिया (आदिवासी स्त्रियों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र) बुनने के लिए रेशमी सूत दिया। लेकिन वह रिया बुन न पाई।

तभी एक चिड़िया आकर गाने लगी— "दो को छोड़ो लो तीन, तीन को छोड़ो दो लो।"

राजा चिड़िया की बात का मतलब समझ न पाया। मन बहलाने के लिए राजा शिकार खेलने निकल पड़ा। बहुत प्रयास के बावजूद भी उस दिन राजा को शिकार न मिला। थककर राजा एक हिरन के पास बैठ गया।

यह हिरन राजा का पालतू हिरन था। राजा ने इसके लिए जंगल में ही घर बना दिया था। हिरन राजा से काफी हिला हुआ था। राजा ने हिरन से कहा कि आज वह वहीं रात गुजारेगा। हिरन ने राजा को वहां ठहरने से मना किया। राजा को आश्चर्य हुआ। जब राजा ने इसका कारण जानना चाहा, तो हिरन ने रोते हुए सिपिंतुई पर विमाता द्वारा किए गए अत्याचारों की पूरी कहानी सुनाते हुए बताया कि उसी ने जड़ी-बूटियों की मदद से राजरानी के झुलसे बदन को ठीक किया है। इसके बाद हिरन ने उन्हें सिपिंतुई से मिलवा दिया। वह खुशी-खुशी पति के साथ राजमहल लौट आई।

राजा ने सिपिंतुई के लौटने की बात गुप्त रखी। वह चुपचाप महल में रहती रही। एक दिन राजा ने माइरूंतुई की मां के पास संदेश भेजा— 'राजमहल में उत्सव का आयोजन किया गया है। आपको आना है।'

माइरूंतुई की मां बेटी से मिलने की इच्छा लेकर खुशी-खुशी आ पहुंची। राजा ने कहा— "आप अपनी बेटी से नहीं मिल सकतीं। दूर से ही उसे देख लीजिए।" और उसे सिपिंतुई को परदे के पीछे से दिखा दिया गया। उसने सिपिंतुई को अपनी बेटी ही समझा। वह मन मारकर लौट चली। राजा ने उसे भेंट स्वरूप एक कलश दिया। माइरूंतुई की मां ने रास्ते में कलश खोला, तो उसमें से मधुमक्खियां निकल पड़ीं। वह घबराकर दौड़ी, तो ठोकर खाकर गिर पड़ी। उठने लगी, तो उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। वह उसकी बेटी माइरूंतुई थी, जिसे राजा ने देश-निकाला दे दिया था। दोनों मां-बेटी गले मिलकर रोने लगीं। इसके अतिरिक्त और वे कर भी क्या सकती थीं।

(त्रिपुरा की लोककथा)

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय : **१५ मिनट**।

कहानी लिखो : १२९

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे **१० अगस्त, '९४ तक कहानी लिखो, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर प्रकाशित की जाएगी।

परिणाम : अक्तूबर '९४

चित्र-पहेली : १२९

गांधी जी से सम्बंधित किसी घटना पर एक रंगीन चित्र बनाइए। चित्र के पीछे **अपना नाम, आयु और पता** साफ-साफ लिखिए और १० अगस्त, '९४ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। पसंद किया गया चित्र 'नंदन' में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : नवम्बर '९४ अंक
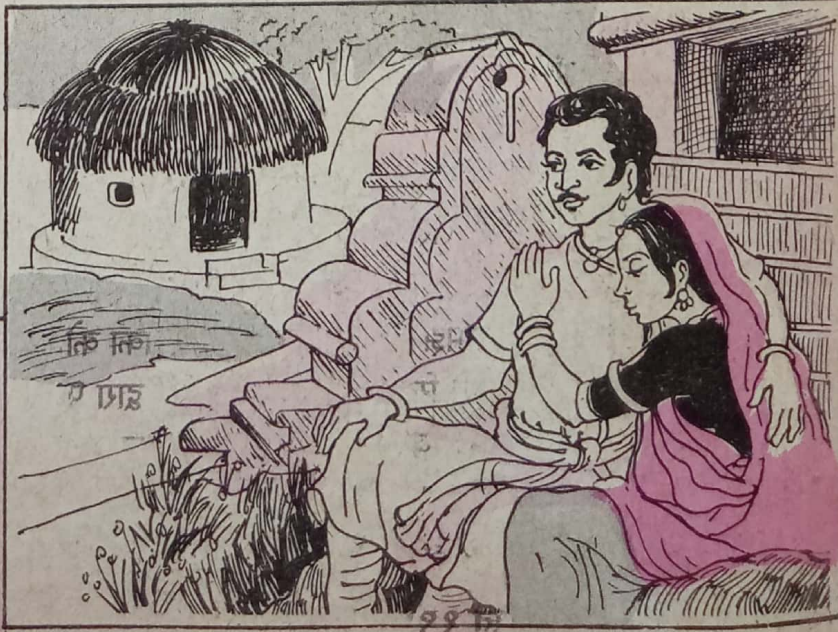
एक दिन, एक रात

—रामपाली भाटी

राजा सर्वजित अपनी प्रजा से बहुत प्यार करते थे। वह दिन-रात प्रजा की खुशहाली में लगे रहते थे। एक दिन उन्हें सूचना मिली कि पड़ोसी राज्य से कुछ लुटेरे उनके राज्य में आए हैं। वे रात में राहगीरों को लूटते हैं।

इससे निपटने के लिए राजा ने रात में वेश बदलकर नगर की देखभाल करने का निश्चय किया। एक रात उन्होंने नागरिक का वेश बनाया। वह घोड़े पर सवार होकर नगर भ्रमण को निकल गए। उनके अंगरक्षक उनसे कुछ दूर रह कर चल रहे थे।

अचानक एक गली से कुछ लुटेरे निकले। उन्होंने राजा को घेर लिया। लुटेरे राजा से घोड़ा छीनना चाहते थे। वे राजा को घोड़े से उतारने के लिए बढ़े। राजा के अंगरक्षक उनसे कुछ दूर थे। अतः अंधेरे में वे इस घटना को नहीं देख सके।

उसी समय दूसरी गली से चार युवकों का एक दल निकला। उनके नाम थे—माधव, केशव, राघव और गजानन। युवकों ने लुटेरों का सामना करके राजा की रक्षा की। तब तक राजा के अंगरक्षक भी वहां आ पहुंचे। उन्होंने लुटेरों को बंदी बना लिया।

राजा ने युवकों को अपना परिचय दिया। फिर उन्होंने युवकों से परिचय पूछा। एक युवक ने कहा—"हम राजधानी के आसपास के गांवों में रहते हैं। रोजगार की तलाश में राजधानी में आए हैं। राजधानी में लूटमार की घटनाएं रोकने के लिए हमने अपनी इच्छा से अपना एक दल बना लिया है। रात के समय हम बारी-बारी से इधर-उधर घूमते हुए लोगों की सहायता करते हैं।" यह सुन, राजा ने उनसे अगले दिन राजसभा में आने को कहा।

दूसरे दिन वे युवक राजसभा में पहुंचे। राजा ने उन्हें अपने हृदय से लगा कर उनका सम्मान किया। राजा सिंहासन पर बैठते हुए बोले—"मित्रो, जिस राज्य में तुम्हारे जैसे नागरिक हैं, वह राज्य किसी कठिनाई में नहीं पड़ सकता। तुम लोगों ने मेरी रक्षा करके अपने कर्तव्य का पालन किया है। मुझसे अपनी-अपनी पसंद की एक-एक वस्तु मांग लो।"

उनमें माधव गरीब घर का लड़का था। उसने कहा—"महाराज! मुझे एक सुंदर व बड़ा-सा मकान देने की कृपा करें।" राजा ने सिर हिला दिया।

केशव की बारी आई। केशव दरबारियों की जगर-मगर पोशाकें देख कर चकित हो रहा था। उसने कहा—"महाराज! आप मुझे अपना दरबारी बना लीजिए।" केशव की इच्छा भी उसी समय पूरी कर दी गई। अब राघव की बारी थी। राघव किसान का बेटा था। उसने कहा—"महाराज! मेरे गांव के किसान सब्जी व तरकारियां उगाते हैं। सब्जी बेचने के लिए गांव से हर रोज शहर जाना पड़ता है। गांव से शहर तक कोई सड़क नहीं है। आप मेरे गांव से शहर तक सड़क बनवा दें।" राजा ने मंत्री से सड़क बनवाने केलिए कह दिया।

राजा ने गजानन से पुरस्कार मांगने के लिए कहा। गजानन बोला—"महाराज! मेरी इच्छा है कि आप वर्ष भर में एक रात और एक दिन के लिए मेरे आजीवन अतिथि बनते रहें।"

गजानन की बातें सुन कर कुछ लोग हंस पड़े। राजा ने कहा—"बहुत अच्छा। तुम्हारी इच्छा के अनुसार हर साल एक दिन-रात के लिए तुम्हारा अतिथि जीवन भर बनता रहूंगा।" दरबार उठ गया।

एक महीना बीता। राजा ने गजानन का अतिथि बनने का निश्चय कर लिया। गजानन के गांव तक राजा की सवारी कैसे जाए! अतः राजमहल से वहां तक एक बढ़िया सड़क बनवाई गई। उसके दोनों ओर फूलों के वृक्ष लगवाने का काम शुरू हो गया। मंत्री ने सोचा—'एक साधारण घर में महाराज चौबीस घंटे कैसे रह सकेंगे?' इसलिए गजानन के गांव में एक महल तैयार कराया गया। नौकर-चाकर, हाथी, घोड़े, पालकी आदि का प्रबंध हो गया।

लाव-लश्कर पशु आदि का खर्च संभालने के लिए गजानन को सोने के सिक्कों भरी कुछ थैलियां भेंट की गईं।

सेनापति ने राजा से कहा—"महाराज! साधारण नागरिकों पर राजा कृपा तो कर सकते हैं, पर उसका मेहमान बनना आपको कैसे शोभा देगा?"

"ठीक कहते हो। मैं गजानन को अपना दरबारी बना लेता हूं।"—राजा ने कहा।

राजा रनिवास में पहुंचे। रानी को सारी बातें बताईं। रानी बोली—"महाराज! गजानन के घर में खाना पकाने वाला कौन है?"

राजा यह सुन, सोच में पड़ गए। फिर बोले—"यदि अपनी बेटी रत्ना का विवाह गजानन से हो जाए, तो यह समस्या भी दूर हो जाएगी।"

रानी को यह सुझाव अच्छा लगा।

कुछ ही दिनों में राजा ने राजकुमारी का विवाह गजानन से कर दिया।

समय बीता। धीरे-धीरे गजानन और उसके गांव की दशा बदल गई। उसने अपनी चालाकी से यह सब कुछ करा लिया था।

एक दिन राजा गजानन के घर गए। गजानन ने राजा का खूब आदर-सत्कार किया। उनकी बेटी रत्ना भी पीछे न रही। इस अवसर पर गजानन के मित्र भी आए थे। वे गजानन के ठाठ-बाट को देख उसकी बुद्धि का लोहा मान गए थे।
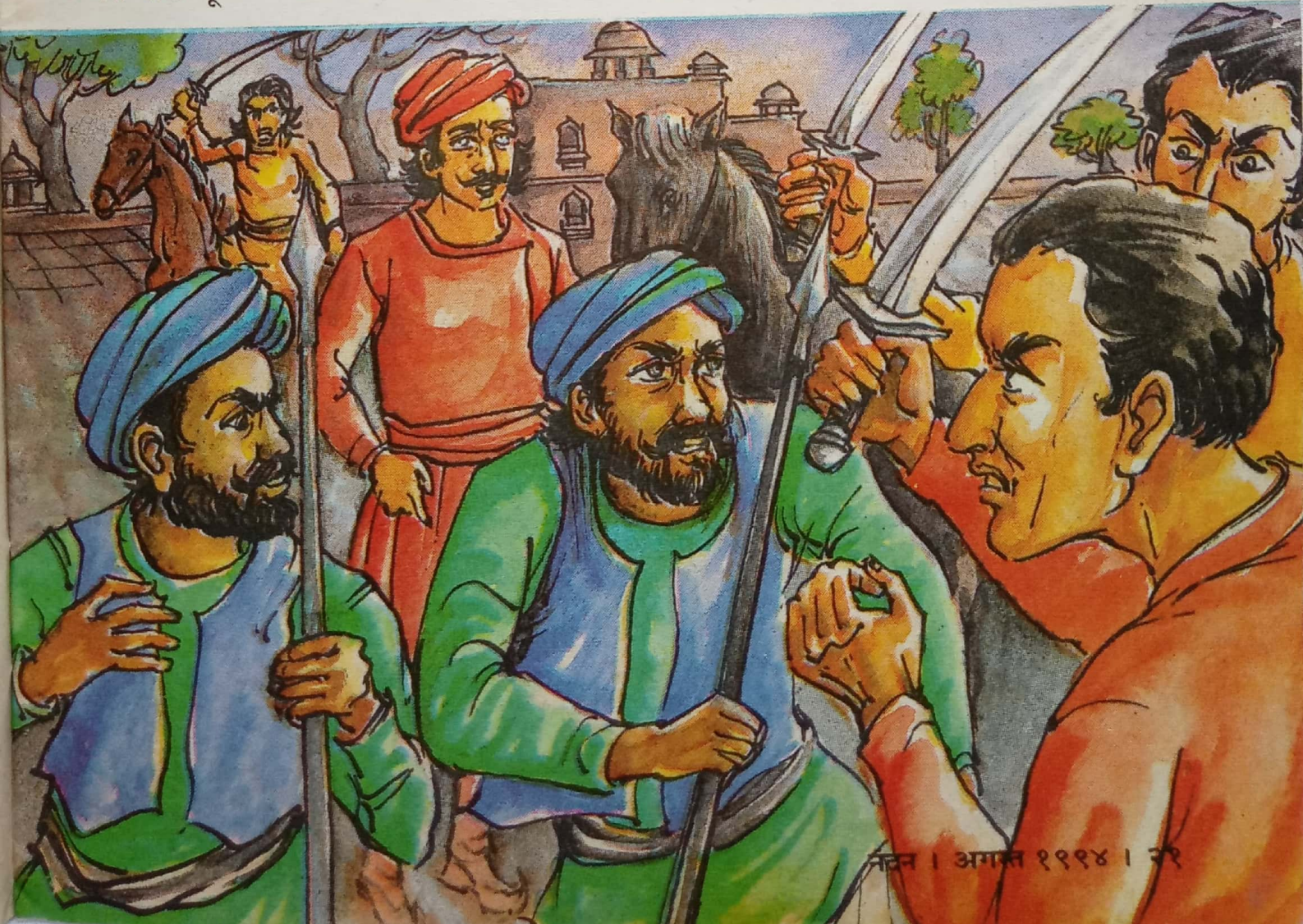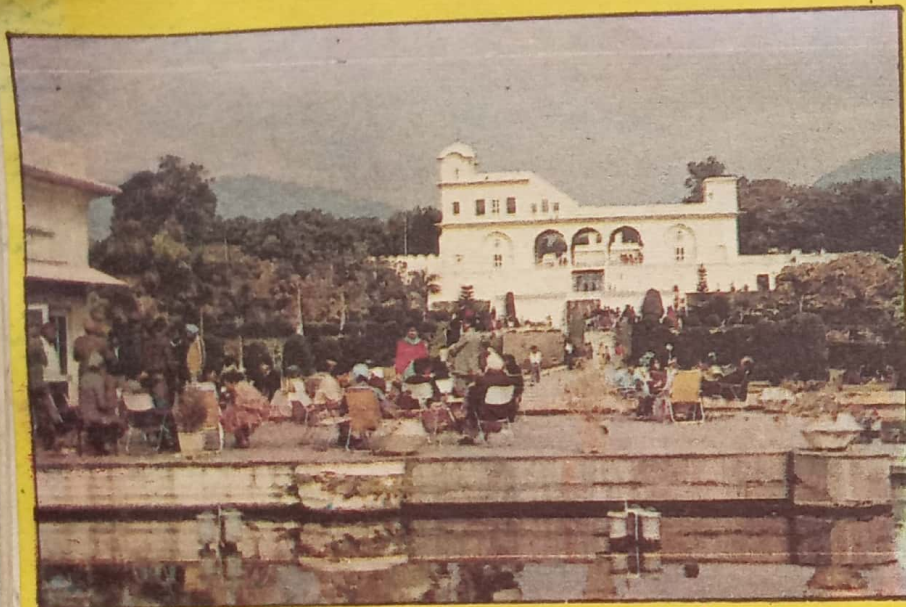
^ पिंजौर गार्डन, चंडीगढ़

^ ठंडा मीठा शर्बत

पिकनिक का मौसम आया

चित्र : राजेन्द्र कुमार वधवा, धर्मनाथ प्रसाद, श्याम सुंदर जोशी, विजय, दिलीप बनर्जी, देवेन्द्र अग्रवाल, एस. एम. दुधेडिया
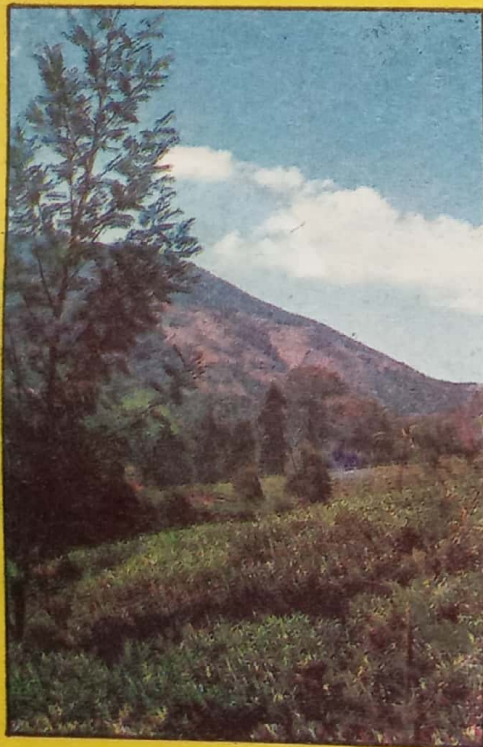
< ऊटी का दृश्य

^ इंडिया गेट, नई दिल्ली
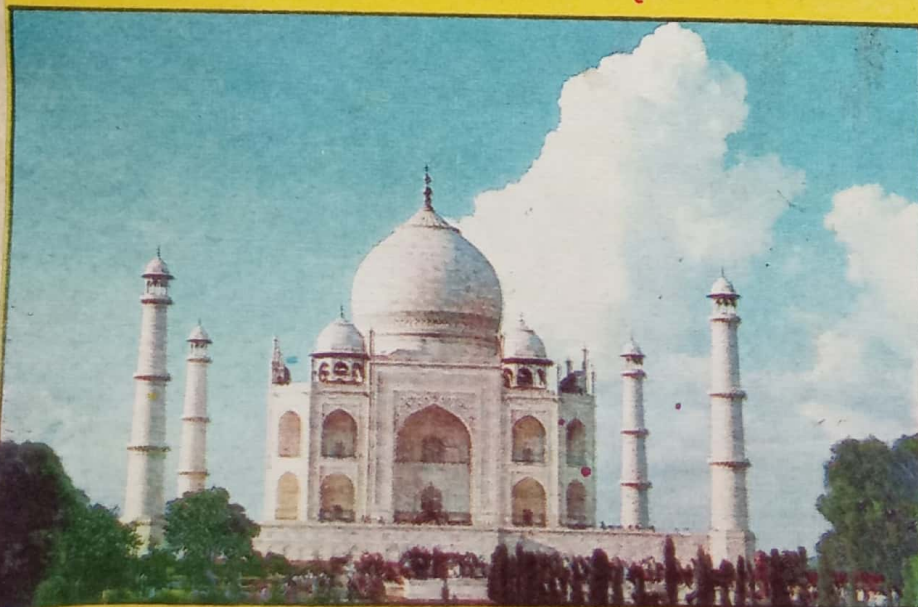
< ताजमहल, आगरा

V बुलंद दरवाजा, फतहपुर सीकरी

^एसेल वर्ल्ड, बंबई

^आम के बगीचे में
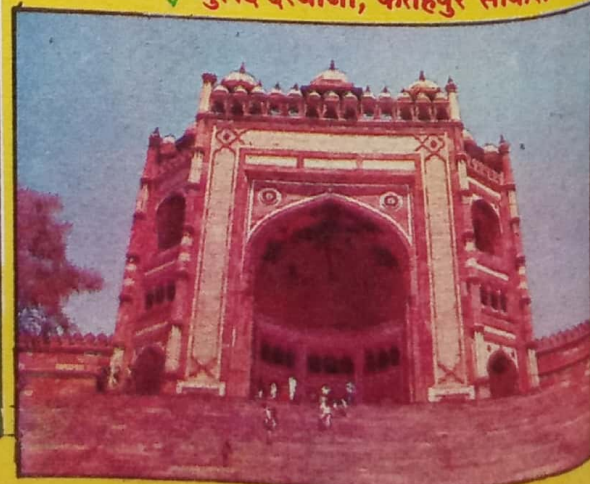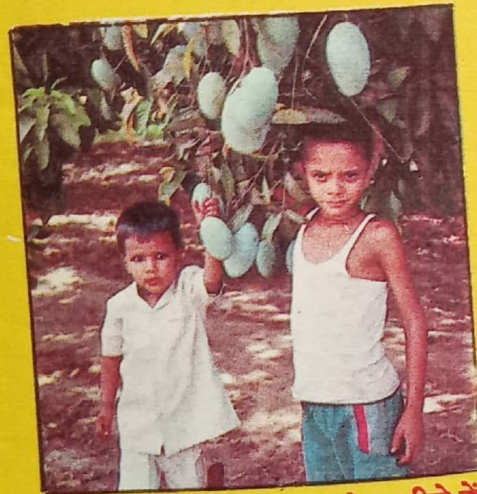
<पद्मिनी महल, चित्तौड़गढ़

^विजय स्तंभ, चित्तौड़गढ़

गोल्डन पार्क, मदरास V
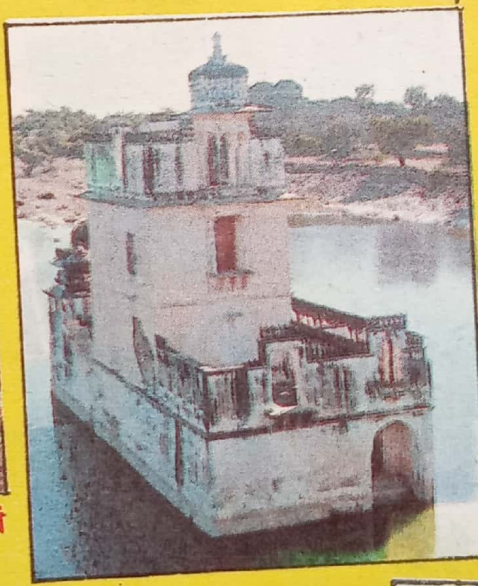
V ललिता महल, मैसूर
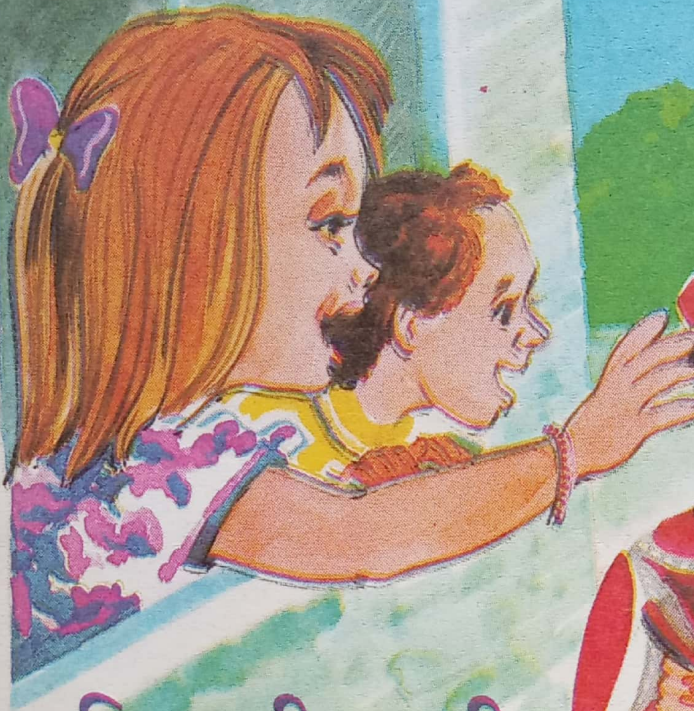
खिड़की वाली लड़की

—पेत्सुको कुरोयानागि

तोत्तो चान पहली बार रेलगाड़ी पर सवार हुई थी।

वह ओइमाचि लाइन से जियूगाओक स्टेशन पर उतरी। वह टिकट चैकर के पास ढेर सारी टिकटें देखकर हैरान थी। उसने सोचा— 'मैं बड़ी होकर टिकट चैकर बनूंगी। रंग-बिरंगी टिकटें जमा करूंगी। जासूस बनने का इरादा अब मैंने छोड़ दिया है। मैं अब बनूंगी तो सिर्फ टिकट चैकर।'

तोत्तो चान की मां को केवल एक ही चिंता थी कि एक स्कूल से निकाल दी जाने वाली इस लड़की को दूसरे स्कूल में दाखिला मिलेगा या नहीं। पहली कक्षा में पढ़ने वाली तोत्तो चान ने पूरी कक्षा को तंग कर रखा था। वह कक्षा में कम से कम सौ बार डेस्क खोलती और बंद करती। खिड़की पर खड़ी रहकर उधर से गुजरने वाले बैंड बाजे को देखकर, खुशी से नाच उठती। उनसे धुन बजाने को कहती।

उसकी देखा-देखी दूसरे बच्चे भी खिड़की पर खड़े होकर, बैंड बाजा सुनते। वे बच्चे लौट आते, पर तोत्तो चान खिड़की पर ही खड़ी रहती। इन्हीं कारणों से तोत्तो चान को स्कूल से निकाल दिया गया था। मां तोत्तो चान को दूसरे स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए इधर-उधर मारी-मारी फिर रही थी।

इसी उधेड़बुन में मां को पता ही नहीं चला कि वह नए स्कूल के द्वार पर कब पहुंची। वहां कमरे के नाम पर रेलगाड़ी के छह डिब्बे थे। चारों तरफ सन्नाटा ही

सन्नाटा। लाल-पीले फूलों से सजा और महकता मैदान। द्वार के नाम पर दो ऊंचे-ऊंचे पेड़ जिन पर लिखा था -'तोमोए-गाकुएन'।

हेड मास्टर का नाम था सोसाकु कोबायाशि। उन्होंने विदेश में रहकर बच्चों को पढ़ाने के नए तरीकों की खोज भी की थी।

हेड मास्टर ने तोत्तो चान से अकेले में बातचीत करने की इच्छा जाहिर की। तोत्तो चान ने बिना किसी संकोच के अपने पिता के पियानो, मां की रसोई, अपने कपड़ों और जर्मन शेंफर्ड रॉकी जो उसके पीछे-पीछे चलता, सुख में सुखी और दुःख में दुखी होता था, तक के बारे में हेड मास्टर को सब कुछ बता दिया।

-'बच्ची वास्तव में ही बहुत अच्छी है।' —हेड मास्टर ने सोचा।

'सामने वाले व्यक्ति हेड मास्टर हैं या स्टेशन मास्टर।' —तोत्तो चान इसी उधेड़बुन में थी।

हेड मास्टर और तोत्तो चान को समय का पता ही नहीं चला। एक को दाखिला देने की खुशी थी और दूसरे को दाखिला पाने की।

खैर, मां-बेटी घर लौटीं। रात हुई। मां सो गई। लेकिन तोत्तो चान रात भर सो नहीं पाई। पौ फटने से पहले ही वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो चुकी थी। रॉकी उसके बदलाव को समझ नहीं पा रहा था।

स्कूल में पचास बच्चे थे। तोत्तो चान की कक्षा में नौ बच्चे थे। उन्हें अधिकतर रेलगाड़ी के डिब्बे में सवार रहना पड़ता था।

वहां खुला वातावरण था। कहीं कोई पाबंदी नहीं। जहां मर्जी बैठो, गुनगुनाओ, लिखो, पढ़ो या तसवीर बनाओ। खाने की घंटी बजने पर सभी बच्चे एक बड़े कमरे में इकट्ठे होते थे। वहां का नियम था कि खाने में कुछ पहाड़ का और कुछ समुद्र का जरूर होना चाहिए। सलाद, आलू, सब्जी वगैरह यही उन बच्चों का भोजन था। सभी बच्चे अपना-अपना डिब्बा खोलते, खाना खाते। बीच-बीच में कविता की पंक्तियां भी गुनगुनाते।

खाना खाने के बाद सभी बच्चे सैर को निकल पड़े कु होनबुत्सु मंदिर की तरफ। आकाश की छत छूते दोनों ओर ऊंचे-ऊंचे पेड़ थे। रंग-बिरंगे फूलों और हवा में उड़ती तितलियों की बहार थी। बांस के घने जंगलों में तथागत बुद्ध को नमस्कार कर, बच्चे स्कूल में लौट आए।

स्कूल में सभी बच्चों को एक-एक पेड़ दे दिया गया था। वह पेड़ उस बच्चे की सम्पत्ति मानी जाती थी। वह चाहे, तो उसकी छाया के नीचे बैठे या परिंदे की तरह डाल पर उछले-कूदे।

सभी बच्चे एक दूसरे को अपने-अपने पेड़ पर निमंत्रण देते थे। तोत्तो चान ने भी यमामोतो को अपने पेड़ पर चढ़ने का निमंत्रण दिया।

गर्मी की छुट्टियों में तीन दिन का कैम्प लगा। बच्चों ने टैंट लगाए। चांद-सितारे देखे। वे बिना तैराकी सूट के खूब तैरे। उन्होंने हेड मास्टर से यूरोप-यात्रा के संस्मरण सुने। वे बहुत प्रसन्न थे। पर तोत्तो चान दुखी थी क्योंकि रॉकी कैम्प में नहीं आया था।

पहली कक्षा के बच्चे गर्म पानी के चश्मे देखने गए। कुछ बच्चों ने समुद्र यात्रा पहली बार की। जहाज में बैठे बच्चे नीला आकाश और नीले पानी को देखकर बहुत खुश थे।

तोइस्पा नामक नगर बहुत सुंदर था। वहां के लोग भी बहुत भले थे। बच्चों ने मिल-जुलकर सब्जी और फल वगैरह उनसे खरीदे। ईंट के चूल्हे बनाए। खाना पकाया, खाया और इधर-उधर की बातें कीं।

स्कूल में बढ़िया कपड़े पहनने पर पाबंदी थी। साधारण और फटे-पुराने कपड़े पहनने पर बल दिया जाता था। जहां चाहो, वहां बैठो, लोट-पोट करो। मां-बाप पर किसी तरह का कोई दबाव भी नहीं था।

उन्हीं दिनों तकाहाशि नाम का एक बच्चा स्कूल में

पेत्सुगो कुरोयानागि— बचपन में लेखिका का नाम था तोत्तो चान। जापानी दूरदर्शन में इनका बहुत नाम है। 'खिड़की से झांकती लड़की' को बच्चे और बड़े सभी पसंद करते हैं। यहां इसकी संक्षेप में कथा दी जा रही है। — सं.

दाखिल हुआ। वह ओसाका नगर का रहने वाला था। वह दूसरे बच्चों को तरह-तरह की कहानी सुनाता। उनके लिए किताबें लाता। वह बच्चों को हर तरह खुश रखता था।

स्कूल का खेल-कूद दिवस भी निराला था। अलग-अलग खेल और अपने ढंग के बच्चों को पुरस्कार। पुरस्कार में बंद गोभी, मूली, गाजर और सब्जियां दी जातीं। बच्चों को लगता कि घर की रसोई में उनका भी हिस्सा है।

सर्दी की छुट्टी के बाद बच्चों ने देखा कि उनकी रेलगाड़ी में एक डिब्बा और जुड़ गया है। उस डिब्बे को पुस्तकालय कहा जाता था। उसमें कोई एक बच्चा कहानी पढ़ता और दूसरे बच्चे सुनते। कोई गीत गुनगुनाता, तो कोई झूमता। बच्चे भी दूसरों की सुविधा का ध्यान रखकर मौन हो जाते थे।

वसंत आ चुका था। कोमल कोंपलों ने पेड़ों को ढक लिया था। एक दिन बच्चों ने देखा कि उन्हें खेतीबाड़ी सिखाने के लिए एक नए अध्यापक आए हैं। बच्चे उनके मुसकराते होंठ और चेहरे को देखते रहते। समतल जमीन में क्यारियां थीं। क्यारियों में सब्जियां लगी थीं। वहां अनाज उगे थे। अनाज में कीट-पतंग और कभी-कभी सांप भी लोट मारते थे। नए अध्यापक ने उनसे कहा— "यदि तुम सांप से दोस्ती करोगे, तो सांप भी तुम्हारे दोस्त बन जाएंगे।"

पांच मई का दिन था। जापान का बाल दिवस। दूसरे बच्चों के साथ तोत्तो चान पहली बार घायल जवानों से मिलने अस्पताल गई।

बच्चों ने जवानों को गीत सुनाए। गीत सुन, एक जवान की आंखों में आंसू भर आए। शायद उसे भी अपनी बेटी की याद आ गई थी।

बच्चे घर के दरवाजों-दीवारों पर कुछ नहीं लिखते थे। क्योंकि स्कूल में उन्हें फर्श पर लिखना-मिटाना और साफ करना सिखाया जाता था। उन्हें जल्दी ही मालूम हो गया कि लकीरों को मिटाना कितना मुश्किल है। चाक को कैसे पकड़ें और बिना तोड़े कैसे लिखें? यह सब बच्चों को बहुत जल्दी मालूम हो गया।

एक दिन मियाजाकि नाम का एक बच्चा दाखिल हुआ। वह अमरीका में जन्मा था। वहीं पलकर बड़ा भी हुआ था। वह अंग्रेजी की सुंदर किताबें लाता था। वह जापानी सीखता था।

वसंत की छुट्टी के बाद बच्चे स्कूल आए। हेड मास्टर ने उदास स्वर में उनसे कहा— "यासुअकि चान नहीं रहा। हम सब उसके अंतिम संस्कार में शामिल होंगे।"

चर्च सफेद नरगिस के फूलों से भरा था। यासुअकि की मां, बहन और रिश्तेदार काले वस्त्रों में लिपटे थे। सभी बच्चों ने बारी-बारी से एक-एक सफेद फूल अपने दोस्त के शव पर रखा।

"अभी तो मैं 'अंकल टॉमस केबिन' किताब नहीं लौटा सकी। शायद हम फिर कभी मिलेंगे, तब तक वह किताब मैं अपने पास रखूंगी।"— तोत्तो चान ने अपने दोस्त के शव पर फूल चढ़ाते हुए कहा। उसकी आंखें सजल थीं।

कामाकुरा से लौटने पर तोत्तो चान को पता चला कि उसका रॉकी खो गया है। उसने सोचा—'कहीं वह भी यासुअकि की तरह उसे छोड़कर चला तो नहीं गया।'

श्योचान तोयोको ट्रेन से युद्धभूमि की ओर गया। जापान के आकाश पर अमरीकी वायुयान मंडराने लगे। सब कुछ जलकर राख हो गया। पेड़ और फूलों की क्यारियों के बीच तोमेए जल कर राख हो गया। हेड मास्टर अपने सपने को जलता हुआ देखता रहा।

अजनबी यात्रियों का भार लिए स्कूल की रेलगाड़ी अंधेरे में खो गई।

तोत्तो चान न अध्यापिका बनी और न ही जासूस। बल्कि वह दूरदर्शन की नामी हस्ती बन गई। तकाहाशि इंजीनियर, मियो चान संगीत-शिक्षक और मिगिता सुलेख लिखने वाली लेखिका बनी।

ये सभी हर साल तीन नवम्बर को अपने स्कूल को याद करते हैं और हेड मास्टर के प्रति आदर प्रकट करते हैं। (प्रस्तुत : डा. राज बुद्धिराजा)

सब दे दिया

—जसविंदर शर्मा

एक था सामंत। उसके तीन बेटे थे। वे एक ही राजकुमारी से शादी करना चाहते थे।

एक दिन राजकुमारी ने उनसे कहा— "तुम में से जो मेरे लिए अति उपयोगी वस्तु ढूंढ़कर लाएगा, मैं उसी से विवाह करूंगी।"

बेटों ने यह बात अपने पिता को बताई। पिता ने उन्हें सोने की मुहरों से भरी एक-एक थैली देकर विदा कर दिया।

तीनों भाई अलग-अलग दिशा में निकल गए। एक दिन घूमते हुए बड़े भाई ने जादुई कालीन खरीदा। कालीन पर बैठकर कहीं भी आ-जा सकते थे।

मंझले ने जादुई शीशा और छोटे ने जादुई सेब खरीदा।

कुछ दिन बाद वे एक स्थान पर मिले। इकट्ठे वापस घर आ रहे थे, तो उन्होंने अपनी-अपनी लाई वस्तुएं एक दूसरे को दिखाईं। तभी एक ने कहा— "हम अपने घर से दूर हैं। जरा जादुई शीशे में झांककर देखें तो सही वहां क्या हाल है।"

मंझले भाई ने शीशे में झांका, साथ में दूसरे भाइयों ने भी देखा। घर पर सब ठीक थे, पर राजकुमारी बहुत बीमार थी। बड़े भाई ने अपना कालीन बिछाया। वे उस पर बैठकर उड़ते हुए राजकुमारी के पास पहुंच गए। वैद्य ने बताया कि बीमारी असाध्य है। सबसे छोटे भाई ने जेब से जादुई सेब निकाला तथा उसका रस राजकुमारी को पिला दिया। राजकुमारी भली चंगी हो गई। अब पिता ने पूछा— "राजकुमारी, तुम इनमें से किस से शादी करना चाहोगी?"

राजकुमारी थोड़ा सोचते हुए बोली— "एक ने शीशे में देखकर मेरी सुध ली। दूसरा अपने भाइयों को कालीन पर बैठाकर यहां लाया। मैं दोनों की कृतज्ञ हूं। तीसरे ने सेब का रस पिला कर मुझे जीवन दान दिया। शादी मैं सबसे छोटे से करूंगी। उसने अपना सब कुछ मुझे दे दिया।" ●

फिर पूनम की रात

—विभावरी सिन्हा

एक छोटे-से गांव में बीकू नाम का लड़का अपने माता-पिता व भाई-बहनों के साथ रहता था। बीकू की उम्र बढ़ने लगी। लेकिन उसकी लम्बाई न बढ़ी। यह देख उसके माता-पिता कुछ चिंतित हो गए, क्योंकि उसके अन्य भाई-बहन सामान्य रूप से बढ़ रहे थे।

बीकू अठारह वर्ष का हो गया, लेकिन उसका कद ठिगना ही रहा। सब उसे 'बीकू बौना' कहकर चिढ़ाने लगे। यहां तक कि उसके माता-पिता और भाई-बहन भी उसका मजाक उड़ाते, उसे चिढ़ाते और दुर्व्यवहार करते। यह देखकर बीकू बहुत दुखी होता।

एक दिन तंग आकर बीकू चुपचाप घर छोड़कर निकल गया। चलते-चलते वह दूसरे राज्य में पहुंच गया। कमाने के लिए उसने काम ढूंढ़ना शुरू किया। कोई भी उसके नाटे कद को देखकर काम नहीं देता था, ऊपर से खिल्ली और उड़ाते थे।

बीकू ने कुछ विचार किया, फिर खुद ही छोटे-मोटे करतब तथा खेल सड़क पर दिखाने शुरू कर दिए। अब लोग उसका खेल देखकर पैसे देने लगे। इस तरह उसकी जीविका चलने लगी। अभ्यास करते-करते बीकू नट के करतब दिखाने में निपुण हो गया।

लोगों ने उससे कहा कि वह अपने करतब राजा को दिखाए। हो सकता है, राजा प्रसन्न होकर इनाम दें। बीकू ने सोचा कि यह विचार भी बुरा नहीं। वह अगले ही दिन दरबार में जा पहुंचा। दरबार पूरा भरा हुआ था। एक रत्नजटित सिंहासन पर राजा-रानी और दूसरे सिंहासन पर राजकुमारी बैठी हुई थी।

बीकू को देखते ही राजकुमारी जोर से हंस पड़ी। राजा-रानी तथा दरबारी भी बीकू को देखकर हंसने लगे, उसके बौनेपन का मजाक उड़ाने लगे।

राजकुमारी ने कहा— ''ऐसा कुरूप बौना तो मैंने कभी देखा ही नहीं। यह भला क्या खेल दिखाएगा? यह तो खुद ही हंसी का पात्र है। इसकी जगह तो अजायबघर में ही ठीक रहेगी।''

इतना सुनना था कि बीकू का दिल राजकुमारी के प्रति नफरत और गुस्से से भर गया। भीतर ही भीतर वह रो पड़ा। राजकुमारी एवं समस्त दरबार को हंसते छोड़, वह आवेश में बाहर निकल गया। अपनी धुन में मस्त बीकू चलता गया, चलता गया। उसे समय का भी कुछ होश नहीं था। यहां तक कि राज्य की सीमा खत्म हो गई और एक घना जंगल आ गया। बीकू एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा।

रोते-रोते रात हो गई। वह अपने आपको कोस रहा था। ईश्वर से मना रहा था कि कोई जंगली जानवर आकर उसे खा जाए, तो ऐसे भद्दे शरीर व दुखी जीवन से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाए। इसी तरह रोते-कलपते उसकी आंख लग गई। आधी रात के समय अचानक तेज रोशनी की चकाचौंध से उसकी नींद खुल गई।

बीकू अचकचाकर खड़ा हो गया। देखा-सुनहरा प्रकाश चारों तरफ फैला हुआ है। सामने सुनहरे पंखों वाली सुंदर परी खड़ी है।

सुनहरी परी ने उदास बीकू को देखकर मीठी आवाज में कहा— ''क्यों रो रहा है बीकू?''

बीकू ने कहा— ''आप कौन हैं और यहां कैसे आईं?''

परी ने कहा— ''मैं सुनहरी परी हूं। हर पूर्णिमा की रात को मैं अपने देश से यहां आती हूं। हर व्यक्ति

का दुःख दूर करती हूं। मुझसे दूसरे का दुःख देखा नहीं जाता। इसीलिए तुम्हें रोते देखकर यहां चली आई। तुम बताओ क्या कष्ट है ?''

बीकू ने दुखी होकर कहा— ''मैं एक कुरूप बौना हूं। लोग मुझे देखकर मेरा मजाक उड़ाते हैं। और तो और मेरे माता-पिता भी मुझसे नफरत करते हैं। आज राजमहल में राजकुमारी ने भी मेरा बहुत मजाक उड़ाया, मेरा अपमान किया। इसीलिए मैं चाहता हूं कि मेरी मौत हो जाए। आखिर ईश्वर ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया ?''

सुनहरी परी ने हंसकर कहा— ''बीकू ! दुखी मत हो। मैं तुम्हें एक फल देती हूं। तुम कल राजमहल में फिर से खेल दिखाने के लिए जाना। वहां जाकर मेरे दिए फल को खा लेना। फिर देखना कि क्या होता है।'' यह कहकर परी ने बीकू को सोने के रंग वाला मीठा फल दिया और गायब हो गई।

बीकू अगले ही दिन फिर राजमहल जा पहुंचा। उसे देखकर राजकुमारी फिर उसका मजाक उड़ाने लगी। बीकू ने तुरंत सुनहरी परी का दिया हुआ फल खा लिया। बीकू बौना एक सुंदर युवक के रूप में बदल गया था। उसके शरीर पर राजकुमार जैसे कीमती वस्त्र, पांव में सोने के जूते तथा हाथ में हीरे की अंगूठी थी।

देखते ही देखते उस पर हंसने वाली राजकुमारी एक कुरूप, ठिगनी तथा भयानक स्त्री के रूप में बदल गई। यह देखकर सब घबरा गए। राजा-रानी ने बीकू से कहा— ''हमें क्षमा करना। तुम एक सुंदर राजकुमार हो, यह तो हमें पता नहीं था। तुम में तो दिव्य शक्ति है। हमने तथा हमारी बेटी ने तुम्हारा मजाक उड़ाया, इसके लिए हमें बहुत खेद है। राजकुमारी को ऐसी सजा मत दो।''

राजकुमारी लगातार रो रही थी। वह भी बीकू से क्षमा मांगने लगी।

बीकू भोला-भाला था। उसे तुरंत दया आ गई। उसने कहा— ''ठीक है, मुझे अगली पूर्णमासी तक का समय दो।''

पूर्णिमा की रात को बीकू फिर जंगल में पहुंचा। जैसे ही आधी रात हुई पूरे जंगल में सुनहरी प्रकाश फैल गया और सुनहरी परी उसके सामने प्रकट हो गई। परी ने कहा— ''बीकू, अब तो तू बौना नहीं रहा। तेरी मनोकामना पूर्ण हुई, फिर तू क्यों चिंतित है ?''

बीकू ने कहा— ''मुझसे भी किसी का दुःख नहीं देखा जाता। घमंडी राजकुमारी की यह दुर्दशा मेरे कारण हुई है। उसने अब माफी भी मांग ली है। क्या राजकुमारी को उसके वास्तविक रूप में नहीं बदला जा सकता ?''

सुनहरी परी ने कहा— ''बीकू, तू बड़ा दयालु है। राजकुमारी को अपनी करनी का फल मिला है। मैं तुम्हें एक दूसरा फल देती हूं। यह फल राजकुमारी को खिला देना। फिर वह अपने वास्तविक रूप में आ जाएगी।''— यह कहकर परी फिर गायब हो गई।

बीकू ने अगले दिन राजमहल में जाकर राजकुमारी को दूसरा फल खिला दिया। फल खाते ही वह फिर से सुंदर राजकुमारी में बदल गई। राजा ने बीकू को धन्यवाद दिया। साथ ही कहा— ''मैं बहुत दिनों से राजकुमारी के लिए सुंदर वर की खोज कर रहा था। भला तुमसे अधिक योग्य वर और कौन हो सकता है !'' अब वह बीकू नहीं, बल्कि राजकुमार विजयेंद्र बन गया था। परी ने उसका जीवन सुख से भर दिया था। ●
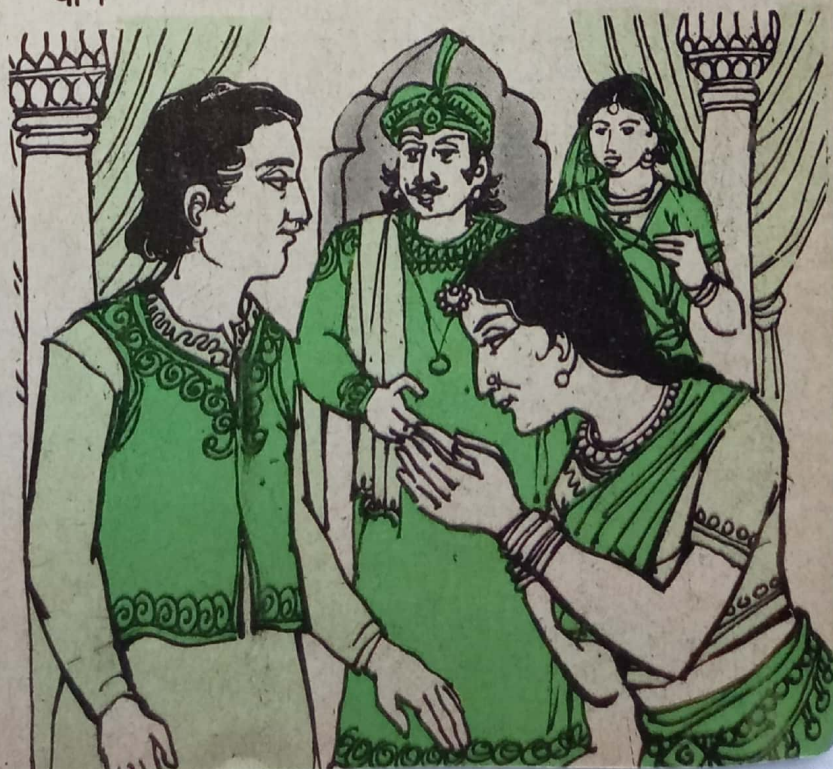
गाते मेघ

बहुत बड़े गहरे सागर से
पानी भरकर लाते मेघ,
गरमी के नटखट बेटों को
डटकर डांट पिलाते मेघ।
झूम-झूमकर सारे नभ में
कजरी-आल्हा गाते मेघ,
नन्ही-नन्ही बूंदों से फिर
धरती को नहलाते मेघ।
सूखे पड़े नदी-नालों से
हंसकर हाथ मिलाते मेघ,
कहीं-कहीं पर खूब बरसते
कहीं-कहीं तरसाते मेघ।
काले-काले बड़े रसीले,
जामुन खूब खिलाते मेघ।

—रामभरोसे गुप्त 'राकेश'

सावन के दिन

आए सावन के दिन प्यारे।
उमड़-घुमड़ करके नभ में फिर
खुशियां लेकर आए हैं घिर,
ये बादल कजरारे।

रिमझिम-रिमझिम जल बरसाते
गरज-गरजकर शोर मचाते,
चले मेघ बनजारे।

सावन का खत लेकर आए
आकर आसमान में छाए,
मौसम के हरकारे।

नई उमंगें लेकर मन में
नाचे मोर-पपीहे वन में,
मधुर गीत गा-गा रे।

—रामानुज त्रिपाठी

छोटू चूहा

दूध पी गई बिल्ली मौसी,
मुंह में लगी मलाई।

देख मलाई उजली-उजली
सब चूहे ललचाए,
सोच रहे बिल्ली के मुंह तक
कैसे पहुंचा जाए।
सोई बिल्ली जाग गई तो
अपनी नहीं भलाई!

कुछ ने सोचा, बिल्ली मौसी
अगर नींद से जागे,
पहले तय हो जाए
छोटू चूहा कैसे भागे।
यह तो डरता है बिल्ली ने—
दुम भी अगर हिलाई!

खटपट सुनकर बिल्ली जागी
झटपट आई आगे,
बिजली गुल हो गई अचानक
सारे चूहे भागे।
छोटू चूहा रोकर बोला—
लाओ दियासलाई!

—अमरनाथ श्रीवास्तव

खेलें, नाचें, गाएं

खेलें, नाचें, गाएं
कूद-कूदकर खूब नहाएं,
खेलें, नाचें, गाएं
चिड़िया को चिढ़ाकर
हम तो फुर्र-फुर्र हो जाएं!
खेलें, नाचें, गाएं,
तोतों से बतियाएं,
खेलें, नाचें, गाएं
बागीचे में घूम-घूमकर
सबको खूब हंसाएं!
खेलें, नाचें, गाएं
पकड़ पूंछ बंदर की
हम तो ऊंचे चढ़ते जाएं,
खेलें, नाचें, गाएं
खेल-खेल में ही सबको
हम तो खूब नचाएं!
खेलें, नाचें, गाएं
पेड़ों पर ऊंचा चढ़कर
आसमान में दौड़ लगाएं,
खेलें, नाचें, गाएं
चंदा बनकर,
सब तारों पर अकड़ दिखाएं!

—चिन्मय कुलश्रेष्ठ

उड़नखटोला

—प्रीति अग्रवाल

पुराने जमाने में एक राजा था। उसकी दो रानियां थीं।

पहली रानी निस्संतान थी, इसलिए राजा ने दूसरी शादी की। दूसरी रानी अत्यंत सुंदर थी। उसका स्वभाव बहुत अच्छा था, इसलिए राजा उसे बहुत चाहता था। राजा का जीवन बहुत सुख से व्यतीत हो रहा था। दुःख केवल एक ही बात का था कि उसकी कोई संतान नहीं थी। राजा को एक ही चिंता सताती रहती थी कि उसके बाद इस विशाल राज्य का उत्तराधिकारी कौन बनेगा। इस चिंता से उबरने के लिए वह अधिकतर समय शिकार खेलने में व्यतीत करने लगा। राजा ने अनेक ज्योतिषियों को अपनी कुंडली दिखाई, पूजा-पाठ तथा यज्ञ-दान करवाए।

कुछ दिनों बाद रानी के पेट में दर्द उठा। बच्चा होने वाला था। उसने बड़ी रानी को पुकारा। पर रानी ने झांका तक नहीं। राजा बाहर गए हुए थे। बड़ी रानी, जो कि छोटी रानी से ईर्ष्या करने लगी थी, अब सावधान हो गई। उसने देखा कि राजा तो दूर देश गया है, तो उसने अपनी चाल चली। उसने छोटी रानी को एक जड़ी सुंघा दी। वह बेहोश हो गई। छोटी रानी ने एक लड़के और एक लड़की को जन्म दिया। किंतु वह इन बच्चों को देख नहीं पाई। बड़ी रानी ने इन दोनों बच्चों को एक पिटारे में बंदकर नदी में बहा दिया और बच्चों के स्थान पर दो बैडोल पत्थर रख दिए।

जब राजा को छोटी रानी के प्रसव का संदेश मिला तो उसने बड़ी रानी से पूछा कि क्या जन्म लेने वाला शिशु स्वस्थ है? बड़ी रानी ने जवाब दिया—"महाराज, आपके राज्य में पत्थरों की कमी आ गई थी, इसलिए छोटी रानी ने इन दो पत्थरों को जन्म दिया है।"

इस घटना से राजा को बहुत दुःख हुआ।

इधर पिटारे में बंद दोनों बच्चे नदी की धारा के साथ बहते जा रहे थे। उन्हें भूख-प्यास लगी थी,
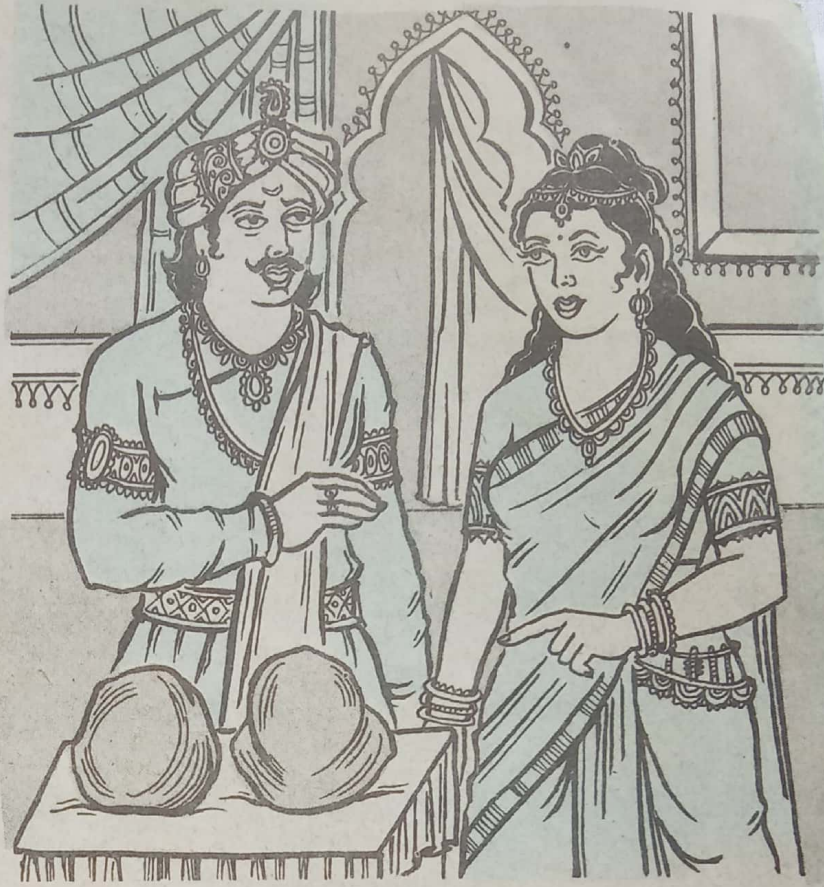
इसलिए पिटारे के अंदर से उनके रोने की आवाज आ रही थी। यह पिटारा एक नगर के पास पहुंचा। वहीं घाट पर एक साधु, भगवान की पूजा में मग्न थे। उन्होंने नदी में बहते हुए पिटारे से रोने की आवाज सुनी। वह नदी में कूद गए। पिटारे को घाट पर लाए। उसे खोलकर देखा, तो उसमें सुंदर-सुंदर दो छोटे बच्चे थे। वे भूख-प्यास से पीड़ित होकर रो रहे थे।

साधु को उन पर दया आ गई। वह उन्हें अपनी कुटिया में ले गए और उनका बड़े लाड़-प्यार से पालन-पोषण करने लगे। वे दोनों बच्चे उन्हीं की छत्र-छाया में बड़े हो रहे थे। जब दोनों बच्चे जवान हुए, तो उन्होंने साधु से कहा—"हम आपके पास बहुत दिन रहे। अब हमारी इच्छा संसार में भ्रमण करने की है। आप हमें आज्ञा दीजिए, ताकि हम घूम-फिर सकें।"

साधु ने केवल आज्ञा ही नहीं दी, बल्कि उन्हें एक उड़नखटोला भी दिया। बोले—"इस उड़नखटोले पर बैठकर तुम जहां इच्छा करोगे, यह आकाश मार्ग से तुम्हें वहीं पहुंचा देगा। उड़नखटोले को नीचे उतारने के

लिए तुम्हें केवल यही कहना पड़ेगा कि 'जय-जय महाराज के उड़नखटोले, तुम हमें यहीं उतार दो ।' इस उड़नखटोले में तुम्हारे लिए सारी सुविधाएं हैं । इच्छा मात्र से ही खाने-पीने की चीजें तुम्हारे सामने आ जाएंगी ।''

साधु के द्वारा दिए गए उड़नखटोले पर दोनों बच्चे बैठ गए । वे देश-विदेश की यात्रा का आनंद लेने लगे । एक दिन उड़ते-उड़ते जब रात का अंधेरा घिरने लगा, तो इन्होंने उड़नखटोले से कहा— 'जय-जय महाराज के उड़नखटोले, हमें यहीं उतार दीजिए तथा सोने का महल तैयार कर दीजिए ।'

उड़नखटोला वहीं उतर गया और तत्काल वहां सोने का महल तैयार हो गया ।

जब सवेरा हुआ, तो आसपास की जनता महल को देखकर हैरान रह गई । सोने के महल में राजमहल के समान ही सारी सुविधाएं थीं । नौकर-चाकर थे । ये दोनों भाई-बहन राजकुमार और राजकुमारी जैसे रहने लगे । संयोग से वे उसी राज्य में उतरे थे, जो उनके माता-पिता का था । दिन बीतते गए । राजकुमार व राजकुमारी उड़नखटोले से यात्राएं करते और लौटकर अपने सोने के महल में आ जाते ।

एक दिन की बात है, उनके महल में पास के नगर का एक नाई आया । राजकुमार और राजकुमारी ने नाई का स्वागत -सत्कार किया । उससे अपने महल की कमियों के बारे में पूछा । नाई ने राजमहल में जो-जो चीजें होनी चाहिएं, उनकी जानकारी उन्हें दी । उसने यह भी सलाह दी —'आप लोग एक तोता जरूर पालें । और किसी दिन पास के नगर की जनता को भोजन पर आमंत्रित करें ।'

नाई के कहे अनुसार राजकुमार व राजकुमारी ने तोता पाला । नगर के लोगों को भोजन पर आमंत्रित किया । भोजन करने सभी लोग आए, लेकिन राजा और रानी नहीं आए । तोता सब कुछ देख रहा था । उसने राजकुमार से कहा—''सब लोग तो आ गए, किंतु राजा-रानी नहीं आए ।''

राजकुमार ने कहा—''तब क्या करना चाहिए ?''

तोते ने बताया—''उन्हें विशेष आमंत्रण दिया जाए ।''

राजकुमार ने ऐसा ही किया । विशेष आमंत्रण पर राजा व रानी भोजन करने आए । जब ये दोनों भोजन कर रहे थे, तब तोते ने राजकुमार व राजकुमारी से कहा—''अपने माता-पिता को पहचानते हो ?'' तो दोनों फफक-फफक कर रोने लगे । बोले—''हम नहीं पहचानते । हमें तो एक साधु ने पाला-पोसा है ।'' इस पर तोता बोला—''आपके माता-पिता की पहचान मैं बताता हूं । उनके शरीर से अभी-अभी पसीना गिरेगा ।''

सबने देखा कि राजा-रानी के साथ ऐसा ही हुआ। दोनों भाई-बहनों को पूर्ण विश्वास हो गया कि यही दोनों उनके माता-पिता हैं । वे उनसे लिपट कर रोने लगे । तोते ने फिर कहा—''बड़ी रानी ने इन दोनों भाई-बहनों को नदी में बहा दिया था । एक साधु ने इनका पालन-पोषण किया है ।''

राजा-रानी अपने दोनों बच्चों को लेकर राजमहल में आए और सुखपूर्वक रहने लगे । बड़ी रानी को महल से निकाल दिया गया । •

बिगुल बजा आजादी का
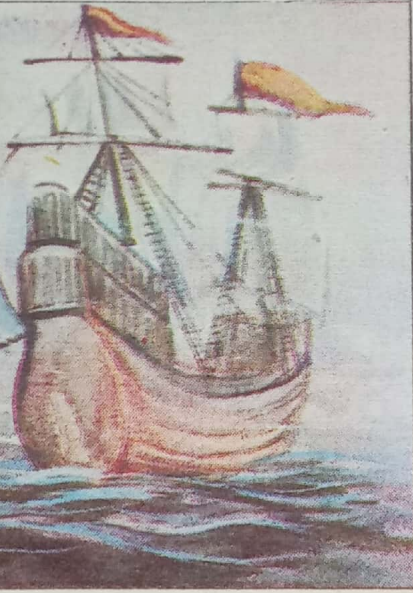
अंग्रेज भारत में व्यापार करने आये थे। हाकिन्स उनका नेता था।
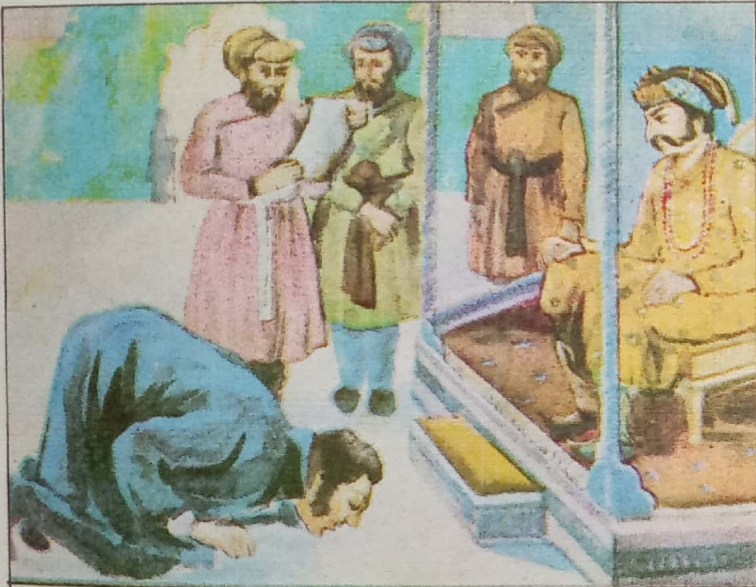
जहांगीर से व्यापार करने की आज्ञा ले ली। फौज भी रखने लगे। पहले से आए पुर्तगालियों को भगाया और यहां जम गए।

यहां के राजाओं-नवाबों को छलकपट से लड़ाने लगे। जिसकी मदद करते, उसे ही अपने अधीन कर लेते।

मुगल सम्राट शाहआलम को कमजोर करके अफसरी हासिल की। राजकुमारों के हक व गोद लिए राजपुत्रों पर नई नीतियों का ऐलान किया।
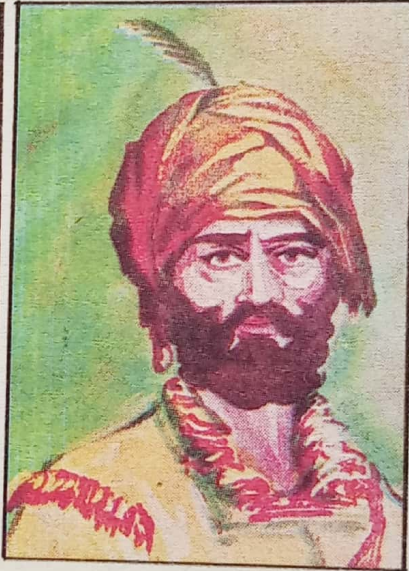
इन चालों के विरोध में अंग्रेजी फौजों और राजाओं में युद्ध हुए जिनमें कित्तूर की रानी चेनम्मा, आंध्र के वीर हैदरअली और टीपू सुल्तान ने मोर्चा लिया।
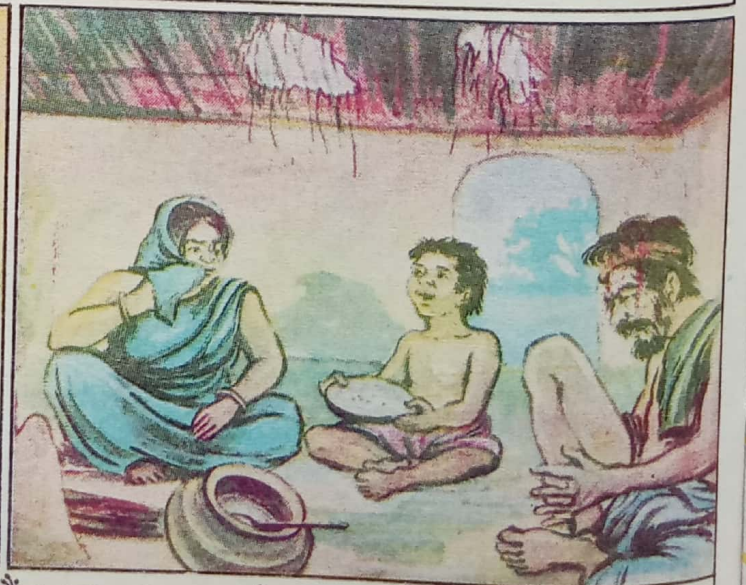
बहादुरशाह जफर कम्पनी सरकार से पेंशन पाते थे। इंग्लैंड का माल यहां खपाया जाने लगा। देशी उद्योग-धंधे नष्ट हुए, गरीबी बढ़ती गई।

अंग्रेजों के जुल्मों से भीतर ही भीतर चिंगारी भड़क रही थी । परेड में मंगल पांडे अंग्रेज अफसर पर टूट पड़ा । यह १८५७ में आजादी की पहली पुकार थी ।
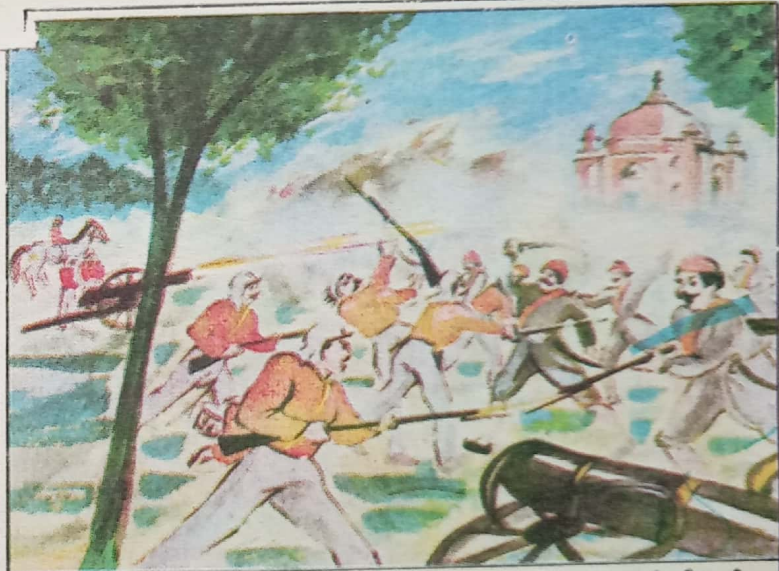
मेरठ छावनी के सिपाहियों ने अंग्रेजी शिकंजा तोड़ दिया । आग भड़क उठी । जगह-जगह अंग्रेजों से सीधी मुठभेड़ें होने लगीं ।
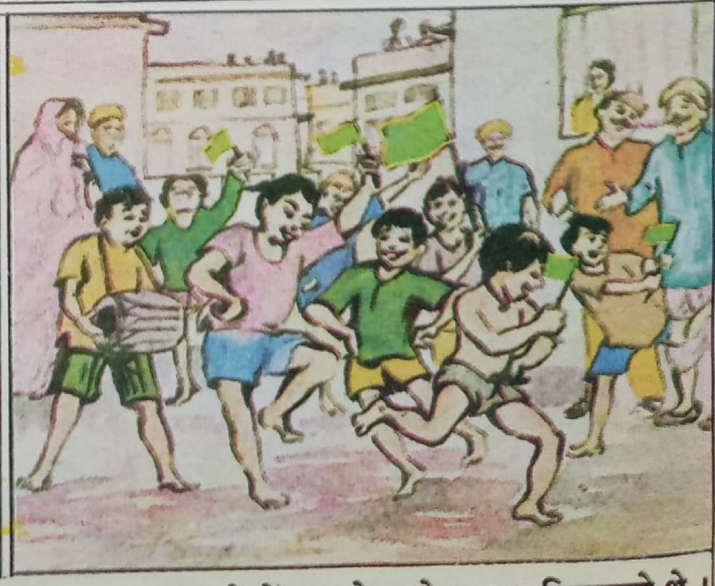
देश-प्रेम की लहर सब तरफ फैली । बड़ों के साथ बच्चे भी गली-मुहल्ले में नाचते-गाते जुलूस निकालते थे ।
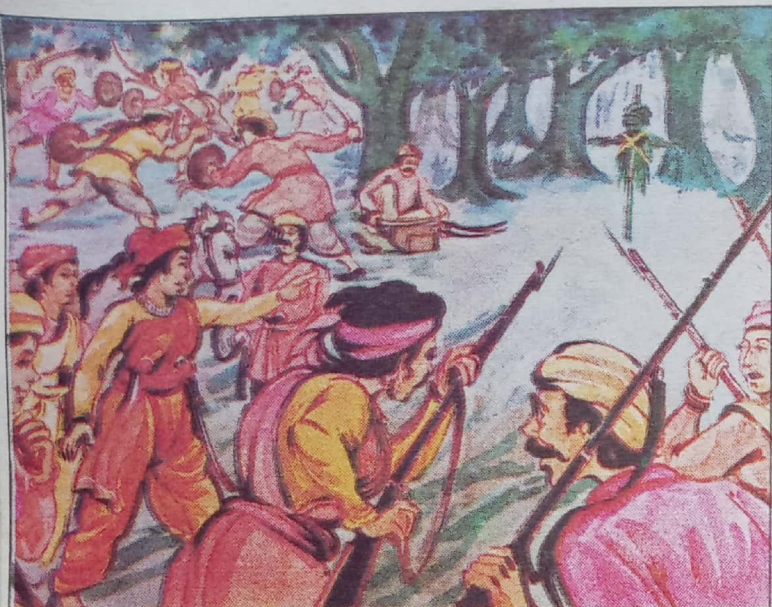
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओं और पुरुषों की जांबाज फौज लेकर विशाल अंग्रेजी फौजों का डटकर मुकाबला किया।

तात्या टोपे और नाना साहब ने सूझ-बूझ से सारे भारत की बिखरी शक्ति को जुटाया। कई जगह अंग्रेजों से युद्ध भी किए।
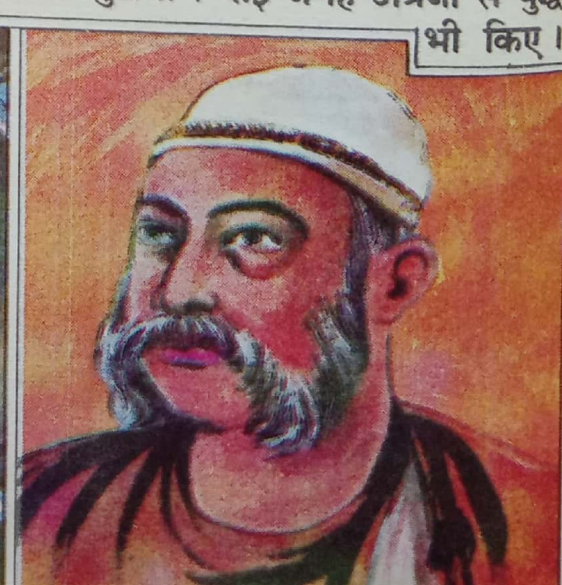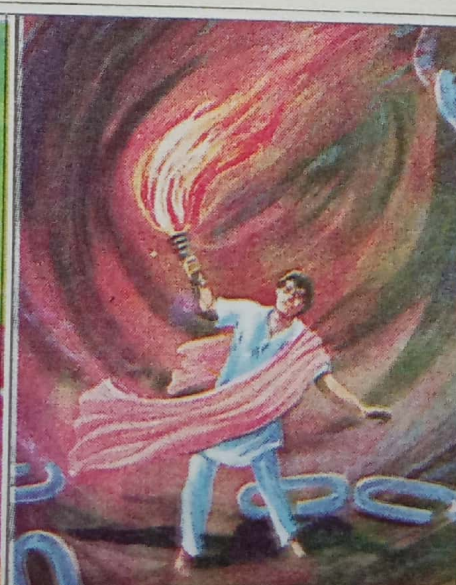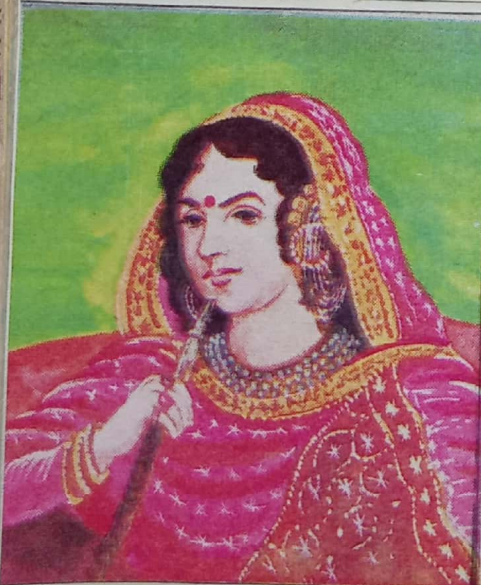
अवध की बेगम हजरतमहल, बिहार के बाबू कुंवरसिंह तथा अनेक शहीदों की गाथाएं हम सदा याद रखेंगे।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष ३०, अंक १०; अगस्त '९४, नई दिल्ली; श्रावण-भाद्रपद, शक सं १९१६

माता-पिता की जिम्मेदारी
बच्चे स्कूल जाएं

हेटिंग्टन । बच्चे यदि कोई गलत काम करते हैं तो इसके लिए माता-पिता को जिम्मेदार ठहराना चाहिए । अगर बच्चे स्कूल नहीं जाते, तोड़-फोड़ करते हैं या कोई और हरकत करते हैं तो माता-पिता को जुर्माना देना होगा । उन्हें जेल भी हो सकती है ।

अमरीका में लोगों का मानना है कि बहुत-से माता-पिता अपनी जिम्मेदारी से कतराते हैं। वे बच्चों की उचित देखभाल नहीं करते ।

हाल ही में आठ साल की एक बच्ची उनसठ दिन तक स्कूल नहीं गई । इसके लिए अदालत ने बच्ची की मां को सौ दिन की सजा सुनाई। एक न्यायाधीश माइकल कोनेस दो-सौ माता-पिताओं को सजा दे चुके हैं। यह सजा उन माता-पिताओं को मिली जिनके बच्चे लगातार स्कूल से गायब रहते हैं।

शिकागो में फैसला किया गया है कि यदि बच्चे स्कूल नहीं जाते, देर रात घर लौटते हैं और तोड़-फोड़ करते हैं तो माता-पिता को पांच हजार रुपए का जुर्माना देना होगा ।

अमरीका के बारह राज्यों में यदि बच्चे स्कूल न जाएं तो माता-पिता को सरकार से मिलने वाली परिवार कल्याण सहायता रोक दी जाती है ।

आम लोगों में ये कानून काफी लोकप्रिय हो रहे हैं । सभी चाहते हैं कि बच्चे सही रास्ते पर आ जाएं ।

नौवीं सदी का आदेश

मुरादाबाद । नौवीं सदी के प्रतिहार राजा नागभट द्वितीय के द्वारा जारी एक आदेश मिला है । यह आदेश ताम्रपत्र पर खुदा हुआ है । इस पर आदेश जारी होने की तिथि और वर्ष भी लिखा है । संस्कृत में खुदे इस आदेश में एक ब्राह्मण परिवार को पूरा गांव देने की बात कही गई है ।

शाबास दिनेश जैन

नई दिल्ली । दिल्ली यातायात पुलिस में सहायक सब इंस्पेक्टर है दिनेश जैन । वह छुट्टी पर था, फिर भी उसने एक घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाया । यही नहीं घायल आदमी के पचास हजार रुपए भी थाने में जमा करवा दिए । दिनेश जैन को उसकी कर्तव्य परायणता के लिए यातायात पुलिस की तरफ से सम्मानित किया गया है ।

शांति रहे

तोक्यो । जापान से एक नौका दुनिया की चौरासी दिन की यात्रा पर निकली है । यह सबको शांति का संदेश देगी । यही नहीं, नौका पर सवार यात्री दूसरी संस्कृतियों का अध्ययन भी करेंगे ।

राष्ट्रीय पुष्प कमल

नई दिल्ली । जब जल ही जल था, तब भगवान विष्णु ने सबसे पहले कमल की उत्पत्ति की, फिर ब्रह्मा की रचना की । देवी-देवता कमल पर विराजते हैं । कमल जैसा मुख, कमल जैसी आंखें, कमल जैसे हाथ-पांव । वह राष्ट्रीय पुष्प है । 'कमल : शाश्वत सांस्कृतिक प्रतीक' पुस्तक प्रो. विजयकुमार मल्होत्रा ने लिखी है । पुस्तक में मूर्तियों के अनेक चित्र भी हैं, सुंदर छपाई है । बड़े समारोह में पुस्तक का विमोचन हुआ । प्रकाशक हैं—प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली-३०

कुत्तों के शत्रु

फ्रेंकफर्त । पता चला है कि जर्मनी में कुत्ते डाकियों को सबसे अधिक काटते हैं । इससे डाक विभाग को डाकियों के इलाज और वर्दी बनवाने का खर्चा उठाना पड़ता है । डाकियों को कुत्ते भगाने का स्प्रे' भी दिया जाता है मगर कुत्ते नहीं मानते ।

खिलौना रेल
विदेश नहीं जाएगी

दार्जिलिंग । यहां की खिलौना रेल सौ वर्ष से अधिक पुरानी है । सरकार ने सोचा था कि इसको विदेश के किसी संग्रहालय को बेच देगी । लेकिन दार्जिलिंग के एस. तेंदुफ इस रेल को निजी संग्रहालय के लिए खरीदना चाहते हैं । इस समय वह कनाडा में रहते हैं । यह खिलौना रेल न्यू जलपाईगुड़ी और दार्जिलिंग के बीच १८८१ में चली थी ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

नंदन बाल समाचार

विनम्रता सबसे बड़ा गुण है। —गुरु नानक

टहनी से पेड़ उगता

आक्सीजन यानी प्राण वायु के बिना इस पृथ्वी पर इंसान नहीं रह सकता। आक्सीजन पेड़-पौधों से मिलती है। लेकिन पेड़ तेजी से काटे जा रहे हैं। नए पेड़ कम लगाए जाते हैं। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हर इंसान, बड़े ही नहीं बालक भी पेड़ लगाएं।

मोहन अडवानी का नाम बहुतों ने नहीं सुना होगा। वह बम्बई में रहते हैं। सत्रह साल पहले उन्होंने यह समझा कि पेड़ कितने जरूरी हैं। बस, वह बेचैन हो उठे। उन्होंने ऐसे पेड़ खोजे कि टहनी लगाकर, पानी देते रहने से पेड़ उगाया जा सके ! वह लोगों को हजारों पत्र लिखते हैं—पेड़ लगाने के लिए। कोई न उगाए तो उसे अपनी तैयार की हुई पौध दे देते हैं। हम कहीं भी रहते हों—पौधा लगाएं। धरती को हरी-भरी करने को कुछ न कुछ अवश्य करें। बरसात का यह मौसम यों ही न निकल जाए।

अनोखी शादी

रोहतक। दुल्हन ने दूल्हे के गले में नोटों की माला डालने से मना कर दिया। बल्कि जो माला डाली उस पर साक्षरता अभियान के स्टिकर चिपके हुए थे। विवाह मंडप भी पूरी तरह साक्षरता के पोस्टरों से सजा था। लोकगीतों के स्थान पर भी साक्षरता सम्बंधी गीत गाए गए।

दुल्हन बबली और दूल्हा जगदीश लाम्बा साक्षरता अभियान से जुड़े हैं।

चोर को मुआवजा

कैलिफोर्निया। एक चोर ने दुकान से चोरी की। लेकिन रंगे हाथों पकड़ा गया। दुकान के कर्मचारियों ने उसे खूब पीटा। चोर की कई हड्डियां टूट गईं। कई महीने बिस्तर पर पड़ा रहा। फिर उसने दुकानदार पर मुकदमा कर दिया। अदालत ने आदेश दिया कि चोर के साथ दुकानवालों को मारपीट नहीं करनी चाहिए थी। दुकानवाले चोर को चार लाख रुपए का मुआवजा दें।

पुरखों को आदर

सिओल। भारत की तरह दक्षिण कोरिया में भी अपने पूर्वजों को आदर से याद किया जाता है। जब भी किसी का कोई अच्छा काम पूरा होता है, तो सबसे पहले वह व्यक्ति अपने पुरखों की कब्र पर जाकर प्रणाम करता है। यही नहीं अमीर होते ही लोग सबसे पहले अपने बाप-दादाओं की कब्रों को सुधारने और सजाने का काम करते हैं। यहां पुरखों को याद करने और धन्यवाद देने का उत्सव मनाया जाता है। इस दिन सरकारी छुट्टी होती है।

चूहों के डर से

सेंटियागो। चिली में चूहों के डर से लोग अपने घर छोड़कर भाग रहे हैं। रात में जब वे घरों में घुसते हैं तो ऐसा लगता है कि दूर-दूर तक काला कालीन बिछ गया हो। चूहे तेज रोशनी से भी नहीं डरते। नदियों को पार करके दूसरे शहरों में चले जाते हैं।

वेद-उपनिषद् भारत की आत्मा

नई दिल्ली। 'वेद और उपनिषद् इस प्रकार के ग्रंथ हैं जिनमें भारत की आत्मा निहित है। इनका किसी एक राष्ट्र, एक जाति या काल से सम्बंध नहीं है। उपनिषदों ने संसार को सबसे अधिक प्रभावित किया है।' ये बातें राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने कही। वह लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के समारोह में बोल रहे थे।

मलेरिया की दवा

पेइचिंग। चीन में जड़ी-बूटियों से मलेरिया की दवा 'आर्टेमेथर' बनाई जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट में बताया गया है कि यह दवा मलेरिया की अन्य दवाओं से अधिक कारगर दवाओं में से एक है। 'आर्टेमेथर' खाने से मलेरिया दोबारा होने की आशंका बहुत कम हो जाती है।

हंसो खूब हंसो

न्यूयार्क। यदि आप खुश रहते हैं, खूब हंसते हैं और दोस्तों से अच्छी-अच्छी बातें करते हैं, तो स्वस्थ बने रह सकते हैं। अब पता चला कि तनाव के कारण अन्य बीमारियों के साथ-साथ जुकाम भी हो सकता है। जो काम करने से आनंद आता हो जैसे बागवानी या सैर-सपाटा से तो तनाव कम होता है और रोग से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

गेटवे आफ इंडिया का नया रूप

बंबई। गेटवे आफ इंडिया को बंबई की शान कहा जाता है। उफनते-गरजते समुद्र के किनारे यह सिर उठाकर खड़ा है। मगर वर्षों से आंधी-बारिश सहते-सहते इसकी चमक फीकी पड़ गई थी। अब इसे चमकाया जा रहा है।

कुशल कर्मचारी

बेरहामपुर। गोपीनाथ लुहार का काम करता है। उसके बेटे कालीचरन के अलावा उसके दो साथी और भी हैं। ये हैं दो बंदर। तीन साल पहले कालीचरन को एक अनाथ बंदर का बच्चा मिला था। वह उसे घर ले आया। बाद में वह लोहारी के काम में मदद देने लगा। फिर एक दूसरा बंदर भी आ गया। ये दोनों बंदर मांगे जाने पर औजारों को पकड़ाते हैं। भट्ठी दहकाते हैं। आते-जाते लोग इन्हें काम करते देखकर आश्चर्य से रुक जाते हैं।

चालीस दिन बाद

पेइचिंग। चीन के दक्षिणी पश्चिमी प्रांत में भूस्खलन हुआ। बीस साल का युवक एक गुफा में फंस गया। चालीस दिन बाद उसे गुफा से निकाला गया। झेंग शुहुआ नामक इस युवक ने इस बीच कुछ नहीं खाया। जब बचाव दल इसके पास पहुंचा तो उसका वजन घट कर सिर्फ तीस किलो रह गया था।

प्रधानमंत्री का बिल्ला

लंदन। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जान मेजर पर एक अनोखा आरोप लगाया गया। कहा गया कि उनका बिल्ला हम्फ्री हत्यारा है। उसने चार राबिन पक्षियों को मारा है। जान मेजर ने जोरदार तरीके से अपने बिल्ले का बचाव किया। कहा कि उनका बिल्ला निर्दोष है। राबिन पक्षी तो अपने पिंजरों में अपने आप मरे हैं।

स्तूप मिला

कुरुक्षेत्र। हरियाणा में ब्रह्मसरोवर के पास खुदाई में एक स्तूप मिला है। श्रीकृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र के निदेशक डा. डी. के. सिन्हा का मानना है कि इस स्तूप का जिक्र ह्वेन सांग ने भी अपनी पुस्तक में किया है।

एक सौ एक घंटे नृत्य

नई दिल्ली। हिमाचल भवन में कनुप्रिया मंजरी नाम की नर्तकी ने एक सौ एक घंटे तक कथक नृत्य प्रस्तुत किया। कनुप्रिया ने एक मई को नृत्य शुरू किया था और पांच मई की रात साढ़े ग्यारह बजे खत्म किया। इससे पहले कनुप्रिया साठ घंटे तक लगातार नृत्य कर चुकी हैं।

स्कूल में मगरमच्छ

बैंकाक। यहां के एक स्कूल के अंदर अठारह मगरमच्छ रहते हैं। स्कूल वालों का कहना है कि इन मगरमच्छों को बच्चों की जानकारी बढ़ाने के लिए रखा गया है। माता-पिता कहते हैं कि इन मगरमच्छों से बच्चों को खतरा है। अब सरकार ने आदेश दिया है कि मगरमच्छों को फौरन स्कूल से हटाया जाए।

कुत्तों की सही देखभाल

नई दिल्ली। अभी तक समझा जाता था कि मालिकों की देखभाल और रक्षा करना कुत्तों की जिम्मेदारी है। मगर कैनल क्लब का कहना है कि कुत्तों की उचित देखभाल करना मालिकों की भी जिम्मेदारी है। इसके लिए बाकायदा उन्हें प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। क्लब एक डिप्लोमा कोर्स शुरू कर रहा है।

पोस्टकार्ड पर

समस्तीपुर। यहां रहता है अमरेशकुमार। उसने पोस्टकार्ड पर इक्कीस हजार, दस शब्द लिखे हैं। यह एक रिकार्ड है। लिखते वक्त उसने मेग्नीफाइंग ग्लास की भी मदद नहीं ली।

आंखों के लिए

बम्बई। कीर्तिलाल एन. झावेरी तीस वर्षों से विदेश में रहते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय नेत्रहीन संघ को नेत्रदान कोष बनाने के लिए दो लाख डालर दिए हैं। श्री झावेरी ने अपने माता-पिता की स्मृति में यह दान दिया है।

नन्हे समाचार

□ अमरीका की पचीस डालफिनें समुद्र में बिछी बारूदी सुरंगों का पता लगा सकती हैं। अब ये बिकाऊ हैं। एक डालफिन की कीमत दस हजार से पचीस हजार डालर।

□ अमरीकी वैज्ञानिकों ने एक आकाशगंगा में पानी का पता लगाया है।

□ कस्टम अधिकारियों ने इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर चालीस हजार दुर्लभ प्राचीन सिक्के पकड़े। ये सिक्के विदेश ले जाए जा रहे थे।

□ एक सर्वेक्षण से पता चला है कि नई दिल्ली और बम्बई दुनिया के पैंतालीस देशों की सूची में सबसे सस्ते और जापान की राजधानी तोक्यो सबसे महंगा शहर है।

□ पटना के जालान कला संग्रहालय में एक पेड़ का जीवाश्म रखा हुआ है। कहते हैं कि वह एक करोड़ वर्ष पुराना है। इसे अमरीका से यहां लाया गया था।

□ भारत में एक कम्पनी धूप के चश्मे बेचने जा रही है। कीमत है दो लाख रुपए।

□ कर्नाटक के हल्लीगेरे गांव में रहता है सुबन्ना। उसका एक करोड़ रुपए का लाटरी का इनाम निकला है। सुबन्ना खेत मजदूर है। उसकी आमदनी पांच सौ रुपया महीना थी।

□ भारत से इस वर्ष साढ़े दस अरब रुपए मूल्य के सोने के जेवरों का निर्यात किया गया।

□ अमरीका में टमाटर की कई किस्में विकसित हुई हैं। ये टमाटर ज्यादा दिन तक ताजे रहते हैं।

□ कलकत्ता के चिड़ियाघर में एक कछुआ है। कहते हैं उसकी उम्र दो सौ वर्ष है। चिड़ियाघर के सभी जानवरों का वह पड़दादा है।

सचित्र समाचार
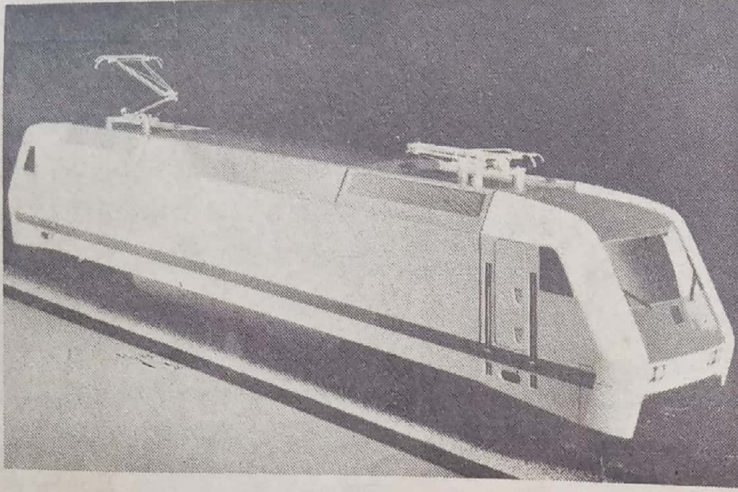
जर्मनी में बना नया रेल इंजन : बिजली से चलता है।

प्रसिद्ध गिटार वादक विश्वमोहन भट्ट अमरीका में 'ग्रेमी एवार्ड' से सम्मानित। 'ग्रेमी एवार्ड' संगीत क्षेत्र का बड़ा पुरस्कार है।

दिल्ली के श्रीवत्स : भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में प्रथम स्थान।
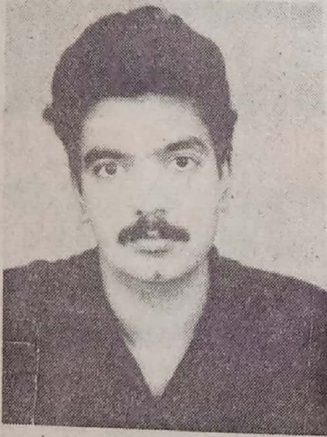
दुनिया का सबसे बड़ा पानी का जहाज 'सिलिजा यूरोपा।' बनाने पर सात अरब रुपए खर्च हुए।

तोता बोला—"मैं भी चला सकता हूं साइकिल। दिखा सकता हूं तरह-तरह के करतब।"

बाल भवन सोसायटी ने पर्यावरण सुरक्षा सप्ताह मनाया। तरह-तरह के मुखौटे लगाकर बच्चों ने सड़क पर मार्च किया।

हरी पहाड़ी
एक राजा था। एकदम अकेला । न बीवी, न बच्चे । एक दिन गया शिकार खेलने । अचानक—
भागो !
जान बचाओ !
यह... कैसे...उफ !
तभी...
?
राजा बच गया
इसने हमारी जान बचाई । शेर को मार डालो। इसे राजधानी ले चलो...
ठहरो ! शेर मेरा दोस्त...पालतू । तुम जाओ । मैं आऊंगा...
ऐसा ही हुआ । वनवासी किशोर महल में आया तो...
नाम याद नहीं । जंगल मेरा घर । वहां के पशु मित्र...
आज से तुम्हारा नाम प्रवीर...यहीं रहो । पढ़ो लिखो...मेरे बेटे बनो...बाद में राजा...

मंत्री को यह बात पसंद नहीं आई । वह कुछ और सोचता था...
राजा मेरे बेटे को गोद नहीं लेगा । जंगली बीच में आ गया...मेरा सपना...
प्रवीर को रास्ते से हटा दो...
यह काम मैं...मारना नहीं...हरी पहाड़ी में कैद कर दूंगा...राजा बनूंगा तो काम आएगा...

कुछ दिन बाद प्रवीर अकेला ही जंगल की ओर जा रहा था कि...
यह क्या है ! कैसे उड़ती है !
यह पतंग... सीखोगे उड़ाना...

वह अभी पतंग उड़ाना सीख ही रहा था...
मगर कहां ? कौन है...
चुपचाप हमारे साथ चलो...
खबरदार, जो हिले...
ले चलो इसे...

मंत्री ने उसे हरी पहाड़ी के गुप्त ठिकाने में कैद कर दिया...
मुझे यहां क्यों लाए ?
चुप रहो । मंत्री का बेटा राजा बनेगा तब तुम्हें...

मंत्री ने एक चाल और चली....
महाराज, प्रवीर के ये वस्त्र...प्रहरी को दे गया... वापस वन में चला गया... महल रास नहीं आया...
उफ... प्रवीर...
चिंता न करें महाराज ! उसकी कमी मैं पूरी करूंगा...

उसका जादू चल गया । राजा ने उसके बेटे को गोद लेने की घोषणा कर दी ।
लो मिठाई खाओ । राजा ने मंत्री-पुत्र को गोद लेने की घोषणा कर दी है...
हमें खुशी मनानी चाहिए... पतंग उड़ाएंगे...

पहरेदार मान गए । पतंग व डोर लाकर प्रवीर को दे दी । अगले दिन सवेरे ही...
तुम डोर खींचना... मैं कन्नी देता हूं...फिर बारी-बारी हम सब...

दोनों पहरेदारों के बाद प्रवीर ने पतंग उड़ानी शुरू की...
मंत्री जी आते होंगे...अब बस करो...
अब पतंग ठीक राजधानी के ऊपर... यहीं अवसर है...डोर काट दूं...

उसने चुपके से डोर काट दी । पतंग सीधी राजधानी के चौक में जाकर गिरी...
कितनी सुंदर पतंग... अरे, इस पर यह क्या लिखा है ?
महाराज के नाम संदेश है...
हमें तुरंत उनसे मिलना चाहिए...

वे लोग पतंग लेकर राजा के पास पहुंचे । राजा ने संदेश पढ़ा...
महाराज, मुझे मंत्री और उसके बेटे ने हरी पहाड़ी पर बंदी...आप उसे गोद ले लेंगे, तब मेरी रिहाई... यहां से...ओह...
तुरंत सेनापति को बुलाकर मंत्रणा की...
अभी मंत्री से कुछ न कहिएगा । पहले प्रवीर को छुड़ा लें । फिर...

प्रवीर को गुप्त रूप से छुड़ा लिया गया । गोद लेने की रस्म के ऐन मौके पर...
प्रवीर ! तुम !! कहां चले गए थे !
मंत्री और उसके बेटे से पूछिए राजन ! इन ही का तो मेहमान था...
यह कैसे आ टपका !

मंत्री और उसके पुत्र को बंदी बना लिया गया और....
प्रवीर, मंत्री की निकम्मी औलाद की जगह तुम बैठो...

गीत का मोल

— हरिवल्लभ बोहरा 'हरि'

जैसलमेर के दुर्ग के समीप दशहरा चौक का चोहट्टा विशेष रूप से सजा था। वहां शामियाने लगे थे। रंग-बिरंगी झंडियां फहरा रही थीं। सजे-धजे बच्चे, स्त्रियां और पुरुष जमा थे। मंच पर बने सिंहासन पर महाराज महारावल बैठे थे। उनके निकट चांदी की कुर्सी पर राज कवि हरराज बैठे थे।

आज हरराज का सम्मान दिवस था। काफी लोग आ चुके थे। सम्मान समारोह शुरू हुआ। दीवान किशनलाल ने हरराज के जीवन और उनकी साहित्य सेवा के बारे में लोगों को बताया। इसके बाद महरावल ने कवि को ताम्र पत्र, स्वर्ण मुद्राएं, जागीर का पट्टा, एक सौ एक गायें और इक्कीस घोड़े दिए। उन्होंने राज्य का सर्वश्रेष्ठ सम्मान पद 'हाथी हौदा' से कवि को सम्मानित किया।

अब कवि के बोलने की बारी थी। कवि ने उपहार और सम्मान देने के लिए राजा का आभार प्रकट किया। लोगों को धन्यवाद दिया। अपनी बात समाप्त कर, कवि अपने स्थान पर बैठने लगे। तभी जनता ने एक स्वर में 'राष्ट्र वंदना' नामक गीत सुनाने का कवि से आग्रह किया।

कवि ने यह गीत पचीस वर्ष की उम्र में लिखा था। वृद्ध होने के कारण अब उनकी याददाश्त कमजोर हो गई थी। संयोग से वह राष्ट्र वंदना वाला गीत एक कागज पर लिख लाए थे।

कवि ने कांपती अंगुलियों से कागज थामा। वह कागज पर लिखा गीत गाने लगे। वह एक ही पंक्ति पढ़ पाए थे कि हवा के एक तेज झोंके से कागज उनके हाथ से उड़कर दूर चला गया। उनको दूसरी पंक्ति याद नहीं थी। वह पहली पंक्ति पढ़कर चुप हो गए। जनता कवि से पूरा गीत सुनने की इच्छुक थी। मगर कवि क्या करते?

वहां सन्नाटा छा गया। तभी भीड़ में बैठे हुए कुछ लोग धीमे स्वर से कवि के उस गीत को गाने लगे। देखते ही देखते और लोग भी गीत गाने लगे। लोगों ने इस प्रकार पूरा गीत गाकर कवि को बहुत सम्मान दिया।

कवि का यह सम्मान देख, राजा हैरान थे। उन्होंने पुनः कवि की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अब कवि हरराज से रहा न गया। वह बोले—"आज मुझे आप लोगों ने वह मान-सम्मान और पुरस्कार दिया है जिसके बाद किसी अन्य वस्तु की जरूरत नहीं रह जाती। कवि की रचना को आम जनता भी याद रखे, कवि का इससे बड़ा और सम्मान क्या हो सकता है?"

समारोह समाप्त हुआ। लोग कवि की प्रशंसा करते हुए वहां से जा रहे थे। ●

मोतियों का हार

—अपूर्व त्रिवेदी

पश्चिमी झील के खुबानी पुष्प गांव में एक लड़की रहती थी। लोग उसे खुबानी कन्या कहते थे। जब वह आठ वर्ष की हुई, तो भैंस चराने लगी। गरमियों में रसभरी खुबानियों के पेड़ फलों से लदे होते थे। फलों की सुगंध चारों ओर फैल जाती थी।

एक दिन एक बड़ी-सी खुबानी पेड़ से गिरी। उसे खुबानी कन्या उठाने को हुई, तो एक आवाज आई— "मुझे मत खाओ, मुझे जाने दो।"

उसने चारों ओर देखा, लेकिन कोई नजर नहीं आया। डरने पर खुबानी हाथ से गिर गई। उसी समय वहां एक सुंदर-सी युवती प्रकट हुई। उसकी पोशाक रेशमी और खुबानी रंग की थी।

युवती ने कहा— "डरो नहीं, मैं खुबानी देवी हूं। तुम मेहनती लड़की हो। मैं तुम्हें मोतियों का हार देती हूं। जब किसी मुसीबत में पड़ जाओ, तो इसे तीन बार छूकर मुझे पुकारना। मैं तुम्हारी मदद को आ जाऊंगी।" इतना कहने के बाद अचानक धुआं उठा और वह गायब हो गई। वह बड़ी खुबानी पेड़ पर वापस पहुंच गई।

बड़ी होने पर खुबानी कन्या का विवाह सुङ परिवार के छोटे बेटे से हुआ। बड़े परिवार में अनेक कठिनाइयां आतीं। खुबानी कन्या बड़ी सुशील थी और सास-ससुर की खूब सेवा करती थी। इसलिए उसकी सभी जेठानियां खूब कुढ़ती-जलती थीं।

एक बार की बात है, गरमी का मौसम था। खुबानी कन्या पूरे परिवार के लिए चावल और बीन पनीर तैयार कर रही थी। बीच में ही उसकी बड़ी जेठानी ने सिलाई की मदद के लिए उसे बुला लिया। इसी बीच दूसरी जेठानी रसोई में घुस गई और उसने बीन पनीर में ढेर सारा नमक डाल दिया। फिर आंच तेज करके बाहर निकल गई। चावल जलने की गंध से खुबानी कन्या भागी आई। लेकिन काफी चावल जल चुका था और बीन पनीर भी ज्यादा नमक के कारण कड़वा हो चुका था।

यह देखकर सारी जेठानियां मुसकराने लगीं। उन्होंने सोचा था कि खुबानी कन्या अब क्या करेगी ? लेकिन वह जरा भी परेशान नहीं हुई। उसने दोनों बर्तनों में पानी भर दिया और थोड़ी देर चम्मच से चलाने के बाद वहां से चल दी।

दोपहर के भोज के लिए मेज सजाने में खुबानी कन्या की बच्चों ने मदद की। उसकी जेठानियां अब भी मुसकरा रही थीं। सब लोग जला खाना खाएंगे, तो खुबानी कन्या की कितनी खिल्ली उड़ेगी, सोचकर उन्हें खुशी हो रही थी।

जब सब लोग मेज पर बैठ गए, तो खुबानी कन्या ने खाना परोसा। बोली —"आज मेरे बनाए नए व्यंजन को खाकर देखिए। गरमी काफी पड़ रही है, इसलिए भुने हुए चावल की लपसी बनाई है ताकि प्यास कम लगे। एक नया सूप भी बनाया है। इसका नाम है 'दोबार पकाया बीन पनीर'। मुझे उम्मीद है कि आपको भोजन पसंद आएगा।"

सास-ससुर समेत सभी ने मिनटों में सारा खाना चट कर दिया और खाने की खूब प्रशंसा की। इस घटना से जेठानियां खुबानी कन्या का आदर करने लगीं। उन्होंने घर की सारी जिम्मेदारियां उसे सौंप दीं।

वह भी सारा काम ठीक ढंग से करने लगी। कोई भी काम करने से पहले वह सबसे सलाह लेती। सबको काम सौंपती और उसकी देखभाल भी करती। अब परिवार में जरा भी अनबन नहीं थी। सब छोटों को प्यार करते और बड़ों का सम्मान करते।

इतना ही नहीं, खुबानी कन्या पड़ोसी का भी बड़ा ख्याल रखती थी। हमेशा उनकी मदद करती। उसकी ख्याति शीघ्र ही सम्राट के कानों तक पहुंची। सम्राट ने सच्चाई जानने के लिए परीक्षा लेने की सोची। एक दिन शाही दूत को एक बादाम देकर भेजा और उसे परिवार के लोगों में बराबर बांटने को कहा।

शाही दूत हाड़चओ वहां पहुंचा और शाही फरमान सुनाया। परिवार के सभी सदस्य परेशान हो गए, लेकिन खुबानी कन्या ने विनम्रता से उत्तर दिया— "हम सम्राट के आभारी हैं। आप जरा बैठिए, मैं अभी इसे सभी में बराबर बांट देती हूं।"

खुबानी कन्या ने आंगन में एक चूल्हा बनाया। एक बड़े बर्तन में पानी उबलने रखा। फिर उसमें बादाम और थोड़ी शक्कर भी डाल दी। पानी उबलने पर परिवार के हर सदस्य को एक कटोरा भरकर पीने को दिया। बोली— "यह बादाम का शरबत है। गरमी में बहुत लाभदायक होता है।"

शाही दूत ने सारी घटना सम्राट को कह सुनाई। साथ ही उसकी सुंदरता का भी वर्णन किया, तो सम्राट ने उसे पटरानी बनाने का फैसला कर लिया। शाही दूत को तीन हजार रक्षकों के साथ खुबानी कन्या को राजमहल में उपस्थित करने का आदेश दिया।

शीघ्र ही सुङ परिवार को रक्षकों ने घेर लिया। खुबानी कन्या को राजमहल चलने का हुकुम सुना दिया। इसे सुनकर परिवार के सभी सदस्य खुबानी कन्या को घेरकर रोने लगे।

उधर खुबानी कन्या ने परिवार के सदस्यों को धीरज दिलाया और शाही दूत से पांच मिनट में तैयार होकर आने को कहा। वह कमरे में गई और सोने के हार को तीन बार छूकर देवी को पुकारने लगी। देवी प्रकट हुई। खुबानी कन्या ने अपनी समस्या कह सुनाई।

खुबानी देवी को यह सुनकर बहुत गुस्सा आया। उसने कहा— "पश्चिमी झील का किनारा तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए सुरक्षित स्थान है।" इतना कहकर उसने अपनी बांह को एक झटका दिया। इससे बवंडर उठा और एक प्रचंड तूफान खड़ा हो गया। यह तूफान शाही दूत और रक्षकों को पूर्वी सागर में और सुङ परिवार और घर को पश्चिमी झील के तट पर उड़ाकर ले गया।

बवंडर थमते ही पड़ोसियों ने देखा, सुङ परिवार का मकान गायब है और वहां समतल मैदान रह गया। इससे उन्हें बहुत दुःख हुआ।

एक दिन एक किसान का हल खो गया। वह सोचने लगा— 'आज यदि खुबानी कन्या होती, तो कितना अच्छा होता। वह अपना हल मुझे दे देती।'

अचानक वहां एक हल झील के बीच से बहता हुआ आया और उसके पास आकर रुक गया। किसान और अन्य लोगों ने इस हल को पानी से बाहर निकाला।

उस दिन हाड़चओ के लोगों को मालूम हुआ कि सुङ परिवार झील के तट पर रहता है। खुबानी कन्या वहां भी दीन-दुखियों की अब भी मदद करती रहती है। गरमियों के शुरू होते ही जब खुबानी पक जाती हैं, तो लोग खुबानी कन्या की यह कहानी अक्सर सुनाते हैं।

(चीनी लोक कथा)
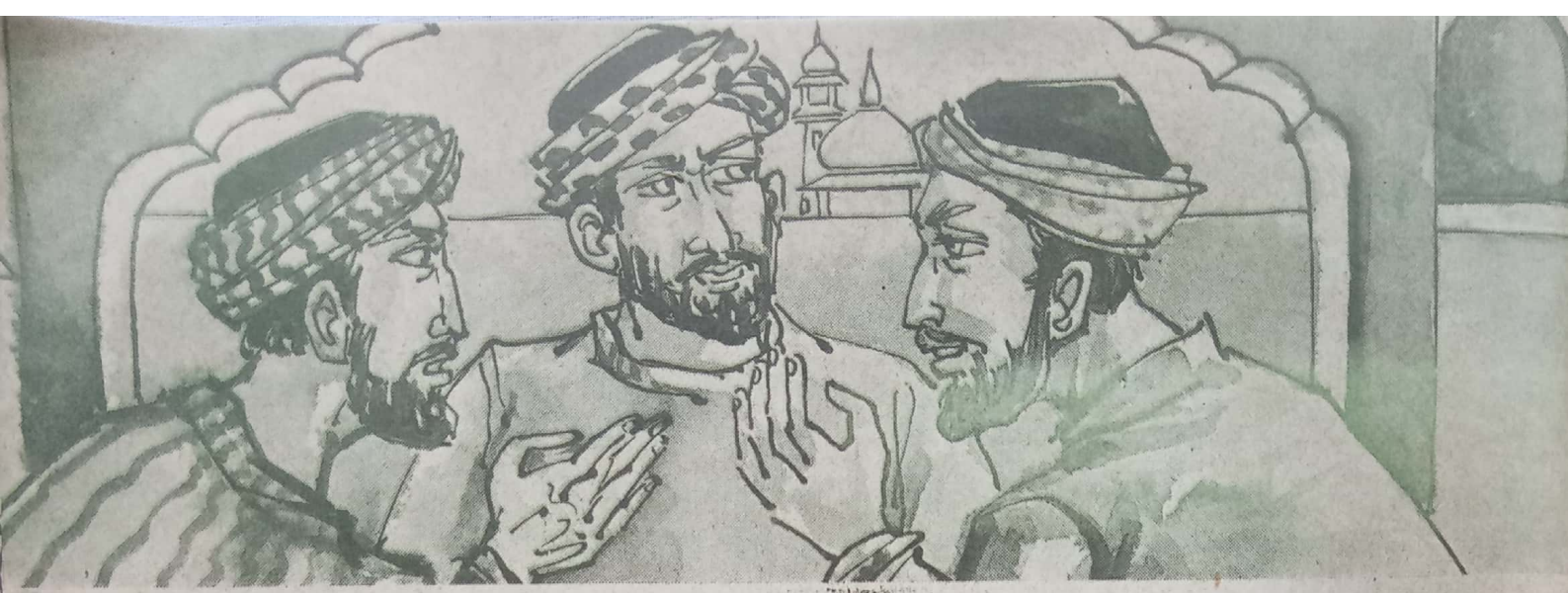
रेत में घड़ा

—राकेशकुमार श्रीवास्तव

मिस्र देश की राजधानी काहिरा के निकट एक कस्बे-अल दरिया में अबू फैजल, महमूद कासिम एवं जुबैर अली नामक तीन व्यापारियों में बड़ी घनिष्ठता थी । तीनों की माली हालत कोई अच्छी नहीं थी, लेकिन तीनों आपस में सहयोग कर, किसी प्रकार गुजारा चला लेते थे । तीनों दोस्त आसपास के गांवों से खजूर, सूखे मेवे इत्यादि खरीदते । उन्हें कस्बे में बेचते । अल दरिया कोई इतना बड़ा कस्बा न था कि उनकी बिक्री खूब होती । अत्यधिक श्रम के पश्चात भी उनकी हालत न सुधरती थी ।

एक दिन अबू अपनी दुकान में यूं ही मायूस बैठा था कि तभी महमूद और जुबैर वहां आए । अबू को यूं उदास और मायूस देख, महमूद ने पूछा— ''क्यों अबू भाई, आज कुछ ज्यादा ही परेशान लग रहे हो। क्या कोई खास बात है ?''

''अब तो बच्चों के पेट काटने तक की हालत हो गई है । मैं तो सोच रहा हूं, इस जिंदगी के जंजाल से कैसे छुटकारा पाऊं ?'' —अबू बोला ।

हालांकि महमूद और जुबैर की हालत भी फिलहाल बुरी चल रही थी लेकिन अबू की तरह वे इतने टूटे नहीं थे । अतः अबू का उत्साह बढ़ाते हुए महमूद ने कहा— ''अबू भाई, सुख-दुःख तो आते ही रहते हैं लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि हम जीवन से यूं निराश हो जाएं ।''

''तुम्हारा कहना तो सौ फीसदी सही है महमूद, लेकिन तुम शायद नहीं जानते कि दो दिनों से मेरे घर चूल्हा-चौका तक बंद है । मैं क्या करूं ?''— अबू की आंखें इतना कहते-कहते डबडबाने लगी थीं ।

''जब खुदा ने हमारी किस्मत में दुःख ही लिखा है, तो हमें वह भी कबूल है लेकिन इसको हम मिलकर झेलेंगे । आज से हम तीनों का खाना एक जगह पकेगा । हम सुख-दुःख के साथी होंगे ।''— जुबैर ने अपनी बात पर बल देते हुए कहा ।

तब महमूद ने भी जुबैर की हां में हां मिलाई और कहा— ''देखो अबू, आज से हम तीनों में से कोई भी किसी तरह की बात नहीं छिपाएगा । हां, मैंने कारोबार बढ़ाने और सही मुनाफा कमाने के लिए एक नई योजना बनाई है । अगर खुदा ने चाहा, तो हम जल्दी ही अपनी हालत में सुधार ले आएंगे । मुझे मालूम हुआ है कि काहिरा में हमें इन्हीं खजूरों के तीन-चार गुने दाम मिल जाएंगे । अतः क्यों न हम अपना सौदा रियासत की राजधानी में ही पक्का करें । इससे अच्छा व्यापार भला क्या होगा ? हम बेकार ही अपना कीमती समय कस्बे में व्यापार करने के चक्कर में लगा देते हैं जबकि यहां हमारे माल की सही कीमत तक नहीं मिलती ।''

फिर क्या था, उन तीनों ने मिलकर सबसे पहले काहिरा की मंडियों का मुआयना किया । वास्तव में शहर में खजूरों एवं मेवा का भाव कस्बे के बाजार से अधिक था । अब महमूद गांव-देहातों से खजूर खरीदकर कस्बे में लाता । जुबैर उन्हें ऊंटों पर

लादकर, काहिरा की मंडियों तक ले जाता । अबू शहर में रहकर उन्हें बेचता । हर जुम्मे के दिन अबू शहर से कस्बे में आ जाता, जहां बिक्री के पैसों के तीन हिस्से हो जाते । धीरे-धीरे उनकी हालत में सुधार आ रहा था । तीनों के दिन आराम से बीत रहे थे ।

लेकिन जैसे-जैसे शहर में बिक्री बढ़ने लगी, अबू के दिल में पाप आने लगा । वह सोचता, मैं अकेला शहर में रहकर व्यापार संभाल रहा हूं । महमूद और जुबैर तो वैसे ही घर की दाल-रोटी तोड़ रहे हैं । मैं ही मूर्ख ठहरा, जो शहर में रहना स्वीकार कर लिया । वैसे भी शहर में खाने-पीने में ही इतने रुपए खर्च हो जाते हैं कि भविष्य के लिए कुछ बचा ही नहीं पाता ।'

अबू अपने को रोक न सका । एक जुम्मे को बिक्री के पैसे लेकर वह कस्बे की ओर बढ़ा जा रहा था । तभी उसे कुछ ख्याल आया । उसने ऊंट रोका और चमड़े की थैली से कुछ दीनारें निकालकर रेत के नीचे दबा दीं । फिर तो उसकी यह आदत सी बन गई । कुल बिक्री की रकम में से पच्चीस फीसदी वह रास्ते में ही छिपा देता और शेष बचीं दीनारों से फिर तीसरा हिस्सा पाता । महमूद और जुबैर को सपने में भी इस बात का आभास न था कि अबू ने कांसे के एक घड़े को कस्बे और शहर को जोड़ने वाले रास्ते के किनारे एक सुरक्षित स्थान में गाड़ दिया था । उसमें वह हर जुम्मे को कुछ दीनार डाल, रेत में गाड़ देता । यह सिलसिला महीनों चलता रहा ।

धीरे-धीरे जुबैर और महमूद को इस बात का आभास हो चला कि अबू उन दोनों से कुछ छिपाता है । अबू की गतिविधियों पर जुबैर और महमूद बारीकी से ध्यान रखने लगे थे लेकिन उन्हें कुछ पता नहीं चल पा रहा था । इधर अबू ने भरे घड़े को रात में घर लाने की योजना बनाई । रात होते ही वह निकल पड़ा । इधर महमूद और जुबैर भी चुपचाप अबू के पीछे हो लिए ।

निश्चित स्थान पर पहुंचकर, अबू ने रेत हटाकर घड़े को निकाला । उसे लेकर बढ़ने ही वाला था कि तभी आवाज आई— "क्या है इस घड़े में, लाओ इसे मुझे दो ।"

अबू के तो जैसे होश फाख्ता हो गए, वह घबराकर बोला— "क...कुछ नहीं... ।"

"बेवकूफ, मुझे बेवकूफ बना रहा है, सीधी तरह से ला वर्ना... ।"— उस व्यक्ति ने अबू को लम्बा सा खंजर दिखाते हुए कहा । अबू डाकू को पहचानता हुआ बोला— "अरे ! तुम तो अपने ही कस्बे के असलम हो । मुझे बख्श दो बेटे । लो, इसमें से कुछ दीनार मैं तुम्हें दिए देता हूं ।" अबू अपनी सारी ताकत बटोरता हुआ बोला ।

"हुंह, कुछ दीनार ले लूं और बाकी तेरे लिए छोड़ दूं ।"— कहते-कहते असलम का खंजर हवा में

लहराया।

अब तो अबू का रहा-सहा साहस भी जवाब देने लगा। उसने घड़ा डाकू को दे दिया।

"हा...हा...हा, ये दीनार तो मैं वैसे भी ले जाऊंगा। लेकिन तुझे बख्शूंगा नहीं क्योंकि तू मुझे जान गया है। अंत समय में एक बार अल्लाह को याद कर ले।"— कहता हुआ असलम अबू पर झपटा। तभी पीछे से दो व्यक्तियों ने उसके हाथ को ऊपर ही रोक लिया। फिर तो दोनों ने मिलकर उस डाकू असलम की खूब पिटाई की। जब असलम मार खा-खाकर पस्त हो गया, तो दोनों व्यक्ति अबू से बिना कुछ कहे चुपचाप जाने लगे। अबू को यह पहचानते देर न लगी कि उसकी जान बचाने वाले कोई और नहीं बल्कि उसके अपने ही दोस्त महमूद और जुबैर हैं।

अबू तेजी से भागता हुआ महमूद और जुबैर तक पहुंचा और उनके पैरों पर गिर पड़ा— "महमूद, जुबैर, मुझे माफ कर दो। दौलत के लालच में मैंने अपने भाई सरीखे दोस्तों के साथ दगाबाजी की है।" काफी देर तक वह यूं ही गिड़गिड़ाता रहा।

महमूद हालांकि अबू पर तरस खा रहा था, लेकिन फिर भी अबू की परीक्षा लेने के ख्याल से उसने कहा— "नहीं अबू, अब तुम हमारी दोस्ती के लायक नहीं हो। हम दोनों इन दीनारों में से एक भी नहीं लेंगे। जाओ, अब तुम इन दीनारों से अपना अलग व्यापार करो।"

"नहीं महमूद, ऐसा न कहो। वास्तव में मैं तुम्हारी दोस्ती के लायक नहीं, लेकिन मुझे सिर्फ एक मौका दे दो।"- कहता हुआ अबू फफक-फफककर रोने लगा।

अब महमूद से रहा न गया। वह भी अबू से लिपटकर रोने लगा। जुबैर भी बगल में खड़ा आंसू बहाए जा रहा था। कुछ देर बाद जब तीनों के आंसू रुके, तो महमूद ने अबू से कहा— "भूल जाओ पुरानी बातों को मेरे दोस्त। समझ लो, व्यापार की शुरुआत हम आज से ही कर रहे हैं।" यह सुनते ही अबू का चेहरा खिल उठा। ●

छोड़ दे बांसुरी

—डा. आशा जोशी

टिहरी गढ़वाल में एक गांव है बागुड़ी। वहां कभी जीतू बगड़वाल नामक युवक रहता था। वह सुंदर, धनी और उदार स्वभाव का था। हरेक से मीठा बोलता, मस्त रहता। जीतू की एक बहन थी शोभा। जैसा नाम था, वैसी ही रूपवती थी वह।

जीतू ने अपनी बहन का रिश्ता पास वाले गांव में किया। शादी के बाद शोभा पीहर आई। कुछ दिन रहकर जाने लगी, तो जीतू उसे ससुराल छोड़ने गया। शोभा की एक ननद थी—भरणा। जीतू को भरणा अच्छी लगी। वह भरणा से मिलने के लिए बार-बार बहन की ससुराल पहुंच जाता।

एक बार धान की रोपाई का समय आया। पंडितों ने मुहूर्त देखकर पहला पौधा रोपने वाले का नाम निकाला। उस गांव की ऐसी ही परम्परा थी। पहला नाम शोभा का निकला। जीतू ने मां से कहा—"मैं जाकर शोभा को ले आता हूं।" जैसे ही जीतू ने अपना वाक्य पूरा किया, आंगन में बंधी बकरी छींक उठी। गढ़वाल में बकरी का छींकना अशुभ माना जाता है।

जीतू की मां का मन डर गया। उसने कहा—"बेटा, तू मत जा।" पर जीतू ने जाने की हठ ठान ली। इस पर मां बोली—"मैं कहती हूं तू मत जा, पर फिर भी अगर जा रहा है, तो मेरी बातें ध्यान से सुन। अपनी बांसुरी साथ मत ले जा।"

—"मां, बांसुरी तो मुझे बहुत प्यारी है। मैं उसे जरूर ले जाऊंगा।"

—"रास्ते में छायादार पेड़ के नीचे और नदी किनारे मत बैठना।"

"क्यों मां?"—जीतू उत्सुक होकर बोला।

मां ने समझाते हुए कहा—"बेटा, छायादार पेड़ों और पहाड़ की चोटियों पर तथा नदी के एकांत तट पर आंचरियां (परियां) रहती हैं। वे अकेले व्यक्ति को अपने माया जाल में फंसा लेती हैं।"

—"मां, आंचरि क्या होती हैं ?"

"सुना जाता है कि बिन ब्याही लड़कियां अकाल मृत्यु होने पर आंचरि बन जाती हैं। क्योंकि उनकी सारी इच्छाएं अधूरी रह जाती हैं। इसलिए वे भटकती रहती हैं।"—मां ने गंभीर स्वर में कहा।

जीतू ने मां को तसल्ली दी—"मां, मैं तेरी सारी बात समझ गया। जैसा तू कह रही है, वैसा ही करूंगा।" और फिर वह सफर पर चल दिया। लेकिन थोड़ी देर बाद ही उसका चंचल मन मां की सब बातें भूल गया। वह सुस्ताने के लिए नदी किनारे एक पेड़ के नीचे जा बैठा और तन्मय होकर बांसुरी बजाता हुआ गाने लगा।

उस पेड़ पर रहने वाली आंचरियों ने भी उसका गाना सुना। आंचरियों ने पेड़ से उतरकर जीतू को घेर लिया। उनकी मुखिया बोली—"जीतू, हमें गाना सुनाओ।"

अब जीतू को मां की चेतावनी याद आ गई। उसने वहां से चल देने में ही कुशल समझी। बोला—"मुझे तुरंत अपनी बहन के पास पहुंचना है। मैं रुक नहीं सकता। जब तक वह गांव नहीं जाएगी, धान की रोपनी रुकी रहेगी।"

लेकिन आंचरियों ने उसकी एक न सुनी। उन्होंने कहा—"हमारी इच्छा के बिना तुम एक कदम भी नहीं बढ़ा सकते।" अंत में आंचरियों ने जीतू से वचन ले लिया कि शोभा को गांव पहुंचाकर वह सीधा उनके पास आ जाएगा। इसके बाद ही आंचरियों ने उसे वहां से जाने दिया। जीतू चला तो परियों ने उससे कहा—"यह मत समझना कि तुम हमें धोखा दे सकते हो। अगर तुमने वचन तोड़ा और नहीं आए, तो हम स्वयं तुम्हें यहां ले आएंगी।" परियों ने जीतू को किसी और के सामने बांसुरी बजाने के लिए मना कर दिया।

जीतू उदास मन से आगे चल दिया। मां की सीख न मानने का पछतावा उसे परेशान कर रहा था। शोभा की ससुराल जाकर उसने धान रोपने की बात बताई। शोभा अपनी ननद भरणा को लेकर भाई के साथ चल दी।

जीतू सदा भरणा को देखते ही हंसने लगता था, लेकिन उस दिन वह उदास था। मन में बार-बार एक ही बात उठ रही थी—"न जाने अब क्या होने वाला है?"

शोभा अपने पीहर पहुंच गई। गांव वाले धान रोपने की तैयारी में जुट गए। धान का सबसे पहला पौधा शोभा ने रोपा। भरणा भी वहीं पास में खड़ी थी। जीतू एक पल के लिए आंचरियों से किया वादा भूल गया और मस्त होकर बांसुरी बजाने लगा।

बांसुरी की मीठी धुन सुनकर, सब झूम उठे। पर तभी तेज अंधड़ आ गया। ऐसा लगा मानो आकाश हजारों पंछियों से घिर गया हो। चारों ओर धूल ही धूल छा गई। पक्षियों के रूप नें आंचरियां ही वहां आई थीं। फिर सबके देखते-देखते जीतू उनके साथ धरती में समा गया।

काश, जीतू ने मां का कहना मान लिया होता।

(गढ़वाल की लोक-कथा)

□ मालकिन—तुम्हें खाना बनाना भी नहीं आता, फिर तुम यहां क्या करोगी ?
नौकरानी—मैं यहां आपसे खाना बनाना सीखूंगी। फिर आप जो सिखाएंगी, वही सीखूंगी।

□ पति—तुम परसों जाने की बात कर रही थीं, फिर कल क्यों जा रही हो ?
पत्नी (चिट्ठी दिखाते हुए)—इसे पढ़ो, तो पता लग जाएगा कि परसों कितने मेहमान यहां आने वाले हैं।

□ नेता—मैं छोटा-सा नेता हूं। आप लोगों को क्या दे सकता हूं ?
एक श्रोता—अपना इस्तीफा।

□ मां—बेटी, दिन भर यहां खेलती ही रहोगी या पढ़ाई भी करोगी ?
बेटी—अच्छा मां, मैं अब कल से स्कूल में दिन भर खेलूंगी और यहां पढ़ाई करूंगी।

□ एक अधिकारी—एक पत्र में इतनी सारी गलतियां क्यों हैं ?
कर्मचारी—सर, मैं तो वही टाइप करता हूं, जो आप मुझे लिखकर देते हैं।

□ रोगी—डाक्टर साहब, कल आपने मुझे पहली बार बहुत अच्छी दवा दी। दवा खाते ही बुखार गायब।
डाक्टर—तुमने भी तो पहली बार मुझे पूरे पैसे दिए तभी मैंने तुम्हें अच्छी दवा दी।

□ नीतू—अपना टॉमी बहुत अच्छा है, चुपचाप पड़ा रहता है।
सोनू—लगता है, उसने अपना काम तुम्हें सौंप दिया है।

□ एक सवारी—क्यों भाई, सदर बाजार चलोगे ?
तांगे वाला—अभी मैं घोड़े से पूछकर बताता हूं, तब तक आप दूसरे तांगे वाले से पूछ लीजिए।

□ सम्पादक—आपने कविता अच्छी लिखी है, पर बीच-बीच में कहीं गड़बड़ है।
कवि—हां, क्योंकि कविता लिखते समय ही मेरा बेटा मुझे अपना पैन दे गया और मेरा पैन ले गया। आगे से आपको पूरी कविता अच्छी लिखी मिलेगी।

□ एक गप्पी—मैं सोचता हूं कि सोने का महल खड़ा करूं।
दूसरा गप्पी—इरादा तो अच्छा है, कुछ दिन पहले बता देते, तो मैं सोना गरीबों में न बांटता।

□ एक यात्री—सर, गाड़ी कब आएगी ? सुबह से शाम हो गई इंतजार करते-करते। गाड़ी कल आई तो...
स्टेशन मास्टर—चिंता क्यों करते हो ? वैसे भी मैंने तुम्हें आज का नहीं, कल का टिकट दिया है।

□ एक मित्र—भाई, तुम हमेशा रुपए लेने की ही बात करते हो। कभी देने की भी बात किया करो।
दूसरा मित्र—अरे भाई, जब तुमसे रुपए मिलेंगे, तभी तो देने की बात करूंगा।

□ दुकानदार—साहब, यह साबुन देखिए, कितना महक रहा है।
ग्राहक—क्यों झूठ बोलते हो ? महक का पता आंख से नहीं, नाक से लगता है ?

□ दारोगा—तुमने जेब काटना कहां से सीखा ?
अभियुक्त—हुजूर, दर्जी की दुकान से।

□ ड्राइवर—कंडक्टर, मैं गाड़ी चलाऊं ?
कंडक्टर—थोड़ी देर रुक जाओ। पहले मैं यात्रियों से किराया वसूल लूं। यदि रास्ते में गाड़ी खराब हो गई तो कल की तरह कोई धेला भी नहीं देगा।

□ एक अध्यापक—हर काम ठीक समय पर करना चाहिए।
एक छात्र—सर, इसीलिए मैं ठीक समय पर घर जाने के लिए पहले ही बस्ता कसकर तैयार हो जाता हूं।

□ एक डाक्टर—पागलों का इलाज मैं नहीं, मेरा पड़ोसी करता है।
रोगी—मैं पहले उनके पास ही गया था। पर उन्होंने रोग बढ़ जाने के कारण ही मुझे आपके पास भेजा है।

तेनालीराम (३१६)

शीतल महल

राजा कृष्णदेव राय के दरबार में काशी से एक पंडित जी आए। उनके बारे में प्रसिद्ध था कि न तो वह किसी से नाराज होते हैं, न किसी पर बिगड़ते हैं।

राजा कृष्णदेव राय ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। दरबार में कहा— 'जो पंडित जी को छुए बिना, उनका अहित किए बिना उन्हें नाराज कर देगा, उसे अशर्फियोंभरा थाल देंगे।'

सारे दरबारी पंडित जी को नाराज करने पर तुल गए। किंतु नाराजी तो दूर, पंडित जी के माथे पर सिलवटें तक न पड़ीं। सबने हार स्वीकार की, तो तेनालीराम मुसकराने लगा। पुरोहित को उसकी मुसकान चुभ गई।

तेनालीराम बोला— "सिर्फ एक घंटे का समय मिले तो फैसला हो जाए।" राजा ने 'हां' कर दी।

पंडित जी राजा कृष्णदेव राय के शीतल महल में ठहरे थे। वहां काफी ठंडक रहती थी। अचानक एक घुड़सवार पंडित जी के पास पहुंचा। बोला— "आप मुझे अपने कमरे में ठहरा लें,तो कृपा होगी। मेरा शरीर धूप से तप रहा है।"

पंडित जी ने मुसकरा कर कहा— "इसके लिए राजा से अनुमति ले आओ।"

घुड़सवार के जाने के बाद उनके पास एक बुढ़िया आई। उसने भी शीतल महल में ठहरने को कहा।

बुढ़िया गई, तो एक देहातिन आ टपकी। लगी ठहरने की जिद करने। पंडित जी ने उसे भी भगा दिया।

देहातिन गई, तो एक बालक आ गया। महल में ठहरने की जिद करने लगा। बार-बार की इस बेतुकी बात पर पंडित जी बौखला उठें।

बालक गया ही था कि एक बूढ़ा आ धमका। वह भी महल में ठहरने की जिद करने लगा। पंडित जी का पारा चढ़ गया। डंडा उठाकर उसके पीछे भागे।

अचानक महल की अटारी से कई लोगों के हंसने की आवाज आई। पंडित जी ने देखा— वहां राजा कृष्णदेव राय दरबारियों के साथ खड़े थे। तभी बूढ़े ने भी अपना वेश उतार डाला। वह तेनालीराम था। पंडित जी के सामने ही राजा ने उसे थाल भर अशर्फियां दीं। पंडित जी का सिर झुक गया।
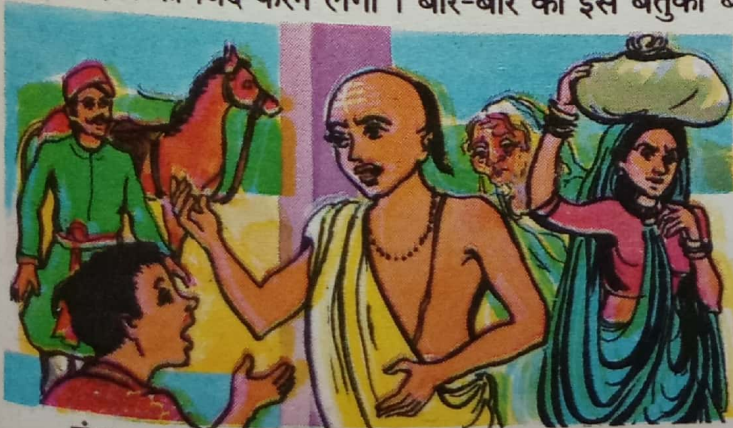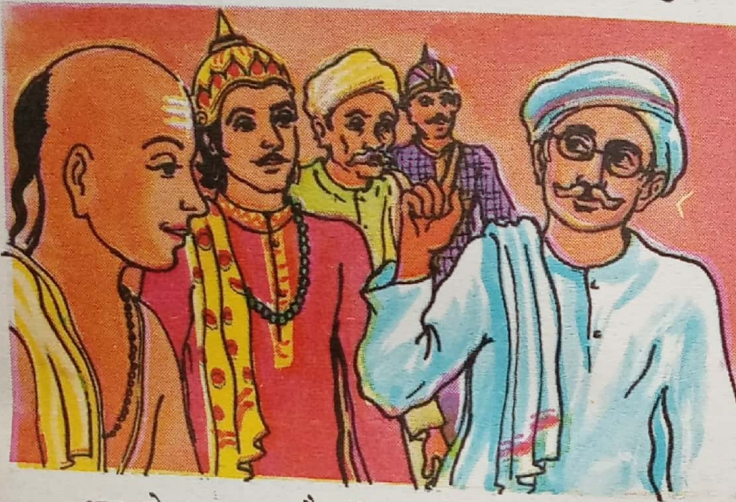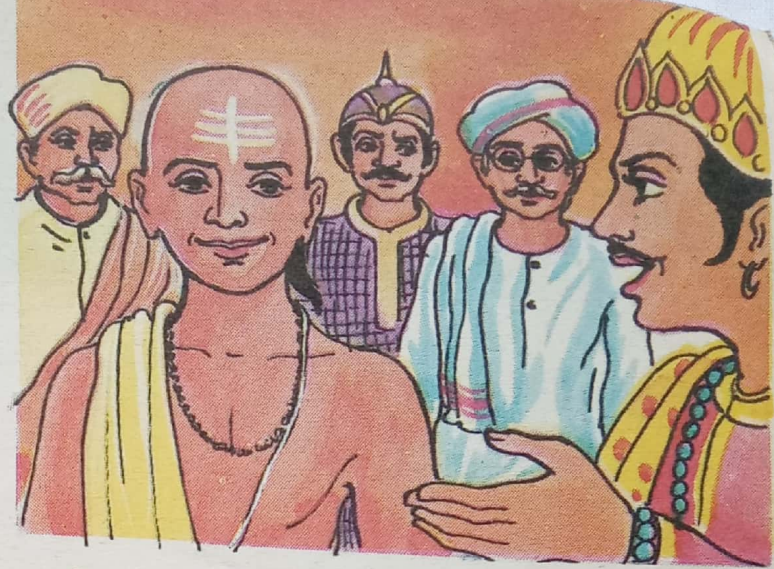
कैम्पको ने संवारी
Campco
मस्त-मज़ेदार-खरी ये चॉकलेट
प्लांट की है भेंट. कैम्पको,
मिले सबको!
Campco
mega bite
Bite
है खरी मस्ती!
Campco
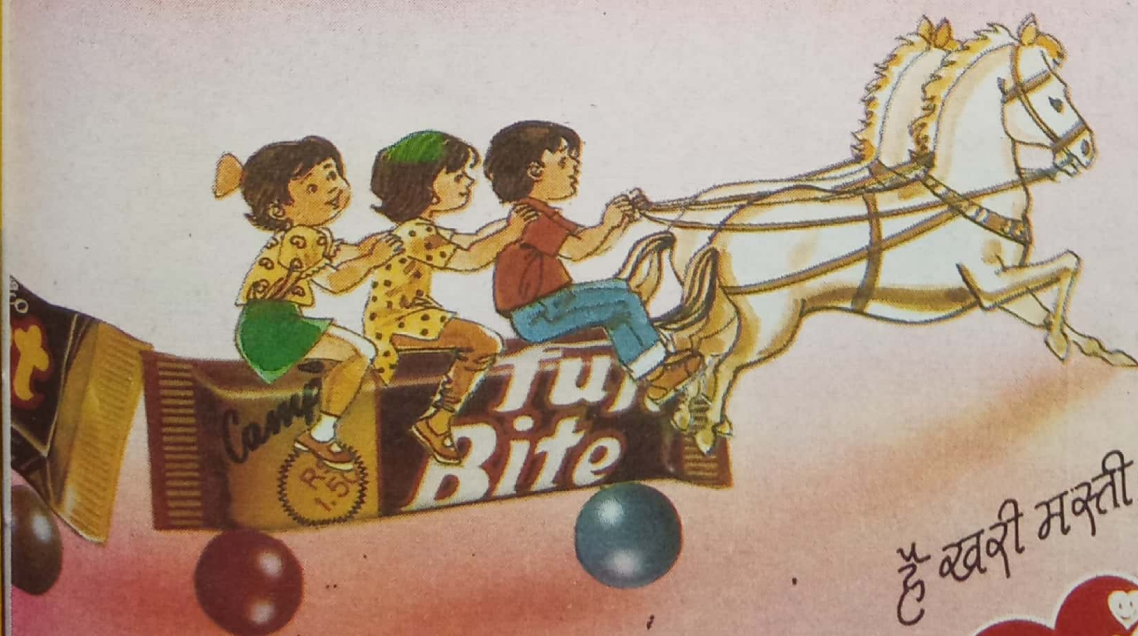
इससे बढ़कर कौन !
PARLE
big chief
BANANA
नया
बिग चीफ
फलों के स्वादवाली टॉफी
केला ♦ मैंगो ♦ ऑरेंज
पारले
everest/94/PP/72-hn

नींद गायब

—डा. वीरेंद्र शर्मा

एक मोची था। वह ईमानदार और अपने काम में कुशल था। वह पूरे दिन मन लगाकर काम करता, शाम होते ही घर लौट आता। फिर पत्नी और बच्चों के साथ मिलकर खाना खाता। उनसे बातचीत करता। समय पर सो जाता। पूरी मेहनत करने पर भी मुश्किल से गुजर-बसर होती थी। मोची की सरलता और उसके अच्छे स्वभाव को देखकर गांव के एक धनी जमींदार को उस पर दया आ गई। एक दिन जमींदार ने मोची को सोने के सिक्कों की थैली देते हुए उससे कहा— "भैया, यह थैली ले लो। जैसे चाहो, खर्च करो और सुख से रहो।" मोची बहुत खुश हुआ। वह थैली को लेकर घर चला आया।

मोची ने पत्नी को थैली देते हुए कहा— "देखो, अब हम लोग धनी हो गए हैं। अब तुम्हारे लिए मैं नए-नए गहने खरीदूंगा। तुम्हारे बच्चों के लिए नए-नए कपड़े बनवाऊंगा। हम लोग एक नया मकान बनवाएंगे। एक घोड़ा गाड़ी खरीदेंगे। फिर दूसरे नगरों की यात्रा करेंगे। बोलो, ठीक है न ?"

पत्नी यह सब सुनकर बहुत खुश थी। रात हुई,तो बच्चे सो गए।

पर मोची और पत्नी की आंखों में नींद कहां ? क्योंकि उन्हें थैली की चिंता थी— 'कहीं चोर थैली न चुरा ले जाए।' वे दोनों विचार करने लगे कि थैली कहां छिपाकर रखी जाए। जब कोई उपाय नहीं सूझा, तो उन्होंने निश्चय किया कि थैली को बिस्तर के नीचे रखकर उसके ऊपर सो जाना ही अच्छा रहेगा। उन्होंने थैली बिस्तर के नीचे रख दी और सोने लगे।

थोड़ी देर बाद मोची ने पत्नी से कहा— "हम दोनों ही सो गए,तो चोर थैली ले जा सकता है। इसलिए ऐसा करते हैं कि पहले तुम सो लो, मैं जागता रहूं। बाद में तुम जागना और मैं सो जाऊंगा।" पत्नी बोली— "नहीं, मैं जागती हूं और दरवाजे की ओर देखती रहूंगी। आप सो जाइए।" किंतु मोची को नींद कहां ? बीच-बीच में उठकर बातचीत करता। इसी तरह पूरी रात बीत गई। मोची और पत्नी उस रात सो भी नहीं सके।

दूसरे दिन मोची दुकान पर गया। किंतु पूरे दिन काम में उसका मन नहीं लगा। एक तो वह रात का जगा हुआ था, उसकी आंखें नींद से बोझिल थी और मन में थैली की चिंता।

दिन का काम जैसे-तैसे समाप्त करके मोची शाम को घर लौटा। खाना खाया। बच्चे सो गए पर मोची और उसकी पत्नी को थैली की चिंता ने फिर घेर लिया। रात को थैली कहीं दूसरी जगह रखने की बात सोची गई। पति-पत्नी ने निश्चय किया कि घर के पिछवाड़े वाली जमीन में गड्ढा खोदकर थैली छिपा दी जाए। दोनों घर के पिछवाड़े गए। गड्ढा खोदा। थैली उसमें रख दी। वे सोने लगे। तभी हवा का झोंका आया। वे उठ बैठे। चाहकर भी वे रात में नहीं सो सके।

उस थैली के कारण मोची न तो दिन में ढंग से काम कर पाता, और न ही रात को उसे नींद आती। धीरे-धीरे वह चिड़चिड़ा हो गया। आए दिन घर में झगड़ा होने लगा। घर का अमन-चैन लुट गया।

एक दिन पति-पत्नी ने आपस में खूब देर तक विचार किया।

पत्नी बोली— "हमारा अमन-चैन हड़पने वाली यह थैली ही है।" मोची ने कहा— "तुम ठीक कहती हो।"

इतना कहकर मोची ने थैली उठाई। वह जमींदार के घर पहुंचा। उसने जमींदार को सारी बात बताते हुए थैली लौटा दी। फिर खुशी-खुशी घर लौट आया और आराम से रहने लगा। •

आज दाना कल पानी

—डा. गार्गी गुप्त

भोला अठारह वर्ष का हो रहा था; पर अभी तक उसे छोटे बच्चों के साथ गुल्ली-डंडा और कंचे खेलने में मजा आता था। काम से वह सदा जी चुराता। न अपने बापू के साथ जाकर फेरी लगाकर कपड़ा बेचने में हाथ बंटाता और न मां के साथ कोई काम करता।

मां बार-बार उसकी मनुहार करती—"देख बेटा, तेरा बापू सारा दिन फेरी लगाता है। तू भी साथ जाकर कपड़ा बेचने में उसकी मदद क्यों नहीं करता ? अगर कुछ करेगा नहीं, तो खाने को कहां से आएगा ?"

पर भोला था पहले दर्जे का कामचोर और आलसी। मां से कहता—"जानती है मां, बाबा मलूकदास ने क्या कहा है—

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम,
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।"

फिर उत्साह में आकर बोला—"अरी मेरी प्यारी अम्मां, राम अजगर और पंछी तक को बिना काम किए खाना देते हैं, तो क्या मुझे नहीं देंगे ?"

मां यह सुनकर भौंचक्की रह गई। फिर झुंझलाकर बोली—"अरे अभागे, किसने सिखाया-पढ़ाया है यह सब तुझे ?"

यह कहकर उसने खाने की थाली सामने से खींचकर दरवाजे की तरफ अंगुली दिखाई। भोला को भी गुस्सा आ गया। उसने थाली परे सरकाई और घर छोड़कर चला गया।

भोला जहां भी गया, भाग्य उसके आगे-आगे भागता रहा। किसी तरह भागते-दौड़ते एक दिन वह बुढ़िया से टकरा गया। बुढ़िया आंखें तरेरते हुए बोली—"अंधा है क्या ? भला इस तरह बदहवास कहां भागा जा रहा है।"

"मुझे रोक मत, नानी। रोकेगी तो मेरा भाग्य मुझसे आगे निकल जाएगा। जब तक वह मेरे हाथ नहीं आता, मैं ऐसे ही दौड़ता रहूंगा।"—भोला घबराकर बोला।

बुढ़िया ने उसे एक सुनहरा पिंजड़ा दिया जिसमें बहुत सुंदर तीन तोतियां थीं। पिंजड़ा देकर बुढ़िया बोली—"ले, ये तोतियां ले जा। खूब बोलती हैं। लोगों की बढ़िया नकल उतारती हैं। इनसे तुझे कुछ न कुछ आमदनी जरूर हो जाएगी।"

फिर उसे समझाते हुए कहा—"लेकिन एक बात का ध्यान रखना। इन तोतियों को एक दिन दाना देना और एक दिन पानी। दोनों चीजें भूलकर भी एक साथ मत देना। अगर ऐसा करेगा, तो तेरे भाग्य के साथ ये भी उड़ जाएंगी।"

भोला ने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और पिंजड़ा लेकर तेजी से आगे बढ़ गया। अब वह तोतियों को लेकर कभी किसी मेले में, कभी चौक में और कभी हाट-बाजार में जा बैठता। तोतियां तरह-तरह की नकल करके लोगों का मनोरंजन करतीं और लोग खुशी-खुशी पिंजड़े में पैसे डाल जाते।

भोला इस तरह अपने हाथ में पिंजड़ा और भाग्य का पल्लू थामे गांव-गांव जाकर लोगों का खूब मन बहलाता था। अब उसकी जेब भी भरने लगी थी।
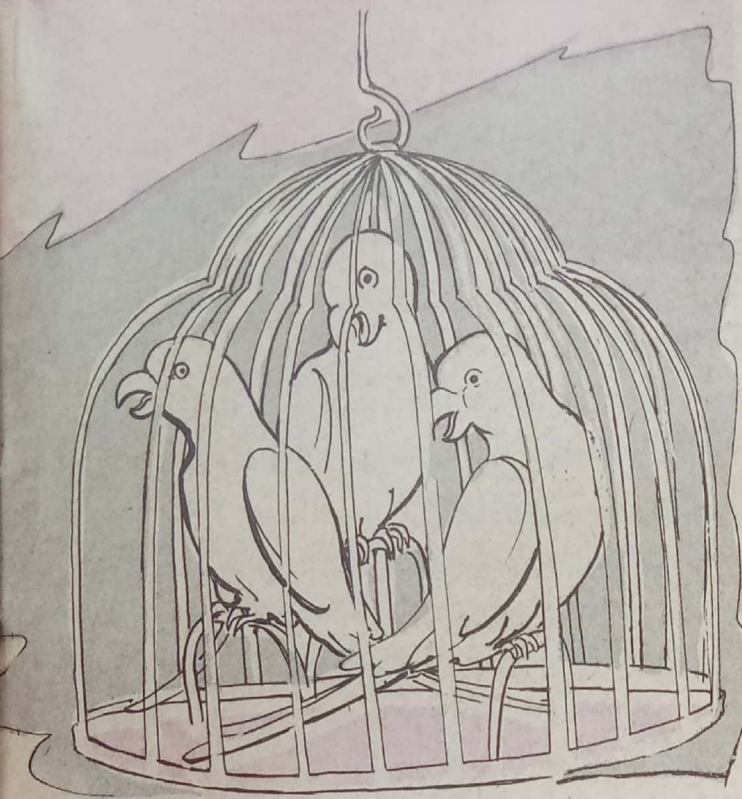
एक दिन की बात है। दिन भर चलते-चलते भोला थककर चूर हो गया था। रात को आराम से सोने से लिए वह एक चौपाल में ठहर गया। अभी अपनी कमर सीधी कर ही रहा था कि उसने सुना, तीनों तोतियां आपस में कुछ खुसर-पुसर कर रही हैं।

एक तोती दूसरी से कह रही थी—"आज तूने दाना खाया ?"

दूसरी बोली—"हां, दाना तो खाया, पर पानी नहीं पिया।"

तीसरी तुरंत बोली—"और मैंने भी !"

भोला यह सुनकर गुस्से से बोला—"चुप रहो, क्या टर्र-टर्र लगा रखी है ! पानी तुम्हें कल मिलेगा।"

अगले दिन शाम को तोतियां फिर बातें करने लगीं। पहली बोली—"आज तो तूने जी भरकर पानी पिया होगा ?" दूसरी ने कहा—"हां, खूब पिया। लेकिन आज दाना नहीं मिला।" तीसरी बोली—और मुझे भी।" फिर एक बुड़बुड़ाई—"पता नहीं, यह आदमी नाम का तो भोला है, पर है बड़ा चालाक। एक दिन पानी देता है और एक दिन दाना। समझ में नहीं आता, दोनों एक साथ क्यों नहीं देता ? हम तो इससे तंग आ गए। अगर यह हमें दोनों चीजें एक साथ नहीं देगा, तो हम भी कल से बोलियां बोलना बंद कर देंगे।"

भोला ने जब उन्हें इस तरह बड़-बड़ करते सुना, तो डपटकर बोला—"चुप रहो कमबख्तो। जब देखो टर्र-टर्र लगाए रहती हैं। न स्वयं सोती हैं और न मुझे सोने देती हैं। अब चुप हो जाओ, वरना कल से कुछ भी देना बंद कर दूंगा। मैं इतना थका हुआ हूं और तुम्हें अपने दाने-पानी की पड़ी है। कल तुम्हें दोनों चीजें मिल जाएंगी।"

अगले दिन शाम को भी भोला बेहद थका था। जोर की नींद आ रही थी। तोतियां बड़बड़ा कर उसकी नींद खराब न करें, यह सोच, भोला ने तीनों को दाना और पानी एक साथ दे दिया और लम्बी तानकर सो गया।

सुबह जब उसकी आंख खुली, तो उसका दिल धक से रह गया। वहां न पिंजड़ा था और न तोतियां। उसने देखा, दूर पूरब की ओर उसका भाग्य तोतियों का पिंजड़ा लिए भागा जा रहा था।

'आलस छोड़ो, काम करो।' —तोतियां बड़बड़ा रही थीं। वह उनकी आवाज पूरी तरह सुन रहा था।

भोला सिर पर हाथ रखकर बैठ गया और सोचने लगा—'अब क्या करूं, कहां जाऊं ? सोचा था, इस बार भाग्य को पकड़कर रखूंगा, पर वह तो मेरे हाथ से छूटकर भागा जा रहा है। मैं भी कैसा जिद्दी हूं। न मां का कहना माना, न बुढ़िया नानी का। लम्बी तान कर सोने के लिए, न भला सोचा, न बुरा।'

फिर वह बड़बड़ाया—'मां के पास ही चलता हूं। मां फिर भी मां होती है। वह मुझे जरूर माफ कर देगी। मैं भी अब कसम खाता हूं कि अब से मैं बैठे-ठाले रोटियां नहीं तोड़ूंगा और कुछ न कुछ काम जरूर करूंगा। और कुछ नहीं तो बापू के साथ बाजार जाऊंगा। गली-गली फेरी लगाऊंगा और अपनी मेहनत की रोटी खाऊंगा।"

उसकी मेहनत से खुश होकर सचमुच भाग्य एक दिन बिना बुलाए आकर उसके पास बैठ गया।

आज उसकी अपनी दुकान है। उसका बापू भी उसकी मदद करता है। ●

घंटी की डोर

—डा. पुनीत अग्रवाल

राजगढ़ में विजय उत्सव की तैयारी जोरों पर थी।

नागरिकों में उत्साह था। वे घरों को फूल-मालाओं से सजा रहे थे। नगर द्वारों को बंदनवारों से सजाया गया था।

आज राजगढ़ की सेना, राज्य से सटे अपने सबसे पुराने दुश्मन राज्य, किशनगढ़ को युद्ध में हरा कर लौटी थी। सैनिकों का अभिनंदन करने के लिए विजय उत्सव मनाया जाना था।

राजमहल फूलों से ढक दिया गया था। अधिकारी एवं कर्मचारी काम में लगे थे। महल के अंदर वाले मैदान में पानी का छिड़काव किया गया था।

नागरिक मैदान के चारों तरफ जमा थे। उत्सव प्रारंभ ही होने वाला था। तभी एक वृद्ध किसान वहां आया। वृद्ध के चेहरे पर उदासी थी। वह मैदान में नहीं बैठा। वह सीधा महल के प्रवेश द्वार पर पहुंचा। द्वार पर टंगी घंटी की डोर खींचने लगा। घंटी की आवाज चारों तरफ दूर-दूर तक गई। लोग चुपचाप वृद्ध को देख रहे थे। जिन सैनिकों को पुरस्कार एवं सम्मान दिया जाना था, राजा और मंत्री उस पर चर्चा कर रहे थे। उनके कानों में भी घंटी की आवाज पहुंची। वे तुरंत बाहर आए। राजा मंच पर बने सिंहासन पर बैठ गए। उन्होंने वृद्ध से घंटी बजाने का कारण पूछा।

वृद्ध ने कहा— "महाराज, मैं राजधानी से दूर जंगल में चैन से रहता था। साथ में मेरा दस साल का पोता भी रहता था। मेरे लड़के और बहू की पिछले वर्ष मृत्यु हो गई थी। मेरे पास अब सिर्फ एक छोटा-सा खेत है जिसमें मेहनत से अपने गुजारे लायक कुछ खेती कर लेता हूं। विजय के उन्माद में लौटती राज्य की सेना ने मेरे खेत को उजाड़ दिया। सारी फसल बरबाद हो गई। मेरा पोता भी सैनिकों के घोड़ों के पैरों तले आकर मर गया। मैं बच गया हूं।" यह सुन, राजा के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभर आईं—'जिस सेना के सम्मान में आज उत्सव मनाया जाने वाला है, उसी के खिलाफ ऐसी शिकायत! वृद्ध के साथ न्याय होना चाहिए।'

राजा मंच से उठे। वह मंत्रणा कक्ष में पहुंचे। साथ में मंत्री भी था।

मंत्री ने राजा से कहा—"महाराज, वृद्ध के साथ अन्याय हुआ है। आप उसके लिए जैसा उचित समझें, वैसा मुझे आदेश दें।"

राजा ने मंत्री से विचार-विमर्श किया। फिर वह मंच पर पहुंचे। बोले—"मेरे सैनिकों ने इस वृद्ध को बेसहारा कर दिया। यह वृद्ध पोते के निधन से शोक में डूबा है। ऐसे में विजय उत्सव कुछ दिन के लिए स्थगित किया जाता है। इसके साथ ही मैं एक राज कर्मचारी, इस वृद्ध की आजीवन देखभाल के लिए नियुक्त करता हूं। इसका सारा खर्चा राज्य उठाएगा। ऐसे अपराध के लिए भविष्य में दोषी सैनिकों को कठोर दंड दिया जाएगा। मैं सैनिकों की इस गलती के लिए वृद्ध से क्षमा मांगता हूं।"

यह घोषणा सुन, लोग राजा का जयजयकार करने लगे। ●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं
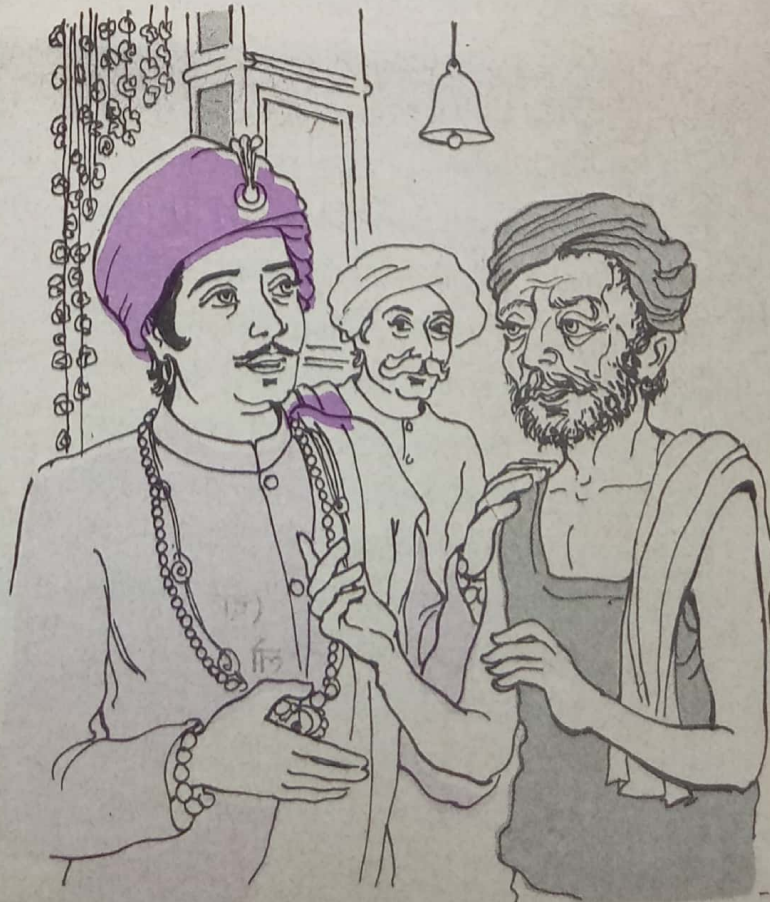
नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. ढोल बजाओ, — रे भाई, पानी बरसा ! (झूलो/चलो)

२. इस — में भला ऐसी क्या खासियत है रामभरोसे ! (टोपी/टोली)

४. मैं — से यह विद्या पढ़कर आया हूं गुरुदेव ? (काका/काशी)

८. लेकिन — को इस पर आपत्ति क्या है ? (दादा/दासी)

९. ठीक है, दोनों मिल-बांटकर — लो। (खा/पी)

११. अंधेरी रात में — की आवाज ने मुझे डरा दिया। (मेघ/बाघ)

१२. भारत में ताजे पानी की बड़ी झील।

ऊपर से नीचे

३. मैंने भाई, छककर खाए — टमाटर ! (गोल/लाल)

५. जितनी —, उतने गेहूं के दाने होंगे। (बूंदें/गेंदें)

६. भई, तुम किस — की बात कर रहे हो ? (बया/बला)

७. — की जिद है, रस्सी टप्पा खेलो। (छोटी/बेटी)

१०. बारिशों में इस मिठाई के क्या कहने !

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०८

नाम ____________________

उम्र ______ पता ____________________

____

न.ज्ञा.प. ३०८

मनभावन चार्ट
CHARTS FOR BUDDING KIDS
HISTORICAL BUILDINGS OF INDIA
OUR NATIONAL SYMBOLS
AZADI KE SENANI आज़ादी के सेनानी
PICTORIAL VEGETABLES CHART
MEANS OF TRANSPORT
MUGHAL PERIOD
आकृतियाँ SHAPES
PICTORIAL FLOWERS CHART
BIRDS CHART पक्षियों का चार्ट
PICTORIAL FRUITS CHART
PICTORIAL ANIMALS CHART
Attention Children
बाल साहित्य के प्रकाशक के रूप में हमारा जाना-माना नाम है। हम अब प्रस्तुत करते हैं 100 से अधिक शिक्षा सम्बन्धी रंगीन चार्टों का ऐसा संकल्न जो आपके बच्चों का होम-वर्क करने में भरपूर सहायक सिद्ध होगा। ये चार्ट बच्चों के आस-पास के संसार के बीरे में हैं और नये-नये तथ्यों और रोचक जानकारियों का परिचय कराते हैं। इन चार्टों में छोटे-से-छोटे विवरणों को भी देने का प्रयास किया गया है। जो निश्चय ही बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा में पूर्णतया उपयोगी हैं।
INDIAN BOOK DEPOT
(Map House)
2937, Bahadur Garh Road,
Delhi-110006.
Ph: 7773927, 523635.

वनदेवी की बेटी

—दिलीपकुमार तेतरवे

कौशल के राजा चंद्रवर्मा चिंता में थे। अचानक उन्होंने अपने महामंत्री पटवर्धन को आदेश दिया—"नवजात राजकुमारी श्यामा को गुरु रुद्र के आश्रम में पहुंचा दिया जाए। साथ ही, गुरु रुद्र से यह कहा जाए कि वह किसी को असलियत न बताएं कि उनके आश्रम में पलने वाली यह बदसूरत लड़की किसकी पुत्री है। इस लड़की के लालन-पालन पर होने वाले खर्च के लिए गुरु रुद्र को बारह हजार स्वर्ण मुद्राएं प्रति वर्ष राजकोष से भेजने की व्यवस्था कोषाध्यक्ष करेंगे।"

"जैसी आपकी आज्ञा।"—कहकर महामंत्री पटवर्धन ने राजकुमारी श्यामा को गुरु रुद्र के आश्रम में पहुंचा दिया।

श्यामा को आश्रम भिजवाकर राजा चंद्रवर्मा तो निश्चिंत हो गए, लेकिन रानी पद्मावती अपनी नवजात पुत्री के वियोग में दुखी रहने लगी। वह अपने पति के कठोर स्वभाव से परिचित थी। फिर भी उसने एक दिन राजा चंद्रवर्मा से प्रार्थना की—"देव, मैं अपनी पुत्री के वियोग में मर जाऊंगी। मेरी प्राण रक्षा के लिए उसे कृपया गुरु रुद्र के आश्रम से वापस बुला लें।"

राजा चंद्रवर्मा क्रोध भरे स्वर में बोले—"मेरे राजमहल में जड़े हीरे-जवाहरात हों, स्वर्ण पिंजरों में पक्षी हों, दास-दासियां हों, या बाग में खिलने वाले फूल हों, सभी सुंदरता से भरे हुए हैं। ऐसे सुंदर महल में श्यामा की क्या आवश्यकता? तुम उस कुरूप लड़की को सदा के लिए भूल जाओ।"

रानी पद्मावती श्यामा को भूल नहीं पाई। पुत्री वियोग के दुःख में आंसू बहाती, एक दिन रानी का देहांत हो गया। कुछ ही दिनों के बाद राजा चंद्रवर्मा ने रूपनगर की राजकुमारी उज्ज्वला से विवाह कर लिया। साल बीता और रानी उज्ज्वला ने एक अत्यंत सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम वीर विक्रम रखा गया।
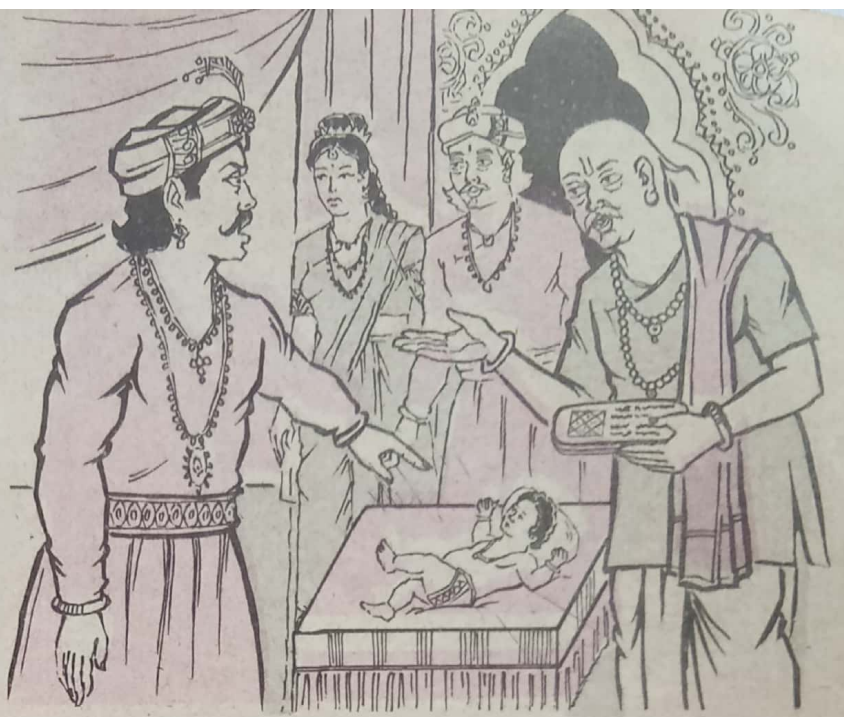
समय बड़ी तेजी से गुजरता है। राजकुमार वीर विक्रम बीस वर्ष का हो गया। राजा चंद्रवर्मा राजकुमार को राज सिंहासन सौंपने की तैयारी करने लगे, लेकिन एक दिन महामंत्री पटवर्धन ने सेनापति शेरसिंह का सहयोग लेकर, राजा चंद्रवर्मा, रानी उज्ज्वला और राजकुमार वीर विक्रम को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया।

महामंत्री पटवर्धन ने कारागार में आकर राजा चंद्रवर्मा को सूचित किया—"देव, मैंने आप लोगों को कौशल के हित में बंदी बनाया है। आप राजकुमार वीर विक्रम को राज सिंहासन सौंपना चाह रहे थे, लेकिन आपका यह पुत्र स्वभाव से कायर है। यह राजा बनने योग्य नहीं है। अतः मैं आज से अपने आपको राजा घोषित कर रहा हूं।"

राजा चंद्रवर्मा ने आवेश में कहा—"दुष्ट, तुमने हम लोगों को छल से तब बंदी बनाया, जब हम निहत्थे थे। तुम में अगर वीरता है, तो तुम राजकुमार वीर विक्रम से द्वंद्व-युद्ध करो।"

महामंत्री पटवर्धन ने कहा—"देव, मैं युद्ध के लिए तैयार हूं। लेकिन आप राजकुमार वीर विक्रम से भी उनकी इच्छा पूछ लें।"

राजा चंद्रवर्मा कुछ बोलें, उसके पूर्व ही राजकुमार वीर विक्रम बोला—"नहीं, मैं महामंत्री से द्वंद्व-युद्ध कर अपने प्राण नहीं गंवाना चाहता।

महामंत्री जी ने हम लोगों की हत्या नहीं की, यही उनकी बहुत बड़ी कृपा है। महामंत्री जी सुखपूर्वक राज करें। बस, एक आग्रह है—मेरे लिए एक वीणा बंदी-गृह में भिजवा दें।''

राजकुमार की कायरतापूर्ण बात सुनकर, राजा चंद्रवर्मा का सिर शर्म से झुक गया।

उधर गुरु रुद्र को भी महामंत्री पटवर्धन के षड्यंत्र की सूचना मिली। उन्होंने श्यामा से कहा—''महामंत्री पटवर्धन ने राजा चंद्रवर्मा, रानी उज्वला और राजकुमार वीर विक्रम को बंदी बना लिया है। स्वयं कौशल का राजा बन बैठा है। मेरा अनुमान है कि वह सत्ता पर पूरा नियंत्रण कर लेने के बाद, इन तीनों की हत्या कर देगा। अगर मैं वृद्ध न हो गया होता, तो मैं उनके प्राणों की रक्षा का प्रयास करता।''

श्यामा ने कहा—''आचार्य, आपने मुझे युद्ध कौशल की शिक्षा दी है। अतः मैं उन तीनों के प्राणों की रक्षा का प्रयास करूंगी।''

गुरु रुद्र ने पूछा—''लेकिन तुम पटवर्धन की विशाल सेना से अकेली कैसे लोहा लोगी ?''

''आचार्य, वनवासी मुझे वनदेवी की बेटी मानते हैं। इस कार्य में सभी वनवासी मेरा साथ देंगे।''—श्यामा ने बताया।

कुछ ही सप्ताह में श्यामा ने वनवासियों की सेना तैयार कर ली और कौशल पर अचानक हमला कर दिया। पहले तो कौशल की सेना में भगदड़ मच गई, लेकिन पटवर्धन और सेनापति शेरसिंह जब स्वयं तलवार लेकर श्यामा की सेना से जूझ पड़े, तो कौशल के कुछ सैनिक संभलकर उनका साथ देने लगे। इस बीच श्यामा ने कारागार पर कब्जा कर लिया। राजा चंद्रवर्मा, रानी उज्वला और राजकुमार वीर विक्रम को मुक्त करा लिया। श्यामा उनके साथ कारागार से निकल रही थी कि पटवर्धन और शेरसिंह उसके ऊपर तलवार लेकर टूट पड़े। श्यामा बड़ी वीरता के साथ उन दोनों का मुकाबला करने लगी। राजा चंद्रवर्मा निहत्थे ही शेरसिंह से उलझ पड़े। घायल हो जाने के बावजूद उन्होंने शेरसिंह को घोड़े से नीचे गिरा दिया।

राजकुमार वीर विक्रम ने एक युवती और अपने पिता को पटवर्धन और शेरसिंह से वीरतापूर्वक जूझते हुए देखा। उसमें भी लड़ने की इच्छा जाग उठी। वह शेरसिंह की ओर दौड़ा। श्यामा ने मौका देखकर अपनी दूसरी तलवार राजकुमार को पकड़ा दी। राजकुमार शेरसिंह से लोहा लेने लगा। दूसरी ओर, श्यामा ने पटवर्धन को तलवारबाजी के ऐसे दांव दिखाए कि वह जमीन पर गिर पड़ा। राजकुमार ने शेरसिंह का भी वही हाल बनाया। शीघ्र ही, पटवर्धन और शेरसिंह बंदी बना लिए गए।

राजा चंद्रवर्मा ने श्यामा से पूछा—''वीर बाला, मेरे ऊपर इतना बड़ा उपकार करने वाली तुम कौन हो ?''

श्यामा अपना परिचय देती, उसके पूर्व ही गुरु रुद्र वहां आ पहुंचे। श्यामा का परिचय दिया—''देव, आपके ऊपर उपकार करने वाली यह वीर बाला, आपकी ही कुरूप पुत्री श्यामा है। उसे आपने बीस वर्ष पूर्व मेरे आश्रम में पलने के लिए भेज दिया था।''

राजा चंद्रवर्मा शर्म और ग्लानि से रो पड़े। उन्होंने श्यामा को गले लगा लिया। उन्होंने अपने आंसू पोंछते हुए कहा—''श्यामा, तुमने मेरी आंखें खोल दीं। आज मैं समझ गया हूं कि रूप से अधिक महत्व गुण का होता है।'' ●

चीटू-नीटू
बारिश में छत चू रही है, क्यों न इसकी मरम्मत...
नाली भी बंद पड़ी है, उसे भी...
पिछली दफा मिस्त्री ने छेद के आसपास खोद कर सीमेन्ट लगाया था
जब जानकारी है तो कोई झंझट नहीं
तुमने तो छेद और बड़ा कर दिया
सीमेन्ट की अच्छी पकड़ के लिए यह जरूरी है
बांस पर कपड़ा बांध कर प्लम्बर ने नाली में चलाया था
हम भी ठीक उसी तरह...
अरे, कपड़ा तो पाइप के भीतर ही रह गया
दूसरा लगाते हैं, जितना ज्यादा कपड़ा, उतनी अच्छी सफाई...
खिड़की की सिटकनी ठीक करते सारे शीशे...
बारिश भी तेज हो गई
हमारा कोई दोष नहीं, हमने तो मरम्मत...
अब हम तुम्हारी मरम्मत...
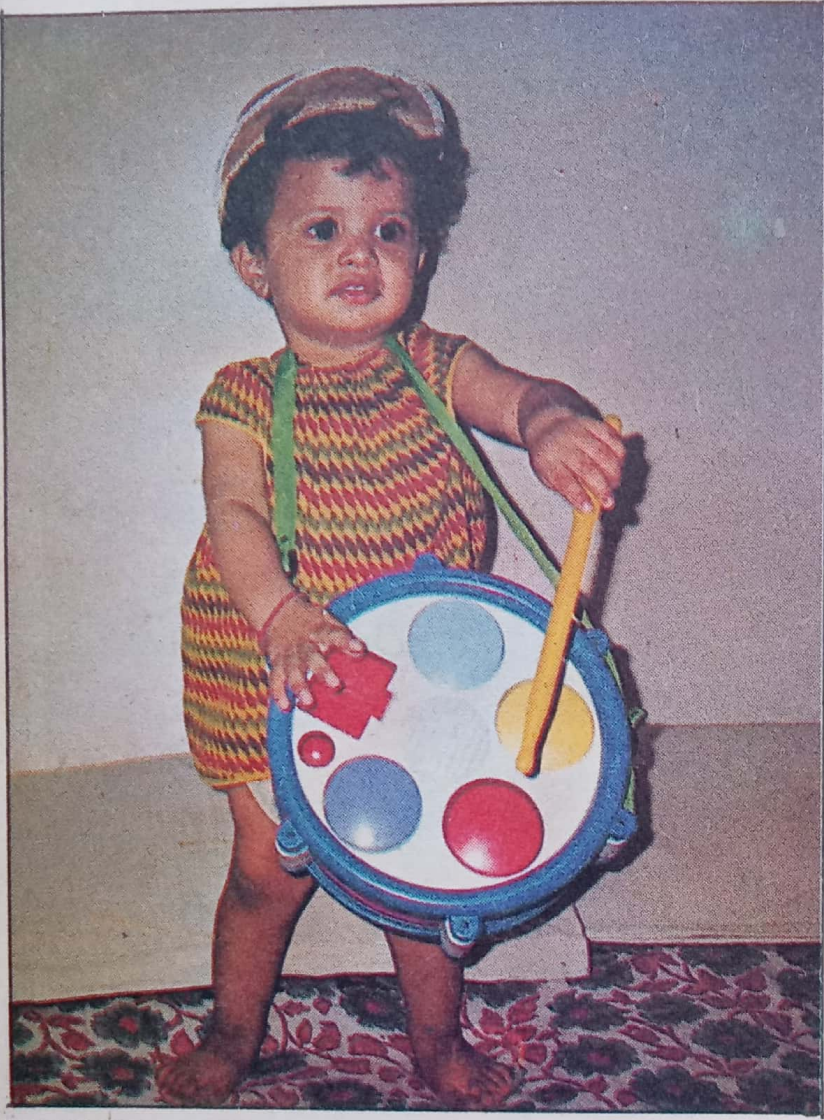
शीर्षक बताइए

मैं ड्रम बजाऊं, तुम गीत गाओ : इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं । आप भी सोचिए कोई छोटा सा सुंदर शीर्षक । उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर **१५ अगस्त १९९४ तक शीर्षक बताइए, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए । चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

परिणाम : अक्तूबर अंक

चित्र : राजीव गर्ग

पुरस्कृत चित्र

पिंकी प्रियदर्शिनी जेना, डी एल/२७५ बसंती कालोनी, राउरकेला-७६९०१२

इनके चित्र भी पसंद आए—अचलोज्ज्वल 'अचल', समस्तीपुर; दिव्या बंसल, फीरोजाबाद (उ. प्र.); रवि मिश्र, कलकत्ता; सुधा सिंह, कलकत्ता; राहुल गर्ग, रींवा

अजब-अनोखी दुनिया

सपनों का बाग : अगर आमों से लदे पेड़ बौने हो जाएं ? नारियल के पेड़ छोटे हो जाएं । पपीते का पेड़ इतना ऊंचा हो कि कोई बच्चा भी फल आसानी से तोड़ ले, तो कितना मजा आएगा ?

वैज्ञानिकों ने पौधों की कई बौनी किस्में तैयार की हैं । भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान का एक क्षेत्रीय केंद्र पूसा, बिहार में है । वहां पपीते की दो बौनी किस्में तैयार की गई हैं । नाम है पूसा ड्वार्फ और पूसा नन्हा । जैसा नाम वैसा काम । ये पेड़ इतने छोटे होते हैं कि कोई बच्चा भी हाथ बढ़ाकर पपीता तोड़ ले ।

वजन उठाने की छोटी-सी क्रेन : क्रेन यानी सारस जैसी लम्बी गर्दन वाली मशीन। भारी-भरकम सामान को उठाने में मदद करती है । रुड़की के केंद्रीय भवन शोध संस्थान ने एक 'मिनी क्रेन' बनाई है । यह पचास किलो से लेकर पांच सौ किलोग्राम तक का वजन उठा सकती है । इतनी छोटी क्रेन बनाने के लिए वैज्ञानिकों को इनाम भी मिला है ।

गले क्यों मिलते हैं घोड़े: दो घोड़े अक्सर गले क्यों मिलते हैं ? क्यों अपने दांतों से दूसरे घोड़े की गर्दन खुजलाते हैं ? फ्रांस के दो घोड़ा विशेषज्ञों ने इसका पता लगाया है । उनका कहना है कि इससे घोड़ों को राहत मिलती है । उनका तनाव घटता है । गर्दन की नस में एक गांठ-सी होती है । इसका सम्बंध द्रिल से होता है । वहां खुजलाते ही दिल की धड़कन घट जाती है । घोड़ों को आराम मिलता है । यही कारण है कि घोड़े आपस में मिलने पर एक-दूसरे की गर्दन खुजलाते हैं ।

बेकार है नकछन्ना : दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता जैसे बड़े शहरों का बुरा हाल है । धूल और धुएं के कारण सांस लेना मुश्किल है । इसलिए कई लोग वहां नाक पर छन्ना चढ़ाए रहते हैं ।

अब पता चला है कि यह नकछन्ना बेकार है । विश्व प्रकृति निधि, भारत नाम की एक संस्था है । उसने इन नकछन्नों की जांच-पड़ताल कराई है । ये छन्ने नाक के बालों से ज्यादा अच्छा काम नहीं करते । केवल बड़े धूल कणों को रोकते हैं । जाली पर इनकी मोटी परत चढ़ जाने से सांस लेने में परेशानी भी हो सकती है ।

धरती में हिमालय जितना गहरा छेद : धरती के आर-पार अगर छेद कर दें तो क्या हो ? प्रसिद्ध विज्ञान-कथा लेखक जूले वर्न ने बहुत पहले ऐसी ही कहानी 'सेंटर आफ द अर्थ' उपन्यास में लिखी थी । प्रोफेसर के कारनामे देखकर, पढ़ने वालों को खूब मजा आया ।

जर्मनी के वैज्ञानिक सचमुच धरती में बहुत गहरा छेद कर रहे हैं। उन्होंने करीब ७२०० मीटर (२१६०० फीट) गहरा छेद बना लिया है । इतनी गहराई तक अभी कोई नहीं खोद पाया । दर्जन भर देशों के साढ़े तीन सौ वैज्ञानिक खुदाई से निकली मिट्टी की जांच कर रहे हैं । आशा है, इससे पृथ्वी की बनावट का पता चलेगा । भूकम्पों के असली कारण ज्ञात होंगे । इस छेद को देखने के लिए हजारों लोग रोज आते हैं ।

मक्का से प्लास्टिक : फ्रांस के वैज्ञानिकों ने मक्के के स्टार्च से प्लास्टिक की थैलियां और अन्य चीजें बनाने का रास्ता खोल दिया है । प्लास्टिक आमतौर से जल्दी नष्ट नहीं होता । इसलिए अमरीका जैसे देशों में समस्या हो गई है । वहां खाली थैलों और डिब्बों के अम्बार लगे हैं । प्लास्टिक में मक्के का मांड़ मिलाने से वह जल्दी नष्ट हो जाता है । मक्के के मांड़ से कागज, दवाइयां, लिपस्टिक और डिटर्जेंट भी बनते हैं ।

—बृजमोहन गुप्त

दूसरा बेटा

—नवीनकुमार झा

प्राचीन काल में स्वायम्भुव मनु नामक एक राजा थे। उनका पुत्र प्रियव्रत हमेशा तपस्या में लीन रहता था। इसे देखकर राजा बहुत चिंतित रहते थे। उसकी सुख-सुविधा की सारी व्यवस्थाएं कर दी गईं, परंतु प्रियव्रत उन्हें नजर उठाकर देखता तक न था।

समय बीतता जा रहा था। राजा बूढ़े हो चले थे। वह राज-काज चलाने में अपने आपको असमर्थ पा रहे थे। एक दिन,राजा अपने दरबार में बैठे मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। तभी एकाएक गुप्तचर ने आकर सूचना दी—''महाराज ! पड़ोसी राजा वीरभद्र की सेना तेजी से हमारे ऊपर आक्रमण के लिए आ रही है।''

यह सुनकर राजा क्रोधित हो उठे। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया—''राजकुमार प्रियव्रत कहां है ? उसे युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करने को कहो। उसके

साथ आप भी शीघ्र प्रस्थान करें।''

राजा आवेश में चहल कदमी कर रहे थे। इसी समय सेनापति ने आकर सूचना दी—''महाराज ! राजकुमार तो पूजा कर रहे हैं।'' महाराज एक क्षण रुके। फिर स्वयं ही हाथ में तलवार लेकर युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान किया।

घमासान युद्ध हुआ। महाराज मनु घायल होकर अपने हाथी पर गिर पड़े। सेनापति ने उन्हें किसी तरह मैदान से बाहर निकाला। राज्य का बहुत बड़ा भाग वीरभद्र ने अपने अधीन कर लिया।

कुछ दिनों बाद राजा जब स्वस्थ हो गए, तो उन्होंने राजकुमार प्रियव्रत को बुलाया। उन्होंने प्रियव्रत से कहा—''बेटा ! अब मैं बूढ़ा हो चला हूं। इस बार तो मैं किसी तरह बच गया, परंतु आगे से अब राज-काज तुम्हें ही चलाना है। राजा को अपनी प्रजा की सुख-सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। क्षत्रिय होने के नाते तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम पूजा-पाठ के साथ-साथ, राज्य का पूरा-पूरा ध्यान रखो। जिस राजा के राज्य में प्रजा दुखी रहती है, उसे नरक में जाना पड़ता है। अतः अब तुम्हें विवाह कर, अपनी प्रजा की देखभाल करनी चाहिए।''

यह सुनकर राजकुमार सोच में पड़ गए। उसी समय आसमान में बिजली चमकी तथा एक दैवी स्वर गूंज उठा—'प्रियव्रत ! तुम्हें अपने पिता के वचनों का पालन करना चाहिए। अब तुम्हें विवाह कर, राजकाज को अपने हाथों में ले लेना चाहिए।'

यह सुनकर प्रियव्रत आश्चर्य चकित हो गए। उसी समय उन्होंने विवाह न करने के अपने पुराने निश्चय को त्याग दिया। उन्होंने राज-काज में भी रुचि लेनी शुरू कर दी। उन्होंने अपने पिता की हार का बदला लेने का निश्चय कर, वीरभद्र पर आक्रमण कर दिया।

युवक प्रियव्रत ने अपने सेनापति के सहयोग से खोया हुआ राज्य वापस ले लिया।

वीरभद्र राजकुमार की वीरता से प्रसन्न थे। अतः उन्होंने अपनी पुत्री मालिनी का विवाह धूम-धाम से प्रियव्रत के साथ कर दिया।

विवाह के बारह साल बीत गए परंतु उनके कोई संतान नहीं हुई। राजा प्रियव्रत महर्षि कश्यप के पास गए। महर्षि ने कहा—"राजन, आपको एक पुत्र का योग है।" महर्षि ने उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया।

कुछ दिनों बाद मालिनी ने एक सुंदर बेटे को जन्म दिया। यह सुनकर सारी प्रजा आनंदमग्न हो गई। राजा के आनंद की तो कोई सीमा ही न थी।

एक दिन राजकुमार को बुखार आ गया। रानी घबरा उठी। राजवैद्य ने दवा दी, परंतु बुखार तेज होता गया। अचानक उसकी सांसें रुक गईं। राजवैद्य ने उसे मृत घोषित कर दिया। रानी मालिनी बेहोश हो गई। सम्पूर्ण राज्य में कुहराम मच गया। सारी प्रजा शोक में डूब गई।

राजा शोकाकुल हो उठे। उनकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उन्होंने सोचा—'अब मेरे राज्य का क्या होगा ?'

राजा अपने विचारों में खोए हुए,बालक को गोद में उठाए श्मशान की ओर बढ़ रहे थे। वहां जाकर राजा पुत्र शोक से विह्वल हो उठे। उनके रुदन से श्मशान गूंज उठा। आज उनका सम्पूर्ण ज्ञान व्यर्थ हो गया था।

शोकाकुल होकर जैसे ही उन्होंने स्वयं को मारने के लिए तलवार निकाली, उसी समय श्मशान के बीचों-बीच एक अद्भुत विमान प्रकट हुआ। उस पर श्वेत आभा वाली एक देवी विराजमान थीं। वह मंद-मंद मुसकरा रही थीं।

राजा इस दृश्य को देखकर अपने आप को भूल-से गए। वह देवी की स्तुति करने लगे। उन्होंने अपने पुत्र को देवी के सामने रखकर, उन्हें साष्टांग प्रणाम किया।

देवी बोली—"मैं ब्रह्मा की मानसी कन्या हूं। प्रकृति का छठा अंश होने से लोग मुझे 'षष्ठी देवी' भी कहते हैं। मैं बालकों को आयु प्रदान करती हूं और छोटे-छोटे शिशुओं के साथ निरंतर रहकर उनकी सेवा तथा रक्षा करती हूं। मैं पुत्रहीनों को पुत्र, दरिद्रों को धन तथा कर्म करने वाले को शुभ कर्म देने वाली हूं।"

इतना कहकर,देवी ने उस बालक को गोद में उठा

लिया।उसे जीवित कर दिया। राजा आनंदित हो गए। उनकी आंखें अपने आप बंद हो गईं। वह मधुर कंठ से स्तुति करने लगे। परंतु यह क्या ? देवी उस बालक को लेकर आकाश में उड़ने को तैयार हो गईं। यह देख, राजा घबरा उठे। उनके होठ सूख गए। उन्होंने कांपते स्वर में कहा—"देवी ! आप तो परम कृपालु हैं। अपने भक्तों को सदा कुछ न कुछ देती रहती हैं, परंतु आज मेरे पुत्र को ही लिए जा रही हैं। पहले तो काल ने इसे मुझसे छीन लिया था। अब तो आप ही इसे मुझसे छीन रही हैं।" यह कहते-कहते राजा का कंठ अवरुद्ध हो गया। आंखों से आंसू बहने लगे।

षष्ठी देवी ने कहा—"हे राजा ! तुम मेरी सर्वत्र पूजा कराओ। स्वयं भी मेरी अर्चना करो। तुम्हें एक पुत्र होगा जो परम तेजस्वी, यशस्वी, गुणवान एवं ज्ञानी होगा।" ऐसा कहकर देवी अंतर्धान हो गईं। राजा प्रसन्न हो, अपने महल लौटे।

राजा ने षष्ठी देवी की पूजा धूमधाम से की। ब्राह्मणों को भरपूर दक्षिणा दी। सारी प्रजा प्रसन्न थी। कुछ दिनों बाद रानी मालिनी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह तीनों लोकों में सुव्रत नाम से विख्यात हुआ। ●

पुरस्कृत कथाएं

सोना का मित्र

एक गांव में सोना नाम की लड़की अपने माता-पिता के साथ रहा करती थी। जैसा उसका नाम था, वैसी ही वह सुंदर भी थी। एक दिन वह अपनी नानी से मिलने दूसरे गांव गई। नानी के घर के रास्ते में एक जंगल पड़ता था। सोना जब अपने माता-पिता के साथ उस जंगल से गुजर रही थी, अचानक उसे एक नन्हा-सा हिरन का बच्चा दिखाई दिया। उसको देखकर सोना बहुत खुश हुई। उसे पकड़ने दौड़ी। हिरन का बच्चा भागकर घने जंगल में चला गया। सोना ने उसके लौटने का इंतजार किया। उसके लौटने पर वह बहुत देर तक उसके साथ खेलती रही। वे दोनों मित्र बन गए। जब हिरन का बच्चा चला गया तो सोना को उसके जाने का बहुत दुःख हुआ।

नानी के घर से जब वह वापस अपने घर पहुंची तो उसने खाना-पीना छोड़ दिया। अपने माता-पिता से वही हिरन का बच्चा लाने की जिद करने लगी। इसी चिंता में वह उदास और गुमसुम रहने लगी। उसकी तबीयत दिन पर दिन खराब होती गई। उसकी ऐसी दशा देखकर, उसके माता-पिता भी बहुत दुखी हुए। उन्होंने सोना को कई वैद्यों को दिखाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

एक दिन जब सोना अपने बिस्तर पर गुमसुम-सी लेटी हुई थी, तो अचानक उसे एक धीमी लेकिन बहुत ही प्यारी आवाज सुनाई दी। उसे ऐसा लगा जैसे कि कोई उसका नाम पुकार रहा हो। पहले तो सोना डरी लेकिन फिर उसने हिम्मत करके खिड़की खोली और इधर-उधर देखा। उसे कोई भी दिखाई नहीं दिया।

वह फिर अपने बिस्तर पर लेट गई। लेकिन कुछ समय बाद वहीं आवाज फिर सुनाई दी। सोना ने सुना कि कोई उसका नाम पुकार रहा था। उससे घर का दरवाजा खोलने को कह रहा था। वह उस आवाज को सुनकर बंधी हुई सी दरवाजे पर आ खड़ी हुई। उसने दरवाजा खोला। जैसे ही दरवाजा खोला,

वह चौंक गई क्योंकि दरवाजे पर वही जंगल वाला हिरन का बच्चा फुदक रहा था। उसे देखकर सोना की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया। वह हिरन का बच्चा भी सोना की गोद में आराम से बैठ गया। उसके माता-पिता ने भी जब यह करिश्मा देखा तो बहुत खुश हुए। उस दिन से सोना की तबीयत सुधरने लगी। सोना पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। वह हिरन का बच्चा प्रतिदिन सोना के साथ खेलता। दोनों बहुत खुश थे।

—योगेश कुमार गुप्ता, नई दिल्ली

मीनू और कंचन

एक छोटी-सी लड़की थी, नाम था—मीनू। वह अपने माता-पिता के साथ जंगल के समीप रहती थी। उसे पशु-पक्षियों से बड़ा प्यार था। वह रोज शाम को अपने माता-पिता के साथ जंगल में घूमने जाती थी। जंगल में अनेक छोटे-छोटे जानवर जैसे—गिलहरी, बिल्ली, हिरन, खरगोश आदि थे। वहां पर अनेक तरह के पक्षी थे। वे उसके दोस्त बन गए थे। उनमें से एक हिरन का बच्चा उसे बहुत अच्छा लगता था। उसने उसका नाम कंचन रखा हुआ था।

एक दिन मीनू के माता-पिता आवश्यक काम से बाहर गए। उससे कहकर गए कि दरवाजे की अंदर से कुंडी लगा लेना और बाहर मत निकलना।

माता-पिता के जाने के थोड़ी देर बाद उसे दरवाजे को धक्का लगाने की आवाज आई। उसने

सोचा—'शायद मम्मी-पापा आ गए। पहले खिड़की से देखना चाहिए कोई और न हो। उसने खिड़की से बाहर देखा। दरवाजे पर कंचन खड़ा था। उसने फौरन दरवाजा खोल दिया।

कंचन उसकी फ्राक मुंह में दबाकर एक ओर खींचने लगा। मीनू सोच में पड़ गई। उसने सोचा कि कंचन जरूर उसे कहीं ले जाना चाहता है। वह उसके पीछे-पीछे भागने लगी। थोड़ी देर पश्चात वे जंगल में पहुंच गए जहां अनेक जानवर खड़े थे। वह भी उनके साथ खड़ा हो गया। मीनू ने देखा कि वहां एक गड्ढा है। उसमें कंचन की मां गिरी हुई है। मीनू को लगा कि जरूर जानवरों का शिकार करने के लिए यह गड्ढा शिकारियों ने खोदा होगा। उसने चारों तरफ देखा। वहां हाथी भी खड़ा था। मीनू को लगा कि हाथी की सहायता से कंचन की मां को बाहर निकाला जा सकता है। घर जाकर वह एक लम्बी रस्सी ले आई।

रस्सी का एक सिरा उसने हाथी की सूंड से बांध दिया फिर रस्सी की सहायता से वह गड्ढे में उतर गई। उसने कंचन की मां को अपनी कमर से बांध लिया और हाथी को रस्सी खींचने के लिए कहा। हाथी ने रस्सी खींच ली। मीनू और कंचन की मां गड्ढे से बाहर निकल आए।

अचानक ही सारे जानवर जंगल में भाग गए। मीनू की समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ ? वह उदास होकर एक पत्थर पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद उसने देखा कि बहुत-से पशु-पक्षी उसके लिए अनेक तरह के फल लाए हैं। उसने खूब फल खाए। पशु-पक्षियों को भी खिलाए।

घर पहुंचकर मीनू ने देखा कि उसके माता-पिता लौट आए हैं। वे नाराज थे कि मीनू अकेली घर से बाहर क्यों गई ? लेकिन जब मीनू ने उन्हें सारी बात बताई तो वे भी बहुत खुश हुए।

—रोहिणी सिंह, अम्बाला

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : अम्बिका प्रियदर्शिनी, मोतिहारी; अर्पिता शर्मा, भोपाल; मेनका कपूर, फैजाबाद।

वासेली

— प्रद्युम्न दास वैष्णव

एक समय भगवान विष्णु एक वटपत्र पर सोए हुए महासागर के प्रलय जल में विराजे थे। उन्होंने एक मनुष्य की मूर्त्ति बनाई। उस आदमी से कहा कि वह वटपत्र को स्थिर रखे, हिलने डुलने न दे। आदेश देकर विष्णु भगवान फिर सो गए।

इसी समय राघव नामक एक बड़ी मछली ने उस आदमी को निगल लिया। वटपत्र फिर से हिलने-डुलने लगा जिससे भगवान जाग गए। उन्होंने देखा मनुष्य गायब है। वे अपने योगबल से उसके गायब होने की बात जान गए। उन्होंने राघव मछली को मारकर उसके पेट से उस मनुष्य को मुक्त किया एवं उस पर दया करके वटपत्र को एक घोड़ा बना दिया। विश्वकर्मा को बुलाकर एक नाव बना देने को कहा।

भगवान ने उस मनुष्य से कहा—"तू आज से दासराजा कहा जाएगा और कैवर्त्तों का राजा कहलाएगा। अब तू इस नाव पर बैठ कर सिंहल चला जा और वहां शासन कर। यह घोड़ा तेरा वाहन है। राघव मछली ने तुझे खा लिया था, इसलिए तेरे वंशधर मछलियां पकड़कर अपनी जीविका चलाएंगे। यह घोड़ा तेरी इष्टदेवी वासेली है। तू और तेरे समस्त वंशधर चैत्र पूर्णिमा को घोड़े के मुंह वाली वासेली (घोड़ामुंही वासेली) की पूजा करना।"

भगवान विष्णु के आदेशानुसार कैवर्त्त राजा घोड़े को अपने साथ लेकर नाव में बैठ,सिंहल चला गया। उसने वहां बहुत दिनों तक शासन किया। घोड़ा एक लाख वर्षों तक जीवित रह कर मर गया। मृत घोड़े की देह से एक सुंदर कन्या निकली। उसने कैवर्त्त राजा से कहा—"यदि मुझे अब भी वासेली कहोगे,तो मैं रहूंगी नहीं।"

दास राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने विष्णु भगवान का स्मरण किया। भगवान प्रकट हुए और कहा कि यह सुंदरी कन्या आज से 'अश्विनी वासेली' के नाम से जानी जाएगी। इस देवी की पूजा करके तेरे वंशधर वैकुंठपुरी को जाएंगे। **उड़िया लोक कथा**

किसका वजन अधिक

एक दिन गोनू झा ने दरबार में घुसते ही देखा कि उनके विरोधियों के चेहरे खिले हुए हैं। उनके मित्र चुपचाप बैठे हैं।

उन्हें आते देख महाराज बोले—"आओ-आओ, तुम्हारी प्रतीक्षा थी।"

गोनू झा ने प्रणाम कर के कहा—"आज्ञा महाराज !"

महाराज बोले—"यह बताओ कि मुझमें और ईश्वर में किसका वजन अधिक है !"

फिर गोनू झा के विरोधियों की ओर इशारा करते हुए महाराज ने कहा—"इनका कहना है मेरा।" फिर मित्रों को दिखाते हुए बोले—"और इनका कहना है ईश्वर का। अब तुम्हीं यह फैसला करो, इनमें कौन सही है ?"

गोनू झा मुसकराए। अपने विरोधियों की ओर इशारा करते हुए बोले—"महाराज, इनका कहना सही है। आपका वजन अधिक है।" गोनू झा की बात सुनकर विरोधियों के चेहरे खिल उठे। उनके मित्र और अधिक गम्भीर हो गए।

महाराज ने कहा—"चलो तुम्हारी बात हमने मानी लेकिन कैसे, यह भी तो बताओ ?"
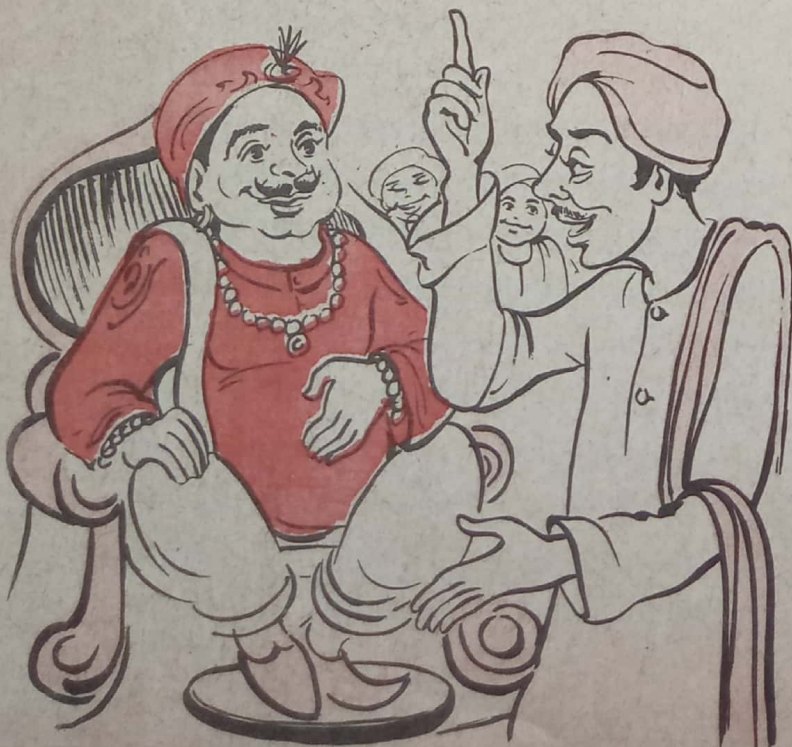
गोनू झा ने नम्रता से कहा—"महाराज, यह तो सीधी-सी बात है। आपका वजन अधिक है तभी तो आप यहां नीचे हैं। ईश्वर का वजन आपसे कम है, इसलिए वह ऊपर है।" महाराज मुसकराए। पासा पलट गया था।

घर में चोर आए

उन दिनों मिथिला में चोरों का बहुत उपद्रव था। एक रात, गोनू झा की पत्नी की नींद किसी आहट से खुल गई। देखा तो गोनू झा भी आंखें खोले थे। उन्होंने इशारे से बताया घर में चोर घुस आए हैं। पत्नी आखिर थीं तो गोनू झा की ही। बोली—"ऐ जी, तुम्हें जो मैंने अपने सारे गहने हिफाजत से रखने को दिए थे, वे ठीक जगह रख दिए हैं न ?"

पत्नी का इशारा समझकर गोनू झा बोले—"अरी भागवान, इतनी रात गए ये सब बातें पूछने की हैं ! जानती नहीं, आजकल चोरों का कितना उपद्रव है !"

—"इसीलिए तो मैंने तुम्हें गहने सावधानी से रखने को दिए थे।"

गोनू झा बोले—"घबरा मत, मैंने सारे गहने ऐसी जगह रखे हैं कि चोर क्या, उनके बाप को भी पता नहीं चलेगा। अपना जो बावनबीघी बाग है, उसके बीचोंबीच जो बड़ा-सा आम का पेड़ है, उसी पर गठरियों में बांध, लटका दिए हैं।"

चोर प्रसन्न मन से बावनबीघी बाग में पहुंचे। बाग के बीच में लगा बड़ा-सा आम का पेड़ भी खोज लिया। अंधेरे में उन्हें सचमुच पेड़ की डाल से जगह-जगह गठरियां लटकी दिखाई दीं।

फिर क्या था ! चटपट चढ़े पेड़ पर। एक-एक चोर ने एक-एक गठरी पर हाथ मारा। अगले ही क्षण वे सब हाय-हाय कर रहे थे। कोई डाल से सीधे जमीन पर आ गिरा था, तो कोई दूसरी डालियों में फंसकर लटक रहा था। वे सबके सब हाय-तौबा मचा रहे थे। बेचारों को भला क्या पता था कि वे तो मधमक्खी के छत्ते थे।

—पुष्पेशकुमार पुष्प

शीर्षक बताइए

परिणाम

ढेर सारे शीर्षक मिले। 'नंदन' जून '९४ में छपे चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए—

चुप-चुप मैं माखन खाऊं,
मां आ जाए, तो झट छिप जाऊं।

—हिमांशु शर्मा, २९० ई. एस. आई. कालोनी, बसई दारापुर, दिल्ली।

मैं हूं एक छोटा-सा नटखट, माखन खाऊं मैं तो झटपट।

—दीपक गिरि गोस्वामी, गरुड़ बैजनाथ, जि. अलमोड़ा (उ.प्र.)।

फोटो खिंचवाओ, मक्खन खाओ।

—राजेंद्रकुमार मित्तल, प्रेम क्रॉकरी स्टोर, नजदीक देसराज कबाड़ी, टोहाना रोड, रतिया, जि. हिसार (हरि.)।

कितना खाऊं समझ न पाऊं,
आओ बच्चों तुम्हें खिलाऊं।

—श्वेता, द्वारा शशिकांत गुप्ता, शाह साल्ट ट्रेडर्स, गंगा हरि लेन, देवघर (बि.)।

इनके शीर्षक भी सराहे गए : रवि गुप्ता, शिवपुरा, हावड़ा; महेश सोनी, जोधपुर; पंकजकुमार, डिब्रूगढ़ (असम); संदीप शर्मा, साकीनाका, बम्बई; अरुणकुमार पांडेय, सुल्तानपुर (उ.प्र.); अमन दीप गार्गी, पटियाला।

पाठकों/लेखकों से

● नंदन कंप्यूटर पर कम्पोज होता है अतः टाइप की हुई रचनाएं भेजिए।

● रचना के साथ डाक टिकट लगा और नाम-पता लिखा लिफाफा अवश्य भेजें।

● जिस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हों, उसका नाम लिफाफे पर अवश्य लिखें।

रचनाएं भेजने का पता है— सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०६

परिणाम

पाठकों ने इस बार भी ज्ञान-पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। दो सर्वशुद्ध हल आ गए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध दो : प्रत्येक को दो सौ पचास रुपए

१. स्वाति, महू; २. संतोष महतो, छोटा मुरी (रांची)।

एक गलती : दस : प्रत्येक को पचास रुपए

१. पुनीत भटनागर, नोएडा; २. अनिला बरड़िया, दिल्ली; ३. मुईन अख्तर, खैर, अलीगढ़; ४. बिंदु, सहारनपुर; ५. रश्मि रावत, रामनगर (नैनीताल); ६. प्रशांत गुप्ता, इटावा; ७. हसीना खातून, डढ़ियाबेलार (समस्तीपुर); ८. पूनम वर्मा, कानपुर; ९. विशाख कुमार, बिसही का बाग (आजमगढ़); १०. हेमा साह, मल्लीताल (नैनीताल)।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. सांप की जीभ अधिक लम्बी है।
२. बीन बजाते व्यक्ति के कोट पर तीन धारियां हैं।
३. उसके कोट का एक बटन गायब है।
४. उसके पीछे दीवार पर लटकी तख्ती की बाईं सांकल गायब है।
५. मेज पर रखे ढक्कन की घुंडी बड़ी है।
६. बाईं तरफ सिपाही के पास खड़े आदमी की मूंछें काली हैं।
७. उसके सिर के ऊपर बना रोशनदान छोटा है।
८. मेज के दाईं तरफ लगी ग्रिल में एक छड़ अधिक है।
९. पगड़ी पहने आदमी के मफलर में झालर लटकी है।
१०. उसके बैग का हैंडिल काला है।

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम ——————— आयु ———

पूरा पता ———————

———————

रुचि ———————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. हिमांशु रंजन, १३ वर्ष, कौशलेंद्र गोपाल, काजिमाबाद, अलीगढ़; २. मंजरी शर्मा, ११, सी-६/१९८ यमुना विहार, दिल्ली-५३; ३. चंदन चौहान, १६, डा. सी. पी. एन. सिंह, अलकापुरी दमड़िया, पटना; ४. शैलेशकुमार गुप्ता, १६, भारत क्लाथ स्टोर, फरिहा, फिरोजाबाद; ५. संजीव राजपूत, ८, ग्रा. वेरी कपरिया, पो. जानिसनगर, इटावा (उ. प्र.); ६. प्रकाशचंद्र श्रीवास्तव, १६, दिनेश प्रसाद वर्मा, ग्रा.+पो. रोआरी, प. चम्पारण; ७. रवींद्र चौधरी, १७, म. नं. २ घ ४ हाउसिंग बोर्ड, पाली (राज.); ८. आशीष कुमार झा, ९, मंत्रेश्वर झा, मारवाड़ी इंटर कालेज, कटिहार; ९. पंकजकुमार बिहानी, १२, शिव स्टोर्स, एच. पी. रोड, शिवसागर (असम); १०. रविशंकर, १६, आर. आर. विजय वर्गीय, अस्पताल रोड, टोंक (राज.); ११. संतोषकुमार राज, १६, ७५५ सी, लोको कालोनी, खगौल पटना; १२. अमितकुमार शर्मा, १५, दुर्वासा शर्मा, ४६ कानून गोमान, काशीपुर, नैनीताल; १३. अंकुर अग्रवाल, १५ रासबिहारी लाल अग्रवाल, सेठ जी. बी. पोद्दार कालेज, नवलगढ़ (राज.); १४. अमितकुमार केशव, १६, डा. विश्वनाथ साहा इंजीनियरिंग कालेज, भागलपुर; १५. पूजा सहगल, १२, ए-४/१५ कृष्णानगर, दिल्ली; १६. किशोर कुमार, १७, ९०/३१ पुराना हमीदा, यमुनानगर (हरि.); १७. रविकुमार सिंह, १३, रामशंकर सिंह, वार्ड नं. १५,मंदिर के पास, सूरत गंज, मधुबनी; १८. सोनू पचौरी, १३, सुरेशचंद्र पचौरी, पार्क के सामने, किला रोड, अवागढ़, एटा; १९.विवेक वर्मा, १५, ८/१६६ नाला स्ट्रीट, बजरिया पूरनमल, बरेली; २०. दिवाकर मणि, १३, वासुदेव तिवारी, राजेंद्रनगर, थावे रोड, गोपालगंज (बि.); २१. शहला कय्यूम, १३, १६५/१०२ कच्चा हाता, अमीनाबाद, लखनऊ; २२. राजेशपाल, १०, रामचंद्र पाल, बिजौलिया, जि. भीलवाड़ा; २३. आशाकुमारी, १२, गोपाल बैठा, ग्राम भिट्ठा, पो. गांधीनगर, रांची; २४. अंकित माथुर, १७, III/१९७ ओ. टी. सी. अम्बामात, उदयपुर।

खेल, संगीत और चित्रकला में रुचि:

१. अभिषेक भारिल्ल, १३, राजेंद्रकुमार जैन, पो. शाहपुर, सागर (म. प्र.); २. अभिराम, ९, शाकुम्बरी देवी (स्टाफ नर्स), एन. ई. रेलवे अस्पताल, सोनपुर; ३. अंजलि गुप्ता, ११, एम. के. गुप्ता, विकास कालोनी, लश्कर; ४. ललित, १६, डा. बी. पी. वारनदानी, गल्ला बाजार, पिपरिया, होशंगाबााद; ५. गणेश चौहान, १५, किशोरी प्रसाद चौहान, भोजपुर कालोनी, बोकारो; ६. सौरभ श्रीवास्तव, १४, रामनगरी, वार्ड-५, म. नं. १३४, जि. सागर; ७. शिवांग शर्मा, १०, १२/४ पी. डब्लूयू. डी. कालोनी, राजेंद्रनगर, बरेली; ८. नीरज नयन, १५, जी. एस. लाल, एम. आई. जी. बी-६१, हाउसिंग कालोनी, धनबाद; ९. शेख मोहम्मद वारिस, १५, १५० नई पुजारी की चाल, गोमतुपुर, अहमदाबाद; १०. प्रेम सिंह, १५, ए-३९७, पाकेट-१, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली; ११. मदनकुमार अग्रवाल, १२, राज ट्रेडर्स, बढ़नी बाजार, सिद्धार्थ नगर (उ. प्र.); १२. रूबी कुमारी भारती, १०, रामाशीष प्रसाद, हाजीपुर, वैशाली (बि.); १३. भव्य शर्मा, १२, गंगा लहरी शर्मा, छत्रा गली, बड़ौत, मेरठ; १४. आशीष कुमार, १२, भुजेंद्रनारायण प्रसाद, ७/१४३ न्यू टाउन जामताड़ा, दुमका (बि.); १५. अवि माथुर, ११, ६५ एन गौतम नगर, नई दिल्ली; १६. लीना चौबे, १४, आनंद नगर, ग्रैंड लॉज के पास, परिश्रम भवन, खंडवा (म. प्र.); १७. मधुर सेतिया, १२, ११९ उदय मंदिर, जोधपुर; १८. अमित अग्रवाल, १६, साजन अग्रवाल, निकट हरे राम मंदिर, दुर्गापुर; १९. प्रमिला कुमारी, १०, राजवीर शास्त्री, ग्रा.+पो. डालावास, भिवानी; २०. प्रदीप कुमार नारवानी, १७ ४२/१९० बिल्लोचपुरा, लोहामंडी, आगरा; २१. विक्रमादित्य वर्मा, १४, एम. आई. जी. ७६ एम. पी. हाउसिंग बोर्ड, भिलाई; २२. शिवरत्न सिंह, १५, होतीलाल, सी--२ टाइप-टू क्वार्सी फार्म, अलीगढ़; २३. अखिलेंद्र गौतम, १३, बी-८३, फ्रेंड्स कालोनी, इटावा; २४. अब्दुल मुईज, १६, ६७९ अंटा, शाहजहांपुर (उ. प्र.); २५. सुमन रंजन, १३, देवनारायण गुप्ता, सकरी रेलवे स्टेशन के पास, दरभंगा; २६. अमित अग्रवाल, १४, अशोककुमार अग्रवाल, आटा मशीन के पास, पुराना गंज, रामपुर; २७. लवलेश कुमार गौर, १५, डा. डी. पी. गौर, बनरिया मुहल्ला, होशंगाबाद; २८. विवेककुमार, ११, ए/९ अदालतगंज, पटना; २९. संजीवकुमार, १५, लालाराम वर्मा, कृषि रक्षा अध्यक्ष केंद्र, बकेवर, इटावा; ३०. अयूब खान, १४, बड़ी मस्जिद के पास, सदर बाजार, बालोतरा (राज.)

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

The Jumbo formula for fun!
EXTRA COLOR POWER
COLORSTIX
Stic
Jump with joy. There's lots of fun in store for you. With Colorstix. The new jumbo color pens from Stic. Smoother, softer jumbos in beautiful colors, including some you've never had before. Sky Blue. Flesh Tint. Lilac. And Light Pink!
And that's not all. Every pack of 15,12 or 8 Colorstix, gives you FREE DENNIS COLORING POSTERS or STICKERS.
So, when the fun starts with Dennis, who knows where it will end. For you, or for your friends who you could gift it to!
EXCITING NEW COLORS!
©Hank Ketcham Enterprises Inc., USA.
R.KANGA/STIC/10/94
Makes a Great GIFT too!
NEW Stic Dennis
COLORSTIX
To get FREE STICKERS fill and mail this coupon to us.
NAME :
AGE :
ADDRESS :
Stic
Stic Pens Pvt
layapuri Indl. Area, Phase II, New Delhi 110 064.

रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९४ आर.एन.आई. नं. १०५२५/